शिक्षाशास्त्र के नए क्षितिज

# बच्चों से बातचीत

गैरेथ बी. मैथ्यूज़

अनुवादक
सरला मोहनलाल

# विषयानुक्रम


| | |
|---|---|
| प्रस्तावना : कृष्ण कुमार | *ix* |
| आमुख | *xi* |
| प्राक्कथन : राबर्ट कोल्स | *xiii* |
| 1. सुख | 1 |
| 2. इच्छा | 7 |
| 3. कहानियां | 14 |
| 4. पनीर | 20 |
| 5. जहाज | 27 |
| 6. ज्ञान | 37 |
| 7. शब्द | 49 |
| 8. समय यात्रा | 59 |
| 9. आचारशास्त्र | 72 |
| 10. भविष्य | 81 |
| 11. विकास मनोविज्ञान | 90 |
| 12. उपसंहार | 95 |


# प्रस्तावना

बच्चों से बातचीत करते समय बड़े-बुजुर्ग अक्सर अपनी स्वाभाविकता खो बैठते हैं। जैसे अचानक एक मुखौटा उन्होंने पहन लिया हो, वे एक खास तरह की कृत्रिमता से ग्रस्त हो जाते हैं। रेडियो और टेलीविजन के बाल-कार्यक्रम हों या स्कूल की कक्षा, बड़ों का बनावटीपन उन तमाम जगहों पर देखते ही बनता है जहां बच्चों से बातचीत का प्रसंग समकालीन जीवन की किसी समस्या से संबंधित होता है। बच्चों से संवाद स्थापित करने के फेर में बड़े अपनी आवाज, शैली और यहां तक कि शब्दावली को भी बचकाना बना डालते हैं।

बड़ों की इस बनावटी मुद्रा की गहराई में यह धारणा छिपी होती है कि बच्चे किसी गंभीर बात को तभी समझ सकेंगे जब उसकी गंभीरता नष्ट कर दी जाए। इसी धारणा के चलते व्यक्तिगत पारिवारिक और सामाजिक जीवन के अनेक प्रश्नों को हम बच्चों की नजर से बचाने का प्रयास करते हैं। जब हमारा यह प्रयास विफल हो जाता है; यानी बच्चे किसी न किसी प्रकार हमारी चेष्टा ताड़ लेते हैं तब हम उस प्रश्न को सरलीकृत रूप में बच्चों के सामने लाते हैं। इस तरह के व्यवहार के पीछे भी हमारी यही मान्यता काम कर रही होती है कि बच्चे इस तरह के गंभीर प्रश्नों को समझ ही नहीं सकते।

गैरेथ मैथ्यूज की यह किताब इस आम मान्यता को खंडित करती है। इस पुस्तक में बच्चों के साथ कुछ ऐसे संवाद संग्रहीत हैं जिन्हें सहज ही दार्शनिक कहा जा सकता है। इन संवादों की वैचारिक गहराई हमें इसीलिए चौंकाती है कि संवादों की शैली एकदम सहज और स्वाभाविक है और इस कारण हम यह बात भूल-ही जाते हैं कि ये संवाद बच्चों से किए गए हैं। मनुष्य होने के नाते स्वतंत्र होकर सोचने और अपनी बात को गंभीरता से रखने और उतनी ही गंभीरता से बात के सुने जाने का अधिकार बच्चे को देना कितना जरूरी है, यह सत्य इस पुस्तक को पढ़कर हमारी पकड़ में सरलता से आ जाता है।

इस सत्य को स्वीकार करना बड़ों के लिए दिक्कत भला क्यों पैदा करता रहा है ? इस सवाल पर लेखक का मानना है कि आधुनिक बाल-मनोविज्ञान ने बचपन का एक ऐसा रूढ़ चित्र गढ़ दिया है जो हमें बच्चे को पूरा मनुष्य

और इस नाते गंभीर सोच का हकदार मानने से रोकता है। मैं इसे एक विडंबना ही कहूंगा कि बचपन की ऐसी रूढ छवि गढ़े जाने में आधुनिक बाल-मनोविज्ञान ने मदद की है। इस सदी के कई बड़े मनोवैज्ञानिक इसके एकदम उलटा इरादा लेकर चले थे। उनका उद्देश्य बच्चे को एक अधूरा वयस्क मानने की पारंपरिक आदत को तोड़ना था। हुआ शायद यह कि स्वयं मनोविज्ञान अपनी शोध-विधियों के जंजाल में फंस गया और अपनी खोजों की प्रस्तुति को अतिवादिता से नहीं बचा सका। वह बचपन की सम्यक समझ के स्थान पर एक खोखली-सी समझ उभार पाया जिसमें विकास के चरणों पर जरूरत से कुछ ज्यादा ही जोर दिया गया था। साथ ही कुछ यह भी हुआ कि मनोविज्ञान को गंभीरता से पढ़ने वालों की संख्या सीमित रही, और इस प्रकार उसकी लोकप्रिय समझ के सहारे सतही व्याख्याएं करने वालों की बन आई।। बच्चों के मनोवैज्ञानिक चित्रण में एक समग्र मानवीय समझ की जो कमी अक्सर रह जाती है, यह पुस्तक उसी कमी को पूरा करने का प्रयास है।

शिक्षा विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
17 जनवरी, 1996

कृष्ण कुमार



# आमुख

बच्चों से बातें करना कोई नई बात नहीं है। मां-बाप, दादा-दादी, शिक्षक, पड़ोसी और जान-पहचान के लोग, सभी बच्चों से हर समय बातें करते रहते हैं। कभी तो इस बातचीत का उद्देश्य व्यावहारिक होता है, जैसे, 'अपने कानों के पीके का मैल साफ करो; ज्यादा टी.वी. मत देखो, स्कूल से घर आने के बाद अपने कपड़े बदलो' आदि। अकसर हमारा उद्देश्य उन्हें कुछ सिखाने का होता है जैसे जूते के फीते कैसे बांधो, तीन का पहाड़ा बोलो, व्याकरण और वर्तनी में सुधार करो, आदि। कभी हमारा उद्देश्य सामाजिक होता है। हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे अपने से बड़ों का आदर करें और दूसरे बच्चों के साथ हिलमिल कर रहें।

यदि हम मनोवैज्ञानिक हैं, तो हम शायद यह पता लगाने के लिए बच्चों से बातें करते हैं कि अपनी आयु के हिसाब से वे कैसे काम करते हैं। उनकी बातों से हमें संकेत मिलता है कि उनका विकास कैसा हो रहा है। शायद हम यह भी बता सकें कि एक विशेष आयु के बच्चों का सामान्य विकास क्या होता है और कभी-कभी कुछ बच्चों में यह सामान्य विकास क्यों नहीं हो पाता। यदि हम शिक्षक या मां-बाप हैं तो हम बच्चों से बातचीत करके पता लगाने का प्रयास करते हैं कि उनका विकास नियत समय के मुताबित हो रहा है या नहीं।

परंतु हम वयस्क, बच्चों से कभी उन विषयों पर बातें नहीं करते जो स्वयं हमें कठिन और समस्याग्रस्त लगती होती हैं। जब हम वयस्क अपनी आयु और अनुभव के बावजूद उन विषयों को नहीं समझ पाते हैं, तो साधारण बच्चा उसमें क्या योगदान दे सकता है ? यों भी, बच्चे को ऐसी बातों में क्या रुचि हो सकती है ? बच्चों के लिए अपने स्तर की बातों को सोचना ही काफी है। यदि हम बच्चों के सामने यह प्रदर्शित करें कि हमें समस्त प्रश्नों के उत्तर नहीं आते हैं और शायद हम यह भी नहीं जानते हैं कि उनके उत्तरों की खोज हम कहां करें, तो क्या इससे बच्चे अशांत और परेशान नहीं होंगे ? क्या उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए यह जरूरी नहीं है कि उन्हें इसका विश्वास हो (चाहे यह गलत विश्वास ही हो) कि उनके मां-बाप और शिक्षक, बच्चों की सब

कठिनाइयों का उत्तर जानते हैं ?

कई वयस्क यह सोचते हैं कि ये प्रश्न केवल वाकपटुता का प्रदर्शन हैं। इनके उत्तर तो स्वतः स्पष्ट हैं। परंतु इस पुस्तक में यह बताने का प्रयास किया गया है कि ऐसी बात नहीं है।

इस पुस्तक के शीर्षक, "बच्चों से बातचीत" से पाठक शायद यह समझें कि मैं 'बाल विकास' के किसी सिद्धांत के समर्थन या आलोचना में प्रमाण प्रस्तुत कर रहा हूं। परंतु मैं मनोविज्ञान की सामग्री के लिए यह बातचीत नहीं प्रस्तुत कर रहा हूं।

कुछ पाठक शायद यह सोचें कि इस शीर्षक की पुस्तक हमें बच्चों के साथ रोचक बातचीत करने की दिशा में मार्ग-प्रदर्शन करेगी। निःसंदेह यदि मेरे कुछ तरीकों से, मां-बाप और शिक्षकों को अपने बच्चों के साथ बातचीत करने में सहायता मिले तो मुझे बहुत खुशी होगी। परंतु बातचीत की तकनीक पर अधिक महत्व देना सही दृष्टिकोण नहीं है।

मेरा पहला उद्देश्य यह है कि मैं, वयस्कों को ऐसे सम्मोहक प्रश्नों के प्रति रुचि दिलाऊं, जिन पर बच्चों के साथ मिल कर विचार करना उनके और बच्चों के लिए लाभदायक होगा। यह नहीं समझना चाहिए कि इन प्रश्नों पर केवल विशेषज्ञ दार्शनिकों का एकाधिकार है। मेरा दूसरा उद्देश्य यह है कि मैं आकर्षक ढंग से, बच्चों के साथ ऐसे संबंधों की संभावना को पाठकों के सामने चित्रित करूं जिनकी वे साधारणतः कल्पना नहीं करते। ये संबंध अनुग्रह पर आधारित नहीं होंगे—प्रयोगकर्ता का अपने प्रयोग के विषयों पर अनुग्रह, प्रशिक्षक का अपने शिष्य पर अनुग्रह और लालन-पालन करने वाले का पालित के प्रति अनुग्रह और कृपा का भाव नहीं होना चाहिए। इसके यह अर्थ नहीं है कि मैं बच्चों के साथ प्रयोग करने या बच्चों को प्रशिक्षित करने या उनके कल्याण पर ध्यान देने को महत्व नहीं देता। पर इन कार्यों के महत्व पर और उनके अच्छी तरह पूरा किए जाने की कठिनाइयों पर अनेक लोग विस्तृत रूप से कह चुके हैं।

परंतु अभी तक इस संभावना पर गंभीरता से विचार नहीं किया गया है और इसकी कल्पना की गई है कि बच्चों के साथ दर्शनशास्त्र के साधारण और गहन प्रश्नों पर ऐसे परिवेश में चर्चा की जाए जिसमें दोनों के संबंध एक-दूसरे के प्रति आदर पर आधारित हों। मुझे आशा है कि इस पुस्तक द्वारा मेरे पाठक इस बात से सहमत होंगे कि रोचक और महत्वपूर्ण प्रश्नों का हल तलाशने में बच्चे भी हमारी सहायता कर सकते हैं और बच्चों का योगदान उतना ही महत्वपूर्ण हो सकता है जितना हम वयस्कों का।

**—गैरेथ बी. मैथ्यूज**



# प्राक्कथन

## राबर्ट कोल्स

अमेरिका तथा विदेश में बच्चों के साथ काम करने के अपने दीर्घ अनुभव में मैंने कभी-कभी किसी बच्चे को आश्चर्यजनक बुद्धि और समझदारी से बात करते हुए सुना है। या कभी-कभी कोई बच्चा मुझसे ऐसा प्रश्न पूछ लेता है, जिससे मैं उलझन में पड़ जाता हूं और चकित रह जाता हूं। बाद में जब मैं उस बच्चे की कही गई बात पर विचार करता हूं तो मैं इस बात के लिए कृतज्ञ होता हूं कि मुझे दूसरों से सीखने का एक और मौका मिला—कोई प्रश्न पूछने में या पहेली सुलझाने में किसी से सहायता मिली। परंतु लड़के-लड़कियों से ऐसी बातचीत के बाद मेरे अंदर अन्य प्रतिक्रियाएं भी होती है जैसे—उलझन, चेतावनी, खिसियाहट और नाराजगी। यहां तक कि गैरेथ मैथ्यूज द्वारा वर्णित ऐसी प्रेरणादायक बातें भी मेरे लिए कभी-कभी अग्नि-परीक्षा का रूप ले लेती हैं।

मैं इन चर्चाओं या परस्पर बातचीत के प्रति कई वयस्कों के संशयवादी दृष्टिकोण का उल्लेख कर रहा हूं। एक तो उन्हें इसमें ही संदेह है कि ऐसी बातचीत संभव हो सकती है और दूसरा यह कि इन बातों का कोई अधिक व्यापक, बौद्धिक या नैतिक महत्व हो सकता है। स्वयं अपने अध्ययन को लिखते समय मुझे बारंबार इस पर संदेह हुआ कि क्या बच्चों में ऐसी प्रभावशाली टिप्पणियां करने की या निरंतर वाकपटुता की क्षमता हो सकती है, नैतिक चिंतन और विश्लेषण की तो बात ही छोड़िए। परंतु गैरेथ मैथ्यूज़ ने अपनी पहली पुस्तक 'दर्शनशास्त्र और बालक' में तथा अब इस पुस्तक में कुछ विशेष लड़के और लड़कियों द्वारा कही गई यही बातें हमारे सामने प्रस्तुत की हैं। यद्यपि मैथ्यूज़ के बच्चों ने इन क्षमताओं को बार-बार प्रदर्शित किया है और शायद असंख्य मां-बाप और शिक्षकों को भी इनका अनुभव हुआ होगा। फिर भी क्या बात है कि हमारी बौद्धिक परंपरा के विशेषज्ञों का यह संशयवादी दृष्टिकोण अब तक बरकरार है। वे इस रचना को स्वीकार करने को तैयार नहीं है और हम

जैसे लोग उनकी बात मान लेते हैं कि बच्चों में ऐसी प्रतिभा नहीं होती है।

अपनी पुस्तक 'दर्शनशास्त्र और बालक' में मैथ्यूज़ ने इस प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश की है। उन्होंने हमारा ध्यान इस ओर दिलाया कि 'बाल विकास' और 'नैतिक विकास' के विचारक, बच्चों को उस दृष्टि से नहीं देखते जिस दृष्टि से मैथ्यूज़ की पुस्तक हमें देखने को प्रेरित करती है। ये विचारक, बच्चों के साथ रोज-रोज मिल कर आराम से उनसे बातें नहीं करते हैं। वे उनसे कुछ खास प्रश्न पूछते हैं, उनसे कुछ विशेष कार्य करवाते हैं और उसके आधार पर उनका वर्गीकरण करते हैं। परंतु इन विचारकों के सिद्धांत मेरे दिमाग में इतना घर कर चुके हैं कि मेरे काम के दौरान वे सभी भावनाएं मेरे ऊपर दबाव डालती हैं जिनका मैं ऊपर उल्लेख कर चुका हूं। मेरी पत्नी एक स्कूल अध्यापिका हैं और हम दोनों में इस निरंतर दुविधा पर अकसर बातचीत होती है। यदि हम किसी बच्चे को कोई ज्ञान और बोध की बात कहते हुए सुनते हैं—चाहे वह हमारा कोई पुत्र हो या कोई लड़का या लड़की हो जो हमें अपने क्षेत्रीय कार्य के दौरान मिला हो—तो हम परस्पर यही कहते हैं, 'पर बच्चों के मुंह से ऐसी बातों की हम आशा नहीं करते।'

मेरे अपने अनुसंधान में सबसे महत्वपूर्ण और पर्दाफाश करने वाला क्षण बीस वर्ष पहले आया था जब मेरी जानपहचान एक छः वर्षीय अश्वेत बालिका से हुई थी। जब यह बालिका न्यू आरलियंस के प्राथमिक स्कूल में जाती थी, जो श्वेत और अश्वेत बच्चों को साथ-साथ पढ़ाने का प्रयास कर रहा था, तो उसे उग्र भीड़ की घृणा, धमकियों और अपमान का सामना करना पड़ता था। मेरा तो पूरा विश्वास था कि उसकी भावनाएं इसे सह न सकेंगी। श्वेत माता-पिताओं ने उस एक लड़की की उपस्थिति के कारण, अपने बच्चों को स्कूल में भेजना अस्वीकार कर दिया था। अतः पूरा स्कूल वीरान हो गया था। केंद्रीय सरकार के पुलिसकर्मी उसे अपनी सुरक्षा में स्कूल ले जाते थे। भीड़ के प्रचंड क्रोध का प्रभाव इस सुकुमार हृदय पर पड़ना स्वाभाविक था।

परंतु इस बालिका ने अपना सिर ऊंचा ही रखा। उसे यातना देने वाले उसे नहीं तोड़ पाए। संघीय न्यायाधीश, स्कूल अध्यापिका, प्रधानाचार्य तथा हमारे जैसे असंख्य लोग इस पर आश्चर्य करते थे कि वह कैसे सदा प्रसन्नचित्त रहती थी और उसमें कैसे हिम्मत, संकल्प और दया बनी रही क्योंकि उसने कहा कि वह अपने तंग करने वालों के लिए प्रार्थना करेगी। जब मैंने उससे पूछा कि 'वह ऐसे लोगों के लिए क्यों प्रार्थना करेगी', तो उसने धीरे से, पर दृढ़ता से कहा, 'क्योंकि उन्हें इसकी जरूरत है कि कोई उनके लिए प्रार्थना करे।' मैंने फिर उसे उकसाया—'क्यों जरूरत है ?'





"क्योंकि यीशू मसीह ने हमें बताया है कि जो लोग ऐसी बातें कहते हैं, उनके लिए हमें दुखी होना चाहिए।" मैंने उसे बाइबिल के उद्धरण की इस व्याख्या की प्रामाणिकता पर आगे बोलने को प्रेरित किया। "क्या यीशू ने ऐसा कहा था।"

"हां कहा था। जब वे मर रहे थे तो उन्होंने भगवान से कहा कि मुझे मारने वाले इन लोगों को माफ कर दो।"

उस बालिका में विश्लेषण और चिंतन की इतनी क्षमता थी कि वह ऐसी व्याख्या कर सकी। परंतु उस समय मैं यह मानने को तैयार नहीं था और आज भी मैं अपने को यह समझाता हूं कि वह शायद दूसरों की बताई हुई बात दोहरा रही होगी। (मानो हम वयस्क जब विशेषज्ञों के उद्धरण प्रस्तुत करते हैं या मूल पुस्तकों में लिखी बातें दोहराते हैं, तो क्या उसमें यही बात नहीं होती?) न्यू ओरलियंस की इस बालिका ने वास्तव में वही किया था जो मैथ्यूज़ की किताब में वर्णित बच्चे करते हैं—उसने जो कुछ देखा और सुना, उस पर मनन किया और फिर उत्तर प्रस्तुत किए। उसने यह समझ लिया था कि उसे तंग करने वाले ये लोग सचमुच में बहुत ख़राब लोग हैं। परंतु बाइबिल से हमें पता चलता है कि पहले भी इस तरह के लोग थे। प्रभु यीशु को भी ऐसे ही लोगों ने सताया था। अतः उसने सोचा कि उसे यीशु के दिखाए हुए मार्ग पर चलना चाहिए और उसने यही किया।

इस पुस्तक में जिन बच्चों की चर्चा की गई है, वे बच्चे भी इसी परंपरा के हैं। वे अपनी मानवता का पालन करने को उत्सुक हैं और उनके स्वभाव की झलक हमें इस पुस्तक के हर पन्ने पर मिलती है। अन्य मनुष्यों की तरह बच्चे अपनी बातचीत में निरंतर चेतना, जिज्ञासा, कल्पना और चिंतन की क्षमता दर्शाते हैं। वे हम बड़ों के साथ मिल कर अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने के इच्छुक हैं।

जैसा मैथ्यूज़ ने संकेत किया है, बच्चों को ज्ञान की तलाश है और इसके लिए वे समझदारी के और प्रेरक प्रश्न पूछते हैं। जब तक उनकी ज्ञान की भूख शांत नहीं हो जाती, वे इन प्रश्नों को लगातार पूछते जाते हैं। जब उन्हें लगता है कि उनके चारों ओर के वयस्कों को उनकी बात सुनने की या उनके विचार जानने की कोई इच्छा नहीं है, तो वे प्रश्न पूछना बंद कर देते हैं। अतः इस पुस्तक में बच्चों के साथ जो बातचीत प्रस्तुत की गई हैं उसमें किसी असाधारण या अद्भुत बातचीत का उल्लेख नहीं है। वे संवेदनशील माता-पिता या समझदार शिक्षक के रोज के अनुभवों से ली गई हैं। यदि हम जरा-सा समय दें और याद करें तथा ध्यान दें और बच्चों के साथ बातचीत में भाग लें, तो हमें भी इनकी प्रतिध्वनी सुनाई देगी।

# 1. सुख

फ्रेडी ने आकर सूचना दी, 'गर्टी आंटी के फूल आजकल फिर खुश दिखाई दे रहे हैं।'

एलिस एक कोने में बैठी दलिया खा रही थी। उसने कहा, 'फूल भी कहीं खुश होते हैं ? गर्टी आंटी तो फूलों के बारे में ऐसे बातें करती हैं मानों वे आदमियों के बारे में बातें कर रही हैं। परंतु वास्तव में फूलों को कोई अनुभूति नहीं होती। उन्हें न तो प्यास लगती है और न वे सुखी या दुखी हो सकते हैं।'

फ्रेडी को थोड़ी निराशा हुई। उसने अपनी मां से पूछा, 'मां क्या यह ठीक कह रही है ?'

मां ने उत्तर दिया, 'यह तो तुम अपनी गर्टी आंटी से ही पूछो। फूलों के बारे में वे सबसे ज्यादा जानती हैं।'

स्काटलैंड के एडिनबरा शहर में, संत मेरी संगीत विद्यालय के आठ से दस वर्ष की आयु के बच्चों के सामने, मैंने अपनी कहानी इस तरह शुरू की। यह अक्टूबर 1982 की बात है। मैं उस समय एडिनबरा विश्वविद्यालय में ज्ञान मीमांसा के विभाग में अध्ययन कर रहा था। मुझे बचपन के बारे में अवधारणाओं और मानव विकास पर विशेषतः ज्ञानात्मक विकास के रूपों पर अनुसंधान करना था। मेरे सब सहयोगियों का व्यवहार बड़ा मित्रतापूर्ण और उत्साहजनक था। उनमें मनोवैज्ञानिक, भाषाविद, कृत्रिम बुद्धि के विशेषज्ञ और दार्शनिक—सभी थे। परंतु वे सभी वयस्क थे। मेरा अनुसंधान, बच्चों से, और बच्चों की समझ से संबंधित था। मेरी अपनी, सबसे छोटी संतान की आयु अब पंद्रह वर्ष की हो चुकी थी। अतः किसी वास्तविक बच्चे से मेरा कोई स्वाभाविक संबंध नहीं था।

मेरे विचार से, इस कमी को दूर करना बहुत जरूरी था। मैं संत मेरी संगीत विद्यालय के प्रधानाचार्य से मिला। संत मेरी एक छोटा और बहुत अच्छा स्कूल है। वहां प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल के ऐसे बच्चे आते हैं जिनके

पास संगीत की प्रतिभा है। मैंने प्रधानाचार्य से पूछा कि क्या मैं हफ्ते में एक बार, किसी रूप में, छोटे बच्चों के लिए कुछ काम कर सकता हूं ? प्रधानाचार्य ने मुझे गौर से परखा और फिर मुझे इजाजत दे दी कि मैं हफ्ते में एक बार, एक पीरियड के लिए, छोटे बच्चों के साथ जो चाहे कर सकता हूं। जब मुझे इस तरह पूरी छूट मिल गई तो मैंने, इन बच्चों की सहायता से, दार्शनिक कहानियां लिखने की परियोजना बनाई।

एलिस ने फूलों के प्रति जो संदेह व्यक्त किया था, उससे मेरा उद्देश्य यही था कि बच्चे इस विषय पर बहस आरंभ करें और उन्होंने ऐसा ही किया।

बच्चों को यह तो समझ में आ गया था कि फूलों को भी प्यास लग सकती है। परंतु वे इस पर बातचीत करना चाहते थे कि क्या फूलों को भी सुख की अनुभूति हो सकती है ?

मैंने पूछा, 'तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि फूल सुखी नहीं हो सकते ?'

डैनियल ने तुरंत स्पष्ट और निश्चित उत्तर दिया, 'क्योंकि उनके दिमाग नहीं होता।' डैनियल की आयु साढ़े आठ वर्ष की थी और वह अपनी कक्षा का सबसे छोटा विद्यार्थी था।

मैंने पूछा, 'कोई और भी कारण है ?'

उसने फिर से कहा, 'उनके अंदर कोई मनोभाव नहीं होते।'

तब दस साल का डेविड पाल बहस में शामिल हुआ। उसने कहा, 'एक पौधा ऐसा होता है जो मक्खी पकड़ने के लिए, अपनी पत्तियों को सिकोड़ लेता है।'

मैंने पूछा, 'क्या कोई उस पौधे का नाम जानता है ?'

किसी ने कहा, 'मक्खी दबोच पौधा'

कुछ देर तक हमने इस पौधे के बारे में चर्चा की। इंसे ने कहा, 'उसे छूते ही उसकी पत्तियां मुड़ने लगती हैं।' इंसे साढ़े नौ वर्ष की लड़की थी।

एस्थर बोली, 'यह तो तितली की तरह है।' ग्यारह वर्षीय एस्थर की आयु, कक्षा में सबसे अधिक थी। डेविड पॉल ने पूछा, 'क्या यह स्वाभाविक प्रतिक्रिया की तरह नहीं है ? जैसे स्प्रिंग होता है। उसे छूते ही वह दब जाता है।'

मैंने कहा कि यदि संवेदनशील पौधा, एक स्प्रिंग की तरह कार्य करता है, तो इसके यह अर्थ हुए कि इस पौधे में कोई भावना नहीं है।

एस्थर ने कहा, 'लेकिन उसका संवेदनशील होना जरूरी है। यदि वह अपनी पत्तियों को मोड़ सकता है, तो इसका यह अर्थ है कि वह संवेदनशील है।'

फिर इस बात पर बहस हुई कि फूल आपस में एक दूसरे से बातें कर सकते हैं या नहीं।





डेविड पॉल ने सुझाव दिया, 'हो सकता है कि रेडियो की तरंगों की तरह कोई चीज हो, जिसके द्वारा पेड़-पौधे एक-दूसरे से बात कर सकते हों। या वे धूल के माध्यम से एक-दूसरे से बात करते हों, जो एक पौधे से उड़ कर दूसरे पौधे पर जाती हैं।'

मैंने कहा कि हमारी कोशिश तो यह जानने की है कि पेड़-पौधों को सुख का अनुभव होता है या नहीं। इसमें, उनके परस्पर बात करने का क्या महत्व है ? बच्चों को यह तो साफ दिखाई दे रहा था कि भाषा से अंतरंग भावनाएं प्रकट की जा सकती हैं। लेकिन शायद, उन्होंने सोचा, भावनाओं को प्रकट करने के कुछ तरीके भी हों।

डेविड पॉल ने कहा, 'पेड़ में खिले फूल, एक तरह से यह प्रदर्शित करते हैं कि वे सुखी हैं।' बच्चों ने तब, भावनाओं को प्रकट करने के संकेतों पर चर्चा की।

इंसे को यह चिंता हुई कि जब फूल मुरझाने लगते हैं तो जरूर वे दुखी होने का संकेत करते होंगे। उसने कहा, 'यह कोई जरूरी नहीं है कि अगर आप झुके हुए हैं तो आप दुखी हैं। आप सीधे खड़े होकर भी दुखी हो सकते हैं।'

डैनियल ने पूछा, 'क्या पेड़ों के दिमाग होता है ?'

मैंने कहा कि उसने एक अच्छा सवाल पूछा है। 'परंतु' मैंने उससे यह पूछा कि 'यदि उसे पता चल जाए कि पेड़ों के दिमाग होता है तो उससे यह कैसे सिद्ध होगा कि पेड़ सुखी हो सकते हैं या नहीं ?'

मार्टिन बोला, 'दिमाग के बिना हमें न दुख का बोध हो सकता है और न सुख का।' मार्टिन तकरीबन दस वर्ष का था। उसने आगे कहा, 'बिना दिमाग के तो हम जिंदा भी नहीं रह सकते।'

मार्टिन ने जो यह दूसरी बात कही थी, उससे मेरे अंदर, जीवन और मृत्यु से संबंधित अनेक प्रश्न उत्पन्न हुए (जैसे, क्या दिमाग के काम न करने को, मृत्यु का संतोषजनक मापदंड माना जा सकता है ? या मानव भ्रूण, जिसके दिमाग ने अभी काम करना शुरू नहीं किया है, क्या वास्तव में मानव है ?) परंतु इसके पहले कि मैं इस पर आगे प्रश्न पूछता, बहस आगे बढ़ चुकी थी।

'मैं नहीं सोचता कि कोई पौधा कभी यह कहता होगा, 'मैं सुखी हूं' या 'मैं दुखी हूं' डेविड पॉल बोला, 'पेड़ तो एक तरह की मशीन है। वह ठीक काम भी कर सकती है, या ऊर्जा की कमी के कारण खराब भी हो सकती है।'

डैनियल ने पूछा, 'क्या फूलों के आंखें होती हैं ?'

कई बच्चों ने उत्तर दिया, 'नहीं।'

डैनियल अड़ा रहा, 'परंतु उसके अंदर कुछ आंख की तरह की चीज तो होती है।' वह शायद पुंकेसर और गर्भ के सर को आंख समझ रहा था।

डेविड पॉल को इस विचार ने प्रेरित किया कि पौधों को अपने चारों ओर का ध्यान रखने की जरूरत होती है। वह बोला, 'कांटेदार पौधे को पता चल जाता है कि उस पर विपत्ति आने वाली है और उसे अपनी सुरक्षा की जरूरत है।'

लेकिन अब बहस का समय समाप्त हो चला था। क्या फूल भी सुखी हो सकते हैं ? इस पर विचार करने के लिए हमें केवल आधे घंटे का समय मिला था। हम प्रश्न का समाधान तो नहीं ढूंढ पाए थे, पर उससे संबंधित कई बातों पर हमने विचार किया था।

मैंने बच्चों को वचन दिया कि अगले हफ्ते मैं उन्हें कहानी का अंत बताऊंगा। मैंने उनसे कहा कि जो कुछ भी कक्षा में उन्होंने बताया है, उसका मैं अधिकाधिक प्रयोग करूंगा। (उन्हें मालूम था कि मैं पूरी बातचीत को टेपरिकार्ड कर रहा हूं।) मैंने बच्चों से पूछा कि उन्होंने जो बातें कक्षा में कहीं है, उनमें से कौन-कौन सी बातें मैं एलिस के मुंह से कहलवाऊं और कौन सी गर्टी आंटी के मुंह से आदि-आदि। उन्होंने बड़े तर्कसंगत सुझाव दिए।

घर पहुंच कर, मैंने टेप सुनकर, सारी बातचीत को कागज पर लिखा और उसे उपयोग करके कहानी पूरी करने की कोशिश करने लगा। बच्चों की बातों का उपयोग करके, कहानी को आगे बढ़ाने में कोई पेरशानी नहीं हुई। समस्या तो वास्तव में यह थी कि कहानी का अंत कैसे किया जाए, क्योंकि बातचीत में कोई निश्चित निष्कर्ष नहीं निकला था।

मैंने तय किया कि मैं अपने ही ढंग से कहानी का अंत करूंगा। अरस्तू ने 'सुख' की जो व्याख्या की है, उसी को अपना आधार बना कर, मैंने उसका उपयोग पेड़-पौधों पर किया। पता नहीं अरस्तू को मेरा यह उपयोग सही लगता या नहीं। फिर भी, उसके नीतिशास्त्र पर आधारित, अपनी कहानी का अंत मैं नीचे प्रस्तुत कर रहा हूं।

फ्रेडी ने निश्चत किया कि वह गर्टी आंटी के पास जाएगा और उन्हीं से इन फूलों से संबंधित सवाल पूछेगा। 'गर्टी आंटी, यह बताइए कि हम यह कैसे जानें कि यह फूल जो आपने लगाए हैं, सुखी हैं ?'

आंटी ने उत्तर दिया, 'तुमने उन्हें आज देखा नहीं ? उनके चेहरे कितने खुश दिखाई दे रहे हैं और वे हमारी ओर देख कर मुस्कुरा रहे हैं।'

एलिस ने चिड़चिड़ाते हुए कहा, 'आपने बस अपने मन में यह कल्पना कर ली है कि ये फूल भी आदमियों की तरह हैं। आपको अच्छी तरह मालूम





है कि उनके अंदर कोई भावनाएं नहीं होती। वे सुख की अनुभूति नहीं कर सकते।'

गर्टी आंटी जरा सावधान हो गई। उन्होंने पूछा, 'एलिस, तुम क्या यह सोचती हो कि सुख एक अनुभूति है ?—एक ऐसी सवंदनशील, कोमल भावना जो धीरे-धीरे, रोम-रोम में व्याप्त हो जाती है ?'

एलिस ने सतर्कता से उत्तर दिया, 'मैं इसके बारे में नहीं जानती।'

गर्टी आंटी ने कहा, 'यदि तुम सोचती हो कि जाड़े के दिन में गरम-गरम चाकलेट पीने से तुम्हें जो लगता है, वही सुख है; तो शायद फूल सुखी नहीं होते। क्योंकि जहां तक हमें मालूम है, उनके पास इस प्रकार की अनुभूति नहीं होती। परंतु तुम्हारे अत्यंत सुख के कुछ क्षण वे होते हैं, जब तुम वह करती हो जो तुम्हें करना अच्छा लगता है। जैसे—सहगान में भाग लेना या किसी खेल को अच्छी तरह खेलना। तुम्हारे पास तब इतना समय नहीं रहता कि तुम बैठ कर सुख का अनुभव करो। तुम्हारा सुख यही है कि जो काम तुम्हें अच्छा लगता है, उसे तुम पूरे मन से कर रही हो। फूल भी अपना सिर ऊंचा करके, अपनी सामर्थ्य के अनुसार खिलते हैं और फूलते हैं। यदि वे स्वस्थ्य हैं और उन्हें उचित खाना-पीना मिल रहा है तो वे अच्छी तरह खिलते हैं। फूलों में सुख की यही अभिव्यक्ति है।'

फ्रेडी ने गर्टी आंटी के कथन पर विचार किया। उसने सोचा कि जब क्रिसमस के दिन वह सब बच्चों के साथ मिल कर 'ओ कम आल यी फेथफुल' वाला भजन गाता है, तो उसे कितना सुख मिलता है। पता नहीं उसे वही भजन क्यों इतना पसंद है, पर उसे वह अच्छा लगता है। शायद उसे गाते समय उसका हृदय भावुक हो जाता है। परंतु भावुक होना ही सुखी होना नहीं कहा जाएगा। शायद किसी भी जीवित वस्तु के लिए सुख वही है जो किसी काम को, अपनी क्षमतानुसार, अच्छी तरह करने से मिलता है। आंटी गर्टी ने यही बताया है। अतः फूल का सुख फूलने में है।

अगले सप्ताह मैंने कक्षा में, बच्चों के साथ पूरी कहानी पढ़ी। मैंने इस कहानी में भजन गाने का प्रसंग इसलिए जोड़ा था क्योंकि कक्षा में सब छात्र संगीत सीख रहे थे। कक्षा के सात बच्चों में से पांच बच्चे ऐसे थे जो संत मेरी चर्च की गायक मंडली में थे। पर मैं वास्तव में नहीं जानता कि मेरा उदाहरण, बच्चों को पूरी बात समझाने में सहायक हुआ या नहीं।

मैंने बच्चों से पूछा कि उन्हें कहानी का अंत कैसे लगा ? अधिकांश बच्चों ने प्रसन्नता से कहा, 'अच्छा।' डैनियल ने आकर्षक मुसकान के साथ कहा, 'बहुत ही बढ़िया।'

परंतु यह साफ पता चल रहा था कि डोनाल्ड इससे संतुष्ट नहीं था। साढ़े दस वर्ष का डोनाल्ड एक चिंतनशील बालक था। वह कुछ बुदबुदाया, जो मुझे पहले सुनाई नहीं दिया। अतः मैंने उससे कहा कि वह अपनी बात फिर से कहे। उसने कहा कि उसे कहानी पसंद आई और उसके विचार से यह कहानी अच्छी थी। परंतु एक प्रश्न है, जिसका उत्तर उसे नहीं मिल पाया है और यह प्रश्न उसे बार-बार तंग कर रहा है। वह भी यही सोचता है कि फूल सुखी हो सकते हैं और गर्टी आंटी ने फूलों के सुखी होने के संबंध में जो कुछ कहा, वह भी सच है। 'परंतु' उसने जोर देकर कहा, 'वे बिना दिमाग के कैसे सुखी हो सकते हैं ?' उसने मुझसे यह नहीं कहा कि मैं, उसके लिए इस समस्या का समाधान कर दूं। उसने यह स्वीकार किया कि यह उसकी अपनी समस्या है और वह खुद ही इससे निबटेगा। मुझे यह प्रतिक्रिया बहुत ही हृदयस्पर्शी लगी।

# 2. इच्छा

संत मेरी के छोटे बच्चों की सहायता से मैंने जो अनेक कहानियां लिखी थीं, उस शृंखला की पहली कहानी का संबंध फूलों से था। कहानी का मुख्य प्रश्न था कि क्या फूलों को सुख की अनुभूति होती है ? मैंने अपनी पहली कहानी के लिए, पौधों के मानसिक जीवन से संबंधित विषय को चुना था—इसका एक विशेष कारण था। पिछले वर्ष बोस्टन (मेसेच्यूसेट्स) में, मैंने 'दर्शन और बच्चे' विषय पर, करीब बीस वयस्कों की कुछ कक्षाएं की थीं। ये वयस्क, अधिकांशतः, बास्टन के स्कूलों के अध्यापक थे। एक दिन मैंने अपने इन छात्रों को विवियन पेले की पुस्तक* 'वाली की कहानियां' में से किंडरगार्डन के दो बच्चों की बातचीत के उद्धरण की प्रतिलिपियां दीं।

*लीसा* : क्या पौधों की इच्छा होती है कि उनके बच्चे हों ?
*डीएना* : मेरे ख्याल से इच्छा केवल मनुष्य ही कर सकते हैं। लेकिन यदि भगवान चाहे, तो वह पौधों में भी इच्छा जागृत कर सकता है।
*अध्यापक* : वह इच्छा क्या होगी ?
*डीएना* : हो सकता है वह इच्छा सुंदर फूल की हो। भगवान उस पौधे में यह इच्छा जागृत करे कि वह एक सुंदर लालफूल उत्पन्न करे—यदि उस पौधे का फूल लाल होता है तो।
*अध्यापक* : मैं तो सदा यही सोचती हूं कि विचार आदमियों के ही अंदर आते हैं।
*डीएना* : बात वही है। भगवान पौधों के अंदर भी कोई छोटा सा विचार डाल देता है और इस तरह पौधों को बताता है कि वे क्या बने।
*लीसा* : मेरी मां ने मेरी इच्छा की थी और अपने जन्म-दिन के दिन मैं पैदा हो गई।

* विवियन गूसिन पेले, 'वाली की कहानियां' (केंब्रिज) हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1981 पृ. 79-80.

मैंने अपनी बोस्टन कक्षा के आधे विद्यार्थियों से कहा कि वे एक छोटा-सा निबंध लिखें जिसमें यह बताएं कि लीसा और डिएना की बातचीत को वे कैसे आगे बढ़ाएंगे। ये वयस्क छात्र काफी दिन मेरे साथ रह चुके थे और यह जानते थे कि मुझे यह पसंद नहीं है कि हम लोग बच्चों को बिलकुल नासमझ समझें। मेरे द्वारा सौंपे गए काम के उत्साह में, वे बच्चों की बातचीत द्वारा इस कल्पना के लिए तैयार थे कि पौधों में भी विचार आ सकते हैं या उनमें इच्छाएं हो सकती हैं। परंतु उन्हें यह भी लगा कि उनके निबंध में अंधविश्वास का कोई स्थान नहीं होना चाहिए और उन्हें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि वे बच्चों को पौराणिक, मानवीकरण और जीववाद की अवधारणाओं के भ्रम में न डालें। उनके विचार से कोई भी परिपक्व, विचारशील व्यक्ति यह बात अच्छी तरह जानता है कि पेड़ पौधे न तो सोच सकते हैं और न उनकी इच्छाएं होती हैं। अतः उन्होंने सोचा कि बच्चों को भी इस वास्तविकता के प्रति शिक्षित करना चाहिए।

इन वयस्कों ने जो निबंध लिखे, उनमें इस धारणा को बहुत कम प्रोत्साहन दिया गया था कि पौधों की भी इच्छा हो सकती है कि उनके बच्चे हों, या भगवान पौधों के अंदर जो विचार डाल देता है, उसी के अनुसार वे विकसित होते हैं। मुझे ये दोनों ही बातें ऐसी लगीं जो आगे सोचने को मजबूर करती हैं। मेरा यह विचार है कि इन धारणाओं पर मनन करने से, पेड़ पौधों की प्रकृति के बारे में हमारे विचार स्पष्ट हो जाएंगे और हमें यह भी पता चलेगा कि पेड़ पौधों के बारे में हमारी जानकारी का क्या स्वरूप है।

परंतु मेरे गंभीर और नीरस वयस्क छात्रों में, मुझे अपनी उत्तेजना और उत्साह की कोई झलक नहीं दिखाई दी। मुझे निराशा तो हुई, पर मैं हतोत्साहित नहीं हुआ।

मैंने 'इच्छा' की अवधारणा पर अपना ध्यान केंद्रित किया। मैंने अपने छात्रों को यह समझाने की कोशिश की कि अपने चारों ओर की दुनिया को समझने के लिए, इच्छा की अवधारणा बड़ी जटिल और महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसी धारणा है जिसके बारे में हमारे विचार (हमारे विशेषज्ञों के भी विचार) बड़े अस्पष्ट हैं। परंतु इसके बिना भी काम नहीं चलता।

मेरे प्रयास को कोई विशेष सफलता नहीं मिली। जहां तक इच्छाओं और पेड़-पौधों का संबंध था, मेरे छात्रों को कोई परेशानी नहीं थी। वे इतना मानने को तैयार थे कि मनुष्यों में इच्छाओं को अभिव्यक्त करने की क्रिया और पेड़-पौधों के कुछ क्रिया-कलापों में आकर्षक सादृश्यता है। जैसे पौधों द्वारा बीजों का उत्पादन या सूखे मौसम में उनका अपनी जड़ों को अधिक गहराई तक ले





जाना। परंतु उनके विचार से यह तथ्य बहुत सुस्पष्ट और महत्वपूर्ण है कि पेड़-पौधों में यथार्थ में, 'इच्छाएं' नहीं होतीं। इसीलिए वे इसे भी बहुत महत्वपूर्ण समझते थे कि छोटे बच्चों को यह बात अच्छी तरह समझा दी जाए।

अपनी बोस्टन की इस कक्षा के सत्र की समाप्ति पर मैं निराशा से भरा, घर लौटा। इसी निराशा के दौरान मैंने एक संवाद लिखा, जिसमें प्रत्येक वक्ता का नाम मैंने अपने छात्रों में से लिया था। जब मैं अगली बार अपने छात्रों से मिला तो मैंने अपने संवाद की प्रतिलिपियां सबको दीं और सुझाव रखा कि हम मिल कर इसे जोर से पढ़ें।

*मैं* : अच्छा बताओ, क्या पौधों में यह इच्छा होती है कि उनके बच्चे हों ?

*जेन* : मेरे पास एक ऐसा पौधा है जिसे धूप अच्छी लगती है और एक पौधा ऐसा है जिसे छाया अच्छी लगती है।

*जीन* : यह केवल तुम्हारे बोलने का एक ढंग है। तुम्हारा मतलब असल में यह है कि पहला पौधा धूप में अच्छा पनपता है और दूसरा पौधा छाया में।

*डाईएन* : लेकिन कभी-कभी पौधे भी कुछ करना चाहते हैं। जैसे, मेरे पास 'मौरनिंग ग्लोरी' का पौधा था जो बढ़ते-बढ़ते एकदम घर के किनारे तक आ गया। वहां एक नाला था। वह पौधा नाले को पार करके दूसरी ओर किसी ऊंची जगह को ढूंढने लगा जहां वह जम सके। वह बहुत दिनों तक हवा में झूलता रहा क्योंकि उसे अपने मन लायक ऊंची जमीन नहीं मिली।

*पीटर* : उसमें कोई ऐसा हारमोन या उसी तरह की कोई चीज होगी जिसके कारण वह ऊंचा चढ़ता है।

*सिंडी* : मैं एक औरत को जानती हूं जो माइग्रेन (सिर के दर्द) से बचाव के लिए दवा खाती है। उस दवा के खाने से उसे बहुत भूख लगती है। यद्यपि भूख तो उसे दवा खाने के कारण लगी, परंतु उसकी खाने की इच्छा वास्तविक है।

*पीटर* : क्या उसे सचमुच में खाने की इच्छा होती थी ?

*सिंडी* : वह मोटा नहीं होना चाहती थी। परंतु बहुत सा खाने के बाद भी उसकी भूख शांत नहीं होती थी।

*मैं* : खाना भी खाना चाहते हैं पर मोटा नहीं होना चाहते—ऐसी परस्पर विरोधी इच्छाओं से यह प्रमाणित नहीं होता कि इच्छाएं वास्तविक नहीं है।

*डेविड* : जहां तक पौधों का संबंध है, हम स्थिति को समझाने के लिए इच्छा की जगह यह कह सकते हैं कि यह उनकी 'प्रवृत्ति' है। 'मौरनिंग ग्लोरी' की प्रवृत्ति है कि वह ऊंचाई की ओर बढ़े और जब तक उसे चिपकने के लिए कोई उचित स्थान नहीं मिलता, वह ऐसे ही बढता जाता है।

*बैटी* : क्या यही बात मनुष्यों के बारे में नहीं कही जा सकती ? एक भूखे आदमी की प्रवृत्ति खाना खाने की होती है और जब तक खाना उपलब्ध होगा, वह खाता जाएगा।

*जान* : परंतु आदमियों के संबंध में कुछ और बात भी है। वे बोल कर यह बता सकते हैं कि उनकी क्या इच्छा है।

*सैली* : यह तो वह कभी-कभी ही कर सकते हैं। बहुधा उन्हें मालूम ही नहीं होता है कि वे क्या चाहते हैं। उन्हें तब यह जानने के लिए मानसिक रोगों के डाक्टर के पास जाना पड़ सकता है।

*इलेन* : छोटे बच्चों के लिए आप क्या कहेंगे ? यदि मेरी बेटी दूध पीने के तीन या चार घंटे बाद रोने लगती है, तो स्पष्ट है कि उसे दूध चाहिए। वह बोल नहीं सकती, बस रो कर बताती है।

*मारी* : रोना भी यह बतलाने का तरीका है कि हमें भूख लगी है। जब वह बच्ची बड़ी हो जाएगी तो वह अपनी इच्छा व्यक्त करने के दूसरे तरीके सीख लेगी। लेकिन रोना भी बोलने का एक तरीका है।

*लिंडा* : पत्तियों का सिकुड़ना भी क्या यह बतलाने का एक तरीका नहीं है कि उन्हें और पानी चाहिए ? यह तो ठीक है कि पौधों को अपनी बात कहने का कोई दूसरा तरीका नहीं आता है। फिर भी पत्तियों का मुरझाना, यह व्यक्त करने का एक तरीका है कि उन्हें प्यास लगी है।

*शैरी* : विकासवादी दृष्टिकोण से यह बोलने का ही एक रूप है। जो पौधे मुरझा कर पानी की कमी का संकेत नहीं करते, उनके नष्ट हो जाने की संभावना अधिक है, बजाए उन पौधों के, जो यह संकेत करते हैं, अतः संकेत न करने वाले पौधों का अंश समाप्त हो जाएगा। इसी तरह, जो बच्चे भूख के कारण जोर-जोर से नहीं रोते है, उन्हें दूध भी नहीं मिलता।

*बिली जीन* : परंतु हम छोटे मानव बच्चों, यहां तक कि नवजात शिशुओं की बात मुख्यतः इसलिए करते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि ये बच्चे एक दिन बड़े होकर अपनी इच्छा को बोल कर बताने लगेंगे। बड़े होने की यह प्रक्रिया इतनी निरंतर और लगातार होती रहती है कि हम उसमें





कोई एक बिंदु ऐसा नहीं ढूंढ सकते, जहां से सबसे पहले बच्चों में 'इच्छाएं' शुरू हुई हों।

*मैं* : निःसंदेह मनुष्य के विकास और जातियों के विकास में कुछ सादृश्य है। जातियों के विकास में भी इतनी निरंतरता दिखाई देती है कि उस बिंदु को ढूंढना मुश्किल है जहां से सबसे पहले वास्तविक 'इच्छाओं' का आरंभ हुआ हो। चिंपैंजी बहुत से ऐसे कार्य करता है जो मनुष्य जैसे हैं क्योंकि चिंपैंजी में कुछ 'इच्छाएं' होती हैं। कुत्तों के कुछ कार्य, चिंपैंजी के इच्छा प्रदर्शित करने वाले कार्यों की तरह होते हैं। इसी तरह मेढ़कों के कुछ कार्य, कुत्तों के इच्छा प्रदर्शित करने वाले कार्यों की तरह होते हैं, और इसी तरह हम क्रमशः पेड़ पौधों की श्रेणी तक आते हैं तो आपका क्या विचार है ? क्या पौधों के अंदर यह इच्छा होती है कि उनके बच्चे हों ?

*माइकिल* : विचार तो अच्छा है।

*डान* : इस पर मैं एक कविता लिख सकता हूं।

*मैं* : पर मैं पूछ रहा हूं कि क्या वास्तक में उनमें इच्छा होती है ?

*रिचर्ड* : भाई, एक तरह से होती भी है और एक तरह से नहीं भी होती है।

*मैं* : किस तरह होती है और किस तरह नहीं होती है ?

*रिचर्ड* : यह बताना तो मुश्किल है।

मेरी कक्षा के सदस्यों ने पूरी निष्ठा से अपने-अपने निर्धारित अंशों को पढ़ा और बाद में इन पर चर्चा की। संवाद में जो एक दो बातें बिना स्पष्टीकरण के छूट गई थी, उन्होंने उन्हें कुछ और आगे बढ़ाने की कोशिश की। जैसे—एक विद्यार्थी का सुझाव था कि पौधे इसलिए पत्तियां सिकोड़ लेते हैं, जिससे पता चले कि उन्हें पानी की जरूरत है। परंतु यदि उस पौधे के आसपास कोई ऐसा जीव नहीं है जो इस पानी की कमी को दूर कर सके तो पत्तियों का सिकुड़ना अर्थहीन है। मैं भी उसकी इस बात से सहमत था।

शायद इतनी चर्चा के बाद मेरी कक्षा के कुछ सदस्यों ने इतना तो मान लिया कि पेड़-पौधों की इच्छाओं से संबंधित विषय इतना नीरस नहीं है जितना वे समझते थे। परंतु मुझे लगता है कि मेरे इतने शास्त्रार्थ का कोई विशेष प्रभाव नहीं हुआ। मैं नहीं सोचता कि मेरे इस 'संवाद' को जोर से पढ़ने के बाद, इन सजग और प्रतिबद्ध अध्यापकों में से कोई भी ऐसा था जिसने यह सोचा हो कि इच्छा की अवधारणा अत्यंत जटिल अवधारणा है और यह पता लगाने में अनेक बाधाएं है कि किन तत्वों में वास्तविक इच्छाएं हो सकती हैं।

हमारे सामने, कक्षाओं में आयोजित, ये दो चर्चाएं थीं—एक बोस्टन में, बीस वयस्कों के बीच, और दूसरी एडिनबरा के एक स्कूल में सात छोटे बच्चों के बीच। इन चर्चाओं में कई समानताएं थीं। दोनों ही में एक कठिन मानसिक अवधारणा की ओर ध्यान केंद्रित किया गया था—एक में 'इच्छा' की ओर, और दूसरी में 'सुख' की ओर। दोनों ही समूहों को इसमें गंभीर संदेह था कि पेड़-पौधों का कोई मानसिक जीवन होता है। एडिनबरा में, चर्चा के आरंभ में डोनाल्ड ने जो कहा था, वह दोनों ही समूहों के लिए उपयुक्त हो सकता है। उसने कहा था, 'हम यह कह सकते हैं कि पेड़पौधे शारीरिक दृष्टि से जीवित माने जा सकते हैं, पर मानसिक दृष्टि से नहीं।'

दोनों समूहों की चर्चा में एक भिन्नता भी थी। वयस्क, बार-बार यथार्थ स्थिति और [illegible] स्थिति में भेद की ओर संकेत कर रहे थे। जैसे वयस्कों का यह कहना था कि हम अलंकारिक भाषा में यह कह सकते हैं कि पेड़-पौधों के अंदर यह इच्छा होती है कि उनके बच्चे हों, परंतु इसे शाब्दिक अर्थों में सच नहीं मानना चाहिए। फिर तो वे यह भी कह सकते हैं कि अलंकारिक भाषा में ही यह व्यक्त किया जा सकता है कि फूल सुखी हैं, परंतु यथार्थ में नहीं।

शायद ऐसा लगे कि यथार्थ और संकेतात्मक स्थिति का यह भेद, बौद्धिक प्रगति की निशानी है। परंतु मेरे विचार से बहुधा और यहां भी यह प्रगति का आभास एक भ्रम है। वयस्क इसे नहीं बता सके कि किसी जीव में 'इच्छा' की क्षमता होने के लिए क्या चीज आवश्यक है—यदि 'इच्छा' से हम यथार्थ इच्छा समझें तो फिर वे पेड़-पौधों में 'इच्छा' के अलंकारिक प्रयोग को कैसे समुचित बता सकते हैं ? जब तक यथार्थ स्थिति की समझ स्पष्ट न हो, और अलंकार के प्रयोग का आधार स्पष्ट न हो तो यह कहना निरर्थक है कि अलंकारिक या प्रतीकात्मक भाषा में यह कहा जा सकता है कि पेड़-पौधों के अंदर यह इच्छा होती है कि उनके बच्चे हों।

बच्चों ने अपनी चर्चा में कल्पना का अधिक स्वतंत्रता से उपयोग किया था। इसीलिए उनकी कुछ टिप्पणियां इस प्रकार थीं :

'यदि आप किसी पौधे से टकरा जाएं और उसे चोट लगे तो वह रोना नहीं शुरू करेगा। उसके खरोंच लग सकती है और वह मर भी सकता है।'

'फूल के अंदर कुछ ऐसी चीज होती है जो आंख की तरह लगती है।'

'पेड़ शायद आपस में बात कर सकते हों—शायद रेडियो की तरंगों जैसी किसी चीज के द्वारा, या उस धूल के द्वारा, जो एक पौधे से दूसरे पौधे पर जाती है।'





वयस्क, कल्पना के प्रयोग में कला या साहित्य के मूल्यों को जोड़ना चाहते थे। परंतु उनकी कल्पना इतनी स्वतंत्र नहीं थी और उन्होंने यथार्थ और कल्पना में स्पष्ट भेद बनाए रखना जरूरी समझा।

यह बिलकुल सच है कि यदि हम यह जानना चाहते हैं कि पौधों में 'इच्छा' और 'सुख' की अनुभूति होती है या नहीं; तो यह जरूरी है कि हम पेड़ पौधों के बारे में यथासंभव यथार्थ ज्ञान प्राप्त करें और केवल कल्पना को अपना आधार नहीं बनाएं। परंतु हमें संभावनाओं के बारे में भी सोचना चाहिए। मान लीजिए कि एक पौधा बात कर सकता है, या देख सकता है या इच्छानुसार फैल सकता है, तो क्या उससे यह सिद्ध हो जाएगा कि पौधों में कभी-कभी कुछ कहने या करने की इच्छा होती है ? और इसका क्या प्रमाण है कि उसकी भाषा वास्तविक है, या पौधा सचमुच में कुछ देख रहा है या वह वास्तव में सोच समझ कर कार्य कर रहा है ?

हम इस पर विचार करें कि कोई वस्तु कार्य कर 'सकती' है या उसमें कार्य करने की 'इच्छा' होती है या वह सुखी हो सकती है, तभी हमें यह स्पष्ट होगा कि इच्छाएं क्या होती हैं और सुख क्या होता है। तभी हमें यह तथ्य भी समझ में आएगा (यदि कोई ऐसा तथ्य है) कि पौधों के पास इच्छाएं नहीं होती हैं या वे सुखी नहीं हो सकते हैं। इसलिए वयस्कों का इस बात पर जोर देना ठीक नहीं है कि अध्यापक और मां-बाप बच्चों को यह अच्छी तरह बता दें कि वास्तव में पेड़ पौधों के अंदर इच्छाएं नहीं होती हैं। जब तक हम संभावनाओं की स्वतंत्रता से खोजबीन नहीं कर लेंगे, तब तक हमारे विचारों में स्पष्टता नहीं आएगी और हम नहीं समझ सकेंगे कि इच्छा होने का क्या तात्पर्य है। इसीलिए हम तर्कसंगत राय भी नहीं बना सकेंगे कि पेड़ पौधों के पास इच्छाएं होती हैं या नहीं। शब्द तो हम अवश्य बोल लेंगे, पर उनके अर्थ हमें समझ में नहीं आएंगे।

# 3. कहानियां

जब मैंने संत मेरी स्कूल के छोटे बच्चों से मिलना शुरू किया तो मैंने उन्हें अपनी योजना समझाई। उन्हें कुछ ऐसी कहानियां पढ़ कर सुनाई जिनमें चर्चा के लायक, रोचक प्रश्न बनते थे। जो पहली कहानी मैंने उन्हें सुनाई, वह इस प्रकार आरंभ होती थी :

दो मेंढक एक साथ मिलकर एक किताब पढ़ रहे थे। एक मेंढक ने कहा, 'इस पुस्तक के सब पात्र बड़े बहादुर हैं। वे दैत्यों और दानवों से लड़ाई लड़ते हैं और उन्हें कभी डर नहीं लगता।'

दूसरे मेंढक ने कहा, 'मैं सोच रहा हूं कि क्या हम भी बहादुर हैं ?'

दोनों मेंढकों ने दर्पण में अपनी शकल देखी।

'देखने में तो हम बहादुर लगते हैं,' एक बोला।

'यह तो ठीक है, पर क्या हम बहादुर हैं ?' दूसरा बोला।*

फिर, जैसा पौराणिक कथाओं में होता है, दोनों मेंढक एक जोखिम भरी यात्रा पर निकल पड़े। यद्यपि कहानी का शीर्षक 'दैत्य और दानव' है, परंतु इन मेंढकों ने किसी दैत्य को नहीं मारा और न किसी दानव का सामना किया। परंतु उनके रास्ते में ऐसे अनेक संकट आए जो उनकी जाति विशेष के लिए बहुत खतरनाक माने गए हैं। पहले एक गुफा में से एक सांप निकल कर आया और उन्हें देखते ही बोला, 'वाह, मेरा आहार।' किसी तरह दोनों मेंढक उससे बच कर आगे चले। थोड़ी देर में, ऊपर से एक चट्टान गिर रही थी, जिसके नीचे दोनों के कुचलने का अंदेशा था। किसी तरह वहां से भी वे बच गए और आगे चले। अंत में उन्होंने देखा कि एक बाज उन्हें पकड़ने के लिए आ रहा है। वे दौड़ कर एक शिला के नीचे छिप गए और अपनी जान बचाई।

वे दोनों मेंढक, जब भी किसी खतरे से बच जाते थे तो कांपते-कांपते यह कहते थे, 'हम डरते नहीं हैं।' अंत में, घर पहुंचने पर एक मेंढक तो जल्दी

* आर्नल्ड लोबेल द्वारा लिखित 'फ्राग एंड टोड टुगैदर' (न्यूयार्क : हार्पर एंड रो 1972) पृष्ठ 42-43.





से बिस्तर में ओढ़ कर लेट गया और दूसरा अलमारी के अंदर किवाड़ बंद करके बैठ गया। दोनों बहुत देर तक ऐसे ही पड़े रहे और सोचते रहे कि हम बहादुर हैं।

लोबेल की यह विचित्र कहानी अपने रोचक परिहास द्वारा हमें यह सोचने को प्रेरित करती है कि बहादुरी क्या है ? क्या हमें देखने से पता चल जाता है कि कोई बहादुर है या नहीं ? मैं यह कैसे बता सकता हूं कि मैं स्वयं बहादुर हूं या नहीं ? दोनों मेंढकों ने दर्पण में अपना चेहरा देखा। एक मेंढक बोला, 'देखने में तो हम बहादुर लगते हैं।' (यद्यपि उसने यह स्पष्ट नहीं किया कि देखने में बहादुर कैसे लगते हैं ?) दूसरे मेंढक ने सहमत होते हुए कहा, 'हां, पर क्या हम बहादुर हैं ?'

क्या अपनी बहादुरी प्रमाणित करने के लिए खतरों का सामना करना जरूरी है ? और वह खतरा किस प्रकार का होना चाहिए ? क्या बहादुरी सिद्ध करने के मापदंड के लिए कोई पारंपरिक खतरा होता है ? मान लीजिए कि खतरा बहुत ज्यादा हो और उतना जोखिम उठाना ठीक न हो, तो क्या वहां से भाग जाने या छिप जाने से, हमारा बहादुरी का दावा खतम हो जाएगा ? क्या खतरे के सामने अड़े रहना, कभी-कभी मूर्खता नहीं कहलाएगा ?

और कांपने या थरथराने के लिए आप क्या कहेंगे ? या डर लगने के प्रति आपके क्या विचार हैं, क्या इनसे आपकी बहादुरी को आंच नहीं आती ? या इससे बहादुरी का दावा खतम नहीं हो जाता ? या सच इसका उल्टा है ? क्या असली बहादुर के लिए डर जरूरी है ?

संत मेरी के मेरी स्कूल की कक्षा के बच्चों में यह कहानी बहुत सफल रही। मैंने कहा कि इस कहानी से यह प्रश्न उठता है कि बहादुरी क्या होती है ? हमने कुछ देर तक तो इस पर चर्चा की कि यह प्रश्न इस कहानी से कैसे उत्पन्न होता है। फिर मैंने बच्चों से कहा कि वे मुझे यह बताएं कि किसी से बहादुर कहने के लिए, उसमें क्या-क्या बातें जरूरी हैं।

उन्होंने कहा कि बहादुर होने के लिए कुछ ऐसा काम करना चाहिए जो (1) खतरनाक हो, (2) पर मूर्खतापूर्ण न हो। मैंने सुझाव दिया कि यदि कोई मूर्खतापूर्ण खतरा उठाता है तो उसे दुःसाहसी कहा जा सकता है। उन्हें यह शब्द नहीं मालूम था, पर उन्हें यह मालूम था कि इस शब्द से क्या विचार प्रकट होता है।

इसी चर्चा में उन्होंने आगे कहा कि बहादुरी का कार्य (3) किसी महत्वपूर्ण उद्देश्य के लिए होना चाहिए, (4) वह इनाम के लिए नहीं हो; यद्यपि (5) उसके परिणामस्वरूप इनाम मिल सकता है। अंत में वे सब इस पर सहमत थे कि

(6) बहादुरी का, आपके डर लगने या न लगने से, कोई संबंध नहीं है।

बच्चों ने ये छः बातें स्वयं ही ढूंढी। इसमें मैंने उनकी सहायता बहुत कम की। मैंने एक दो उदाहरण, उनकी सहज बुद्धि को तीव्र करने के लिए अवश्य दिए थे। परंतु अधिकांश विचार, बिना मेरे विशेष प्रयत्न के, उन्हीं की ओर से आए थे।

जब मैंने उनसे पूछा था कि बहादुरी के लिए क्या बातें होनी चाहिए, तो मैं वास्तव में उनसे यह पूछ रहा था कि बहादुर बनने के लिए क्या बातें 'जरूरी' हैं। परंतु कभी-कभी मैंने उनसे यह पूछा कि यदि कोई व्यक्ति अमुक कार्य करे, तो क्या केवल उसी कार्य के कारण वह बहादुर कहलाएगा ? इस प्रकार मैं उनसे यह पूछ रहा था कि बहादुर बनने के लिए क्या 'पर्याप्त' माना जा सकता है ? बहादुरी का संतोषजनक विश्लेषण करने के लिए हमें दोनों ही बातों को ध्यान में रखना होगा—बहादुरी के लिए क्या 'जरूरी' है और क्या 'पर्याप्त' है।

बच्चों ने जो छह बातें बताईं—मेरे विचार से वे न तो जरूरी हैं और न पर्याप्त। अतः वे बहादुरी का संपूर्ण विश्लेषण नहीं करतीं। जहां तक 'जरूरी' बातों का संबंध है, मेरे ख्याल से बिना खतरनाक काम किए भी कोई बहादुर हो सकता है। मान लीजिए, कोई व्यक्ति खतरनाक यात्रा पर जाने के लिए तैयार हो, पर कुछ कारणों से वह यात्रा कार्यान्वित न हो पाए; या कोई आदमी ऐसा काम करे जिसे खतरनाक समझ रहा हो पर वास्तव में वह खतरनाक न हो। दूसरों के उपहास का सामना करना भी बहादुरी है परंतु बच्चों के विश्लेषण में उसका उल्लेख नहीं है। एक भयानक बीमारी से ग्रस्त होने के कारण मौत का सामना करना भी बहादुरी है यद्यपि इसे खतरनाक कामों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

मेरे विचार से ये छह बातें, बहादुरी के लिए 'पर्याप्त' भी नहीं मानी जा सकतीं। मान लीजिए कोई व्यक्ति बहुत खतरनाक काम करता है, पर उसे उस खतरे का आभास नहीं है तो क्या वह बहादुर नहीं कहलाएगा ? फिर भी—यद्यपि वे छह बातें बहादुरी के लिए न तो जरूरी हैं और न पर्याप्त हैं, पर वे बहादुरी का प्लैटो से बेहतर विश्लेषण करती हैं। हम मानते हैं कि अरस्तु ने अपने 'निकोमेचियन नीतिशास्त्र' मे बहादुरी का जो विवेकपूर्ण वर्णन किया है, उसकी तुलना में बच्चों का विश्लेषण निम्न कोटि का है। परंतु इन बच्चों की अपेक्षा अरस्तु ने अपने विश्लेषण पर कहीं अधिक समय दिया होगा।

बहुत छोटी आयु से ही हम बच्चों को समझाते हैं कि उन्हें बहादुर बनना चाहिए लेकिन बहादुरी की अवधारणा को अच्छी तरह समझना बहुत कठिन





है। मैं यह कह सकता हूं कि बहादुरी के बारे में सोचने में, हमें अपने बच्चों की सहायता करनी चाहिए। परंतु मुझे यही आशंका है कि यदि बड़े लोग भी बच्चों के साथ बहादुरी के बारे में नए सिरे से सोचने को तैयार हो जाएं, तो वे इस चर्चा से बच्चों के बराबर ही सीखेंगे। इसलिए मैं यही कहूंगा कि बच्चों के साथ मिल कर, हम बहादुरी की अवधारणा के बारे में सोचें और इसे समझने में एक-दूसरे की सहायता करें।

दूसरे हफ्ते मैं एक भिन्न उदाहरण लेकर कक्षा में आया। एक एल.-फ्रैंक बाउम लिखित "औज़मा आफ ओज़" के कुछ अंश थे। मैंने बच्चों को वह उद्धरण पढ़ कर सुनाया जिसमें डोरोथी और उसकी साथी—बोलने वाली मुर्गी—बिल्लीना की एक गुफा में, टिकटाक नाम के एक यांत्रिक आदमी से मुलाकात होती है। टिक्टाक की पीठ पर एक छपा हुआ कार्ड लटका था, जिस पर ये ओदश छपे थे :

*सोचने के लिए* : आदमी की बाईं बगल के नीचे लगे यंत्र में चाभी भरें (अंकित-नबंर एक)।
*बोलने के लिए* : आदमी के दाहिनी बगल में लगे यंत्र में चाभी भरें—(अंकित-नंबर 2)।
*चलने और हरकत के लिए* : पीठ के बीच में लगे यंत्र में चाभी भरें (अंकित-नंबर 3)।

डोरोथी ने ये आदेश बिल्लीना को पढ़ कर सुनाए।

पीली मुर्गी ने आश्चर्य से कहा, 'हे भगवान। यदि यह तांबे का आदमी इन कामों में से आधे भी कर सकता है, तो यह सचमुच में एक चमत्कारिक मशीन है। लेकिन मैं सोचती हूं इसमें कहीं धोखा है जैसा बहुत सी यांत्रिक चीजों में होता है।

डोरोथी ने सुझाव दिया, 'हम उसमें चाभी भरें और देखें वह क्या करता है।'

'सबसे पहले मैं कौन सी चाभी भरूं,' उसने कार्ड के निर्देशों को पढ़ते हुए कहा।

बिल्लीना ने उत्तर दिया, 'एक नंबर वाले यंत्र में भरो। उससे वह सोचेगा न ?'

'हां' डोरोथी बोली, और उसने बाईं बगल के नंबर एक यंत्र में चाभी भरी।

मुर्गी ने आलोचनात्मक ढंग से कहा, 'इसमें तो कोई फरक नहीं दिखाई देता।'

डोरोथी ने कहा, 'फरक कैसे पड़ेगा ? वह तो केवल सोच रहा है।'

'पता नहीं, वह क्या सोच रहा है।'

'मैं अब बोलने वाले यंत्र की चाभी भरती हूं।' डोरोथी बोली, 'तब शायद यह बोले कि वह क्या सोच रहा है।'

उसने दो नंबर के यंत्र की चाभी भरी और तत्काल वह यंत्र मानव बोलने लगा। होठों को छोड़ कर उसका कोई अन्य अंग नहीं हिल रहा था।

'छोटी लड़की, नमस्ते। श्रीमती मुर्गी नमस्ते।' वह बोला।

उसकी आवाज किरकिरीपूर्ण और कर्कश थी और सब शब्दों का उच्चारण एक ही स्वर में था, जिसमें जरा-सा भी भाव प्रदर्शन नहीं था। परंतु डोरोथी और बिल्लीना, दोनों को उसकी बात साफ समझ में आ गई।

इतनी कहानी सुनाने के बाद मैंने पढ़ना बंद कर दिया, यद्यपि अभी करीब ढाई पन्ने और बाकी थे। मैंने चर्चा शुरू की।

मैंने बच्चों से पूछा, 'क्या निर्जीव वस्तु बोल सकती है ?'

'हां,' उन लोगों ने कहा और बोलने वाली गुड़िया का उदाहरण दिया। फिर उनके मन में कुछ शंका हुई और कई बच्चों ने अपना संदेह व्यक्त किया।

एस्थर बोली, 'वास्तव में गुड़िया नहीं बोलती है। किसी के बोलने का रिकार्ड बना लिया जाता है और जब हम डोरी खींचते हैं, तो वह रिकार्ड बजने लगता है।'

डेविड पॉल ने कहा, 'गुड़िया तो वही बोलती है जो टेप में भरा होता है, चाहे वह कुछ भी हो। लेकिन टिकटाक ने तो मुर्गी से कहा, 'नमस्ते, श्रीमती मुर्गी।'

मैंने फिर उनसे पूछा कि क्या कोई निर्जीव वस्तु सोच सकती है ?

फिर से डेविड पॉल ने उत्तर दिया, 'कंप्यूटर अपनी याददाश्त के बैंक से कुछ भी निकाल सकता है। क्या यह सोचने की तरह नहीं है ? फिर भी कंप्यूटर जीवित वस्तु नहीं कहा जा सकता।' चर्चा में कुछ देर बाद उसने कहा, 'शायद कोई ऐसा कर सके कि किसी मरे हुए आदमी का दिमाग निकाल कर एक टिकटाक जैसे यंत्र में उसे रख दे। तब उस यंत्र में याददाश्त भी होगी और वह सोच भी सकेगा यद्यपि वह जीवित नहीं कहा जा सकता।' मैंने पूछा, 'वह जीवित क्यों नहीं माना जा सकता ?'

उसने कहा, 'क्योंकि उसमें दिल नहीं होगा जो सारे शरीर में खून भेजता है। हो सकता है कि खून के बजाए वह दिमाग में पैट्रोल पंप करता हो।'





इन दोनों कहानियों के प्रति बच्चों की जो प्रतिक्रिया थी, उससे मुझे आश्वासन मिला कि ये बच्चे, कहानी में उठाए गए मुद्दों पर विचार करने में समर्थ हैं। अतः मैंने यह शुरू किया कि मैं उनके सामने किसी कहानी का आरंभ पढ़ता था और चाहता था कि उसे समाप्त करने में वे मेरी सहायता करें। उन्होंने जल्दी ही यह बात समझ ली कि मेरी कहानी के प्रारंभ से जो भी मुद्दे उत्पन्न होंगे, उन पर उन्हें बहस करनी होगी।

अगले सप्ताह, वे मेरी कहानी के समापन में उन सब बातों को ढूंढने का प्रयास करेंगे जो उन्होंने बहस के दौरान उठाई थी।

बच्चों को बातचीत के लिए इस तरह प्रोत्साहित करने के मेरे दो अलग-अलग उद्देश्य थे। एक तो मैं उनके मन में यह भावना उत्पन्न करना चाहता था कि हम जिस निष्कर्ष पर पहुंचेगे (यदि कोई निष्कर्ष निकला तो) वह अधिकांशतः (यदि पूर्णतः नहीं) उन्हीं पर निर्भर होगा। वास्तव में मैं कभी-कभी अपने मन से भी कहानी का समापन कर देता था (जैसा फूलों के प्रश्न में किया था) जिससे किसी प्रकार का समाधान निकल आए। कभी-कभी मैं कहानी को आगे बढ़ाते समय अपने प्रश्न और टिप्पणियां भी जोड़ देता था, चाहे बच्चों ने उन विषयों पर वास्तव में चर्चा के दौरान कुछ न कहा हो। मैं यह इसलिए करता था कि बहस में जितनी छानबीन होनी चाहिए थी, वह नहीं हो पाई थी, या कोई महत्वपूर्ण मुद्दा छूट गया था, परंतु मैं कोशिश यही करता था कि बच्चों के योगदान को निष्ठा सहित अपने समापन में सम्मिलित करूं। मैंने सदा यही कोशिश की कि बच्चों ने जो कुछ भी अपनी बातचीत में कहा हो, उसे मैं अपनी कहानी में समाविष्ट करूं। मेरे ख्याल से उनका यह समझना बहुत जरूरी था कि वे जो कुछ भी बोलते हैं, उसका महत्व है, और वह लिखित सामग्री में सम्मिलित होगा।

मेरा दूसरा लक्ष्य यह था कि मैं उनमें इन समस्याओं पर खुद विचार करने की इच्छा उत्पन्न करूं। मैं यह नहीं चाहता था कि वे कक्षा के अंत में मुझसे कहें, 'अब बताइए कि उसका क्या उत्तर है,' मानो किताब के पीछे लिखे उत्तरों को देखने की उन्हें अनुमति नहीं है और मुझे है। वास्तव में मेरे साथ ऐसी प्रतिक्रिया कभी नहीं हुई। उन्होंने शीघ्र ही समस्या को अपनी समस्या माना और उससे निबटने का उत्तरदायित्व भी अपने ऊपर ले लिया।

# 4. पनीर

एडिनबरा में आने के पहले साल में, बोस्टन में, अपनी वयस्क कक्षा को जो पहली कथा मैंने सुनाई, वह इस प्रकार थी :

*मैक्सीन :* तुम्हें मालूम है ? पनीर घास का बनता है।
*अध्यापक :* तुम ऐसा क्यों कहती हो ?
*मैक्सीन :* क्योंकि पनीर, दूध का बनता है, और दूध, गाय देती है और गाय घास खाती है।
*अध्यापक :* तुम पनीर खाती हो ?
*मैक्सीन :* हां।
*अध्यापक :* तो तुम भी घास की बनी हो।
*मैक्सीन :* नहीं, मैं तो आदमी हूं।

यह संवाद, एक अध्यापक और आठ साल की एक बालिका के बीच, कुछ और लंबी बातचीत का एक अंश है। एमहर्स्ट नगर के मैसेच्यूसेट्स विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में किसी ने मुझे इस बातचीत से अवगत कराया था। मैंने उसे कुछ संक्षिप्त करके, अपनी वयस्क कक्षा को सुनाया और आधे विद्यार्थियों से कहा कि वे मैक्सीन की इस बातचीत को आगे बढ़ाते हुए, एक निबंध लिखें।

मुझे जो निबंध प्राप्त हुए, उनमें से कुछ गंभीर और उपदेशात्मक थे। कुछ में अच्छे परिहास का पुट था। कुछ थोड़े औपचारिक थे और कुछ अन्य, अधिक स्वतंत्र और कल्पनापूर्ण थे (यद्यपि मैं ने 'इच्छा' अध्याय में, अपनी इस कक्षा के विद्यार्थियों पर कुछ फब्तियां कस दी हैं, पर वास्तव में मुझे इन्हें पढ़ाने में बहुत आनंद आता था)।

निबंध लिखने वालों में से अधिकांश ने इसी विचार को महत्व दिया था कि मैक्सीन के अनुसार मनुष्यों का संसार, जानवरों से अगल होता है। कुछ यह कहना चाहते थे कि मैक्सीन यह बात समझते थे कि मनुष्यों की प्रकृति भी जानवरों जैसी होती है और हम वास्तव में मनुष्य के रूप में, पशु हैं। कुछ





मैक्सीन के माध्यम से यह खोज करना चाहते थे कि मनुष्यों में ऐसी क्या खास बात है जो जानवरों में नहीं पाई जाती।

मैक्सीन की बातचीत के अंतिम अंश के बारे में इन वयस्कों की चाहे जो राय रही हो, परंतु वे इसमें सभी एकमत थे कि मैक्सीन के कथन के प्रारंभिक अंश में तर्क का बिलकुल गलत प्रयोग किया गया है। कुछ ने कहा है कि वे चाहते थे कि मैक्सीन को उसकी गलती बताएं परंतु उन्हें समझ में नहीं आया कि वे इसे कैसे करें। एक ने यह आशा व्यक्त की कि शायद मेरी कक्षाओं में शिक्षण से उसे यह समझ में आ जाए कि मैक्सीन की गलती कैसे ढूंढे और उसे कैसे ठीक करें। अन्य विद्यार्थियों का कहना था कि उन्हें यह तो पता चल रहा था कि कहीं गलती हुई है पर वे उस ग़लती को पकड़ नहीं पा रहे थे।

मेरी कक्षा के कुछ सदस्यों का विचार था कि मैक्सीन के अनुसार यदि 'क', 'ख' को खाता है, और यदि 'क' मनुष्य नहीं है तो 'क', 'ख' बना है। सिद्धांत यह है कि यदि आप मनुष्य नहीं है, तो आप वहीं हैं जो आप खाते हैं। मैक्सीन के इस तर्क में यह त्रुटि है कि मैक्सीन कभी यह नहीं कहती कि गाय, घास की बनी है। वह यही कहती है कि पनीर, घास का बनता है। उसका कारण वह यह बताती है कि पनीर, दूध का बनता है। दध, गाय से मिलता है और गाय, घास खाती है। अतः हमारे पास ये चार कथन हैं:

1. गाय घास खाती है।
2. गाय दूध देती है।
3. दूध का पनीर बनता है।
4. पनीर, घास का बनता है।

हम ऐसा क्यों सोचें कि अंतिम कथन—अर्थात पनीर घास का बनता है—अन्य कथनों का परिणाम है। मेरे खयाल से इसका उत्तर यही है कि पहले दो कथनों के फलस्वरूप एक बीच का कथन और निकलता है :

2.5 दूध घास का बनता है।

इसके साथ फिर (3) अर्थात दूध का पनीर बनता है—जोड़ देने से, सकर्मकता के सिद्धांत के अनुसार यह निष्कर्ष निकलेगा कि (4) घास का पनीर बनता है।

अतः घास का दूध बनता है, दूध का पनीर बनता है। इसलीए, पनीर घास का बनता है।

'का बनता है'—यह क्या वास्तव में सकर्मक है ? यदि ऐसा है, तो मैक्सीन का निष्कर्ष सही है। मैं तो यही सोचता हूं। अब पहले वाले निष्कर्ष सही हैं। मैं तो यही सोचता हूं। अब पहले वाले निष्कर्ष पर दृष्टि डालें :

1. गाय घास खाती है
   और
2. गाय दूध देती है।
   इससे यह निष्कर्ष निकला है
2.5 घास का दूध बनता है (?)

शायद कुछ लोग इस निष्कर्ष पर आपत्ति करें, पर इसे केवल अटकलपच्चू भी नहीं कहा जा सकता। यदि हम थोड़ा सा सोचें तो हम देखेंगे कि यह भी काफी युक्तिसंगत है। हम कुछ ऐसी कल्पना करें कि गाय, दूध उत्पन्न करने का एक कारखाना है। गाय, घास खाती है। उसके पेट में उस घास पर कुछ कार्यवाही होती है और उससे दूध का उत्पादन होता है। मैक्सीन से कुछ और प्रश्न पूछने पर यह पता चला कि उसके दिमाग में भी वास्तव में कुछ ऐसा ही विचार था। अध्यापक—'पनीर हरा क्यों नहीं होता ?' उत्तर, 'जब गाय घास खाती है तो वह घास उसके पेट में जाती है, जहां उसका परिवर्तन हो जाता है और वह दूध के रूप में बाहर निकलता है, गाय के पेट में दूध बनता है।' (गाय के पेट में क्या होता है, उसका कितना साफ और युक्तिसंगत चित्र खींचा गया है।)

कुछ लोगों का दावा है कि आठ वर्ष से छोटा बच्चा, (जैसे मैक्सीन) सकर्मकता के सिद्धांत को न तो समझ सकता है और न उसका उपयोग कर सकता है। जैसे, यदि 'क' का 'ख' बनता है और 'ख' का 'ग' बनता है, तो 'क' का 'ग' बनना चाहिए। विकास मनोवैज्ञानिकों में, इस बारे में आपस में मतभेद हैं। मैंने अपने बोस्टन के विद्यार्थियों से पूछा कि क्या उनके विचार से, ऐसे तर्क के लिए मैक्सीन की आयु बहुत कम थी ? उन्होंने उत्तर दिया, 'नहीं,' यद्यपि उन्हें उत्तर देने में शायद कुछ हिचकिचाहट हुई। फिर उन्होंने यह क्यों सोचा कि मैक्सीन के तर्क में 'जरूर' कहीं गलती है ?

मेरा विचार है कि हम इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार कर सकते हैं। विकास-मनोविज्ञान की अवधारणा मात्र ने, बच्चों के बारे में वयस्कों के सोचने के ढंग को बहुत प्रभावित किया है। शायद विकास-मनोवैज्ञानिकों की किसी





विशिष्ट खोज ने या बच्चों के विकास से संबंधित किसी विशिष्ट सिद्धांत ने वयस्कों को अपेक्षाकृत इतना प्रभावित नहीं किया है। जिन वयस्कों को इसके बारे में बहुत कम मालूम होता है कि किसी विशेष आयु में बच्चे की सोचने की क्षमता कितनी होती है, वे यह मान लेते हैं कि बच्चों में सोचने की क्षमता के विकास की विभिन्न अवस्थाएं हैं। मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि एक अवस्था से दूसरी अवस्था की ओर परिवर्तन, कम क्षमता से अधिक क्षमता की ओर होता है। अतः हो सकता है कि मैक्सीन की अवधारणाओं का भंडार सीमित हो, या उसकी तर्क की क्षमता पर्याप्त न हो या दोनों ही बातें हों। यदि वह कोई ऐसी विचित्र बात कहती है तो सचमुच में बड़ी अनोखी या असाधारण लगती है और जो अज्ञान या गलत सूचना का परिणाम नहीं है, तो स्वाभाविक है कि हम यह मान लें कि उसकी अवधारणा या तर्क करने की उसकी सीमित क्षमता, या दोनों ही बातों के कारण उसने ऐसी विचित्र बात कही है।

इसका एक खेदजनक परिणाम यह होता है कि पूर्वग्रहों के वशीभूत होने के कारण, हम या तो बच्चों की इन वास्तविक कल्पनाओं और मनगढंत बातों की उपेक्षा करते हैं या उन्हें गलत समझ लेते हैं। यदि हम बच्चों के असाधारण प्रश्नों और अरुचिकर निष्कर्षों से यह समझें कि वे अभी ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ नहीं है तो हम बच्चों की बातों में बहुत सी रोचक चीजें देखने से वंचित रह जाएंगे।

संत मेरी स्कूल के बच्चों के सामने मैक्सीन के संवाद को रखना मुझे सही और स्वाभाविक लगा क्योंकि वे सब बच्चे, आयु में, मैक्सीन से बड़े थे। चूंकि उन्हें विकास-मनोविज्ञान के सिद्धांत नहीं मालूम थे अतः यह संभावना भी नहीं थी कि वे मैक्सीन के तर्कों को केवल इसी कारण तुच्छ समझेंगे कि वे तर्क अनोखे हैं और एक छोटी बच्ची उन्हें कह रही है।

मैंने अपनी कक्षा में कहानी का जो आरंभ पढ़ा, वह इस प्रकार था :

'हेलो फ्रेडी, स्कूल कैसा रहा ?' फ्रेडी की मां ने फ्रेडी से पूछा, जो अभी अभी स्कूल से लौट कर घर में घुसा था।

'अच्छा रहा।' फ्रेडी बोला, 'पर हमारी विज्ञान की कक्षा में एक अजीब लड़का है जो स्टोर्नोवे से आया है। उसका नाम आयन है। उसने आज कक्षा में मुझसे फुसफुसा कर कहा, 'पनीर, घास का बनता है।' मैंने कहा, 'तुम मजाक कर रहे हो।' इसी समय हमारे अध्यापक श्री मैकोव ने हमें बात करते हुए देख लिया और पूछा कि हम क्या बातें कर रहे हैं ? आयन ने फिर वही बात

कही कि 'पनीर, घास से बनता है।' श्री मैकोल बोले, 'तर्क तो बड़ा रोचक है। हम इस पर अगले हफ्ते बहस करेंगे।' मां, तुम्हारे ख्याल से उसका क्या मतलब था ?'

एलिस वहीं पास में खड़ी हुई दही खा रही थी और सारी बात सुन रही थी। 'इसमें क्या मुश्किल है ?' वह बोली, 'उसका मतलब यह है कि गाय, घास खा कर दूध बनाती है और किसान, दूध का पनीर बनाते हैं। यदि 'अ' का 'ब' बने, और 'ब' का 'स' बने, तो यह माना जाएगा कि 'अ' का 'स' बना है। दूध का पनीर बना तो इसका अर्थ है कि घास का पनीर बना।

इस समय तक फ्रेडी अंदर आ गया था। उसने अपना बस्ता जमीन पर फेंका और एलिस को घूर कर देखा। फिर अपनी मां से पूछा, 'मम्मी, क्या एलिस ठीक कह रही है ?'

मां ने उत्तर दिया, 'हम लोग इस पर खाना खाते समय चर्चा करेंगे। अभी मुझे कुछ काम करना है।'

संत मेरी के मेरे छात्रों को, एलिस का तर्क ठीक ही लगा।

डोनाल्ड ने कहा, 'एक तरह से यह सच ही है।'

एस्थर ने सुझाव दिया, 'असल में हम इस पर ध्यान नहीं देते हैं कि किस चीज में, किस सामग्री का वास्तव मे प्रयोग हुआ है।' वह दूध के उत्पादन और गायों के बारे में अपने ज्ञान का प्रदर्शन करना चाहती थी।

उसने हमें आश्चर्यचकित करते हुए बताया, 'आपको मालूम है, गाय के चार भिन्न-भिन्न पेट होते हैं ?'

डोनाल्ड ने सभी बच्चों की भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा, 'यह सुनने में अजीब तो लगता है, पर एक तरह से घास ही पनीर है। यह पनीर के खाने की पहली अवस्था है। दूसरी अवस्था, दूध है।'

किसी ने सुधार किया, 'नहीं क्रीम है।'

डोनाल्ड ने आगे कहा, 'तीसरी अवस्था पनीर है। असल में चीज एक ही है। उसके विकास की कई दशाएं है।'

कुछ देर बाद हम लोग यह विचार-विमर्श करने लगे कि कोई चीज किस 'से' बनती है और किस 'की' बनती है, इनमें क्या भेद है ? वे कहना चाहते थे कि किताब कागज 'की' बनती है। परंतु यद्यपि कागज, लकड़ी 'से' बनता है, वह लकड़ी 'का' नहीं बनता।

मार्टिन ने कहा, 'यदि कागज लकड़ी 'का' बनता, तो वह 'लकड़ी जैसा' नहीं होता ?' मार्टिन उस समय पूरे दस वर्ष का था और उसका यह कथन





शायद पूरी चर्चा में सबसे समझदारीं का कथन था।

इस तरह अंत में, एडिनबरा के मेरे बच्चों ने मैक्सिम के तर्क का समर्थन नहीं किया। वे यह कहने को तैयार थे कि गाय, घास 'से' दूध बनाती है, और किसान, दूध या क्रीम 'से' पनीर बनाते हैं। परंतु वे यह मानने को तैयार नहीं थे—और मेरे खयाल से उनका सोचना ठीक ही था, यद्यपि उन्होंने मेरी राय नहीं पूछी थी—कि दूध 'का' पनीर बनता है और घास 'का' दूध बनता है।

मैंने बच्चों के अंतर्बोध को इस प्रकार कहानी के समापन में सम्मिलित किया :

एलिस उस दिन शाम को खाना खाने नहीं आई। वह शाम को नाश्ता करके अपने एक मित्र के साथ सिनेमा देखने चली गई परंतु गर्टी आंटी आई। फ्रेडी ने सोचा, अच्छा ही है। मुशकिल विषयों पर गर्टी आंटी ज्यादा अच्छी तरह समझाती है। पर ऐलिस का ऐसा ख्याल नहीं था। उसके अनुसार गर्टी आंटी बहुत भोली और भावुक थी।

फ्रेडी की मां ने खाना परोसते हुए कहा, 'फ्रेडी, तुम क्या बात करना चाहते थे ? क्या अपने स्कूल के उस दोस्त के बारे में जो तुमसे कह रहा था कि पनीर, रस्सी का बनता है ?'

फ्रेडी ने अधीरता से कहा, 'मां, रस्सी का नहीं घास का। और वह मेरा दोस्त नहीं है। वह एक नया लड़का है जो स्टोनोवे से आया है। वह गैलिक भाषा बोलना पसंद करता है और जब वह अंग्रेजी बोलता भी है, तो वह विचित्र बातें बताता है।'

फ्रेडी के पिताजी ने कहा, 'कोई ऐसा क्यों कहेगा कि पनीर, घास का बनता है ? क्या उसके खयाल से नीले पनीर में जो नीले रंग के छीटें दिखाई देते हैं, वे घास के टुकड़े हैं ?'

'नहीं पिताजी, यह बात नहीं है' फ्रेडी बोला, 'उसका मतलब यह था...कम से कम एलिस का यही कहना है कि लोग दूध या क्रीम में से पनीर बनाते हैं और गाय, घास में से दूध या क्रीम बनाती है। इसलिए यदि एक चीज की दूसरी चीज बने और दूसरी चीज की तीसरी चीज बने, तो यही माना जाएगा कि तीसरी चीज, पहली चीज की बनी है। इसलिए पनीर, घास का बना है। गर्टी आंटी, आपका क्या खयाल है ? क्या यह ठीक है ?'

गर्टी आंटी ने सोचते हुए कहा, 'यह एक रोचक तर्क तो है, परंतु इसके निष्कर्ष से हमें संतोष नहीं होता।' उन्होंने कुछ और सोचने के बाद कहा, 'शायद हमें इन दोनों में भेद करना चाहिए—चीजें किस 'की' बनती हैं और किस 'से'

बनती हैं।'

फ्रेडी और भी उलझन में पड़ गया। उसने पूछा, 'आपका क्या मतलब है ?'

गर्टी आंटी ने कहा, 'अच्छा, हम लोग एक उदाहरण लेते हैं। शराब अंगूर के रस 'से' बनती है, और सिरका, शराब 'से' बनता है। परंतु सिरका, न शराब 'का' बनता है और न अंगूर के रस 'का'। हम कह सकते हैं कि सिरका एक लंबी प्रक्रिया की अंतिम अवस्था है।'

फ्रेडी बोला, 'अब मेरे समझ में आया। कागज लकड़ी 'से' बनता है परंतु लकड़ी 'का' नहीं बनता। यदि वह लकड़ी का बनता तो वह लकड़ी जैसा होता, जैसे लकड़ी का घर या लकड़ी की मेज होती है।'

'बिलकुल ठीक' गर्टी आंटी ने कहा।

फ्रेडी ने आगे और कहा, 'तो फिर एलिस ने जो कहा वह ठीक नहीं था। एलिस अपने को बड़ी अकलवाली समझती है। इस बार पकड़ी गई। क्योंकि पनीर, दूध 'का' नहीं बनता है, वह दूध 'से' बनता है। यदि दूध, घास, 'का' बनता, तो वह...घास जैसा होता।'

गर्टी ने कहा, 'एलिस की बहुत आलोचना न करो। उसने तो यह बड़ी अच्छी तरह समझाया कि सर्टेनोवे से आए हुए लड़के का क्या मतलब हो सकता था। अधिकांश लोग इस फरक पर अधिक ध्यान नहीं देते—कोई चीज किस 'की' बनी है और वह किस 'से' बनी है।'

पर फ्रेडी ने विजयोल्लास के साथ फिर से कहा, 'फिर भी, अपने को चतुर समझने वाली एलिस धोखा खा ही गई।' वह बेसब्री से इंतजार कर रहा था कि इस भेद के बारे में एलिस को बताए, जो इसे नहीं जानती थी। उसने उत्सुकता से पूछा, 'एलिस सिनेमा से कब वापस आएगी ?'



# 5. जहाज

मेरी पत्नी, मेरा बेटा और मैं जब अगस्त 1982 में एडिनबरा पहुंचे तो कुछ समय बाद पता चला कि चौकोर मस्तूलवाले दो जहाज पास ही के लीथ बंदरगाह पर आनेवाले हैं। जहाज हम सबको अच्छे लगते हैं। सो जिन दिनों वे आनेवाले थे उन्हीं में से एक दिन हमने लीथ के लिए बस पकड़ी और जहाजों को देखा। वे देखने में प्यारे बल्कि करीब भी लगते थे। पाल गिरे होने के कारण उनके केबिनों की गहरी छानबीन की जा सकती थी।

इन दो जहाजों के इतिहास और इन दिनों ब्रिटेन के आसपास उनकी यात्रा के स्वरूप पर गाइड ने हमें छोटा-मोटा भाषण पिलाया, और उनमें से एक जहाज पर कई एक ऐसी टिप्पणियां कीं कि मेरी पत्नी और बेटा अचंभे में पड़ गए और खुश हुए। उसने कहा कि *श्यूदाद दे इंका* तो 1846 में बना था मगर जल्द ही एक बड़ी लड़ाई में डुबो दिया गया था। उसे 1981 में निकाला गया और एक पेचीदा प्रक्रिया के द्वारा उसका पुनरुद्धार किया गया जिसमें प्रसंगवश कोई 85 प्रतिशत लकड़ी बदलनी पड़ी। मगर उसने कहा कि सारी मेहनत सफल रही क्योंकि आज वह शायद चौकोर मस्तूलवाला और पानी पर तैर रहा सबसे पुराना जहाज था।

मेरी पत्नी और बेटे को कानों पर विश्वास नहीं हुआ। वे कालांतर में पहचान को लेकर दार्शनिकों की गुत्थियों से बखूबी वाकिफ थे। इनमें सबसे मशहूर गुत्थी सियस के प्रसिद्ध प्राचीन जहाज के बारे में थी जिसके तख्तों को एक समय में एक एक करके बदला गया था, यहां तक कि सारे तख्ते नए हो गए। इस गुत्थी में बतलाना यह होता है कि पुराना जहाज ऐन किस वक्त अस्तित्वहीन हुआ (और ऐन उसी वक्त क्यों हुआ)। मेरे परिवार को विश्वास इस बात पर नहीं था कि उलझन या परेशानी का रत्ती भर निशान छोड़े बिना यह गाइड प्रफुल्ल मन से यह दावे पेश कर रहा था कि (1) जहाज के 85 प्रतिशत से ज्यादा तख्ते नए थे और (2) यह शायद पानी पर तैर रहा चौकोर मस्तूलवाला सबसे पुराना जहाज था।

दो महिने बाद जब मुझे सेंट मेरी की कक्षाएं मिलने लगीं और उससे अपनी कहानियां पूरी करने में मदद मिलने लगी तो स्वाभाविक रूप से मैंने इस घटना

के बारे में सोचा। इसे मैंने एक कहानी का आधार बनाया और पूरा कराने के लिए कक्षा में ले आया। बच्चों को मनन के लिए जो कुछ मैंने दिया, उसका अहम हिस्सा यहां दर्ज है :

उस शाम खाने की मेज पर फ्रेडी से अपने परिवार को यह बतलाने को कहा गया कि उसने और एंगस ने लीथ हार्बर में क्या देखा था। वह अभी भी बहुत उत्तेजित था, मगर इतना भी नहीं कि उन्हें लंबे मस्तूलों, उनकी अंतहीन साज-सज्जा, आरामदेह केबिनों, जहाजियों के सोने के छोटे-छोटे तलघरों और जाहिर है कि उस दोमंजिली बस के बारे में बताएं जहां जहाज पर चढ़ने के लिए आप टिकट लेते हैं।

'यह एक बहुत खूबसूरत जहाज है,' फ्रेडी ने बतलाया। 'सारा का सारा सफेद चमकदार। जैसे कि किसी फिल्म का जहाज हो। वास्तव में इसे मारधाड़ की फिल्मों के निर्माण में इस्तेमाल किया गया था।'

'जहाज को तुमने कितना पुराना बतलाया ?' फ्रेडी के पिता ने पूछा।

'मेरे खयाल में गाइड ने कहा था कि यह 1840 के आसपास बनाया गया था', फ्रेडी ने जवाब दिया। 'लेकिन कुछ साल बाद एक बड़ी लड़ाई के दौरान यह डूब गया। वर्षों तक यह समंदर की तलहटी में पड़ा रहा। फिर कोई दो साल पहले इसे तलहटी से ऊपर लाया गया। आज यह तैर रहा सबसे पुराना जहाज है।'

'सचमुच !' फ्रेडी की मां बोलीं। 'फिर तो यह बेहद गला हुआ होगा।'

'अरे नहीं !' फ्रेडी ने उन्हें तसल्ली दी। 'बिलकुल नहीं। गाइड कहता था कि जब यह ऊपर लाई गई...अरे, ऊपर लाया गया...' फ्रेडी को एकाएक याद आया कि जहाजों को पुल्लिंग माना जाता है। 'तो लोगों ने देखा कि उसका डेक काफी हद तक गल चुका था। सो एक-एक करके उन्होंने उसका काफी बड़ा हिस्सा बदल डाला। फिर देखा कि कुछ पसलीदार फट्टे भी गले हुए थे। सो उन्होंने उन्हें भी बदला। आखिर उन्हें बगलों के बारे में परेशानी होने लगी; आप समझ रहे हैं न, ऊपरी खोल के बारे में। फिर उन्होंने एक-एक तख्ती करके उसको भी काफी हद तक बदल डाला। अब जहाज की लगभग सारी तख्तियां नई हैं, और बहुत ही चिकनी और ठोस और रंगी हुई हैं। यह एक खूबसूरत जहाज है।'

'फिर तो यह तैरने वाले जहाजों में सबसे पुरानी नहीं होगी,' एलिस ने उसकी खिल्ली उड़ाई; वह इस नियम को अनदेखा कर बैठी कि जहाजों को 'पुल्लिंग' बोला जाए। 'अगर जहाज की लगभग सारी तख्तियां नई हैं तो फिर





तो हो ही नहीं सकती। यह एक नई जहाज है। मुमकिन है यह किसी पुरानी जहाज के नमूने पर हो, मगर है नई जहाज।'

फ्रेडी स्तब्ध रह गया। वह उन लड़ाइयों की कल्पना में खोया हुआ था जो मारिया माग्दालेना ने लड़ी थीं। उसे हैरानी थी कि उसे चलानेवाले जहाजी कैसे थे, और यह कि जब वह सुदूर-पूर्व की यात्रा पर निकला होगा तो उस जहाज पर केबिन ब्वाय बनकर कैसा लगता होगा। जो जहाज इतना पहले यात्रा पर निकला था, वह उसके डेक पर खड़े होकर गर्व कर रहा था।

फ्रेडी को अब लगा कि एलिस सही कर रही थी। जिस जहाज पर लीध हार्बर में वह और एंगस चढ़े थे, जिस जहाज को गाइड ने तैरनेवाले जहाजों में सबसे पुराना बतलाया था, वह सचमुच वैसा था नहीं; वह तो मारिया माग्दालेना की नकल भर था। नहीं, वह एक दम उसकी नकल भी नहीं था। उसमें मारिया माग्दालेना का भी कुछ अंश था...जैसे कि...यानी बदला हुआ...यानी पुराने जहाज का बदला हुआ नया रूप।

लेकिन गाइड ने यह भी कहा था कि वह तैरनेवाले चौकोर मस्तूल के जहाजों में सबसे पुराना था। फ्रेडी को इस बारे में पूरा यकीन था।

हमने कहानी की शुरुआत पढ़ी तो बच्चे उठाए गए सवालों में दिलचस्पी लेने लगे। लेकिन इस पर भरपूर बहस शुरू करने से पहले मैं यह जान लेना चाहता था कि उन्होंने समस्या को समझ लिया है।

'समस्या क्या है ?' मैंने पूछा।

'समस्या यह है...हम यह पता करना चाहते हैं कि क्या चीज क्या है,' डोनाल्ड का जवाब था। 'यह वही पुराना जहाज है, या असली जहाज का नमूना, प्रतिरूप या नकल भर है ?'

डेविड-पॉल उलझन का शिकार नहीं लगा। बोला, 'यह तो आसान है।'

*मैं :* 'आसान क्यों है ?'

*डेविड-पॉल :* 'अगर अब भी कुछ तख्तियां बची हैं तो फिर यह पुराना जहाज हुआ।'

*एस्थर :* 'कुछ पुरानी तख्तियां तो रही ही होंगी।'

*डेविड-पॉल :* 'शायद पुराने जहाज की आत्मा अभी भी उस पर हो। अगर अभी भी कुछ पुरानी लकड़ी बाकी है...और पुराने जहाज की 'आत्मा' भी है, तो यह वास्तव में नया जहाज नहीं है।'

यह पुराना जहाज है या नहीं इसका दारोमदार इस बात पर है कि क्या पुराने जहाज की 'आत्मा' उस पर मौजूद है—मैं उस विचार को और आगे बढ़ाना चाहता था। लेकिन बहस इतनी तेजी से आगे बढ़ी कि मैं ढंग का सवाल भी नहीं सोच सका। वास्तव में पुराने जहाज की 'आत्मा' का जिक्र करने के कुछ

ही समय बाद डेविड-पॉल ने अपना रवैया काफी हद तक बदल लिया। जरूरी क्या है, इसके बारे में एक अपेक्षाकृत वर्जनामुक्त रुख से हटकर वह एक काफी सटीक बल्कि शायद अधिक संशयवादी दृष्टिकोण पर उतर आया। फिर तो जहाज की आत्मा के सवाल पर उससे कुछ कहलवाने के लिए बहुत देर हो चुकी थी।

लेकिन नहीं, मैं तो आगे की बातें बतलाने लगा। पहले तो पाठ के कुछ नुक्तों पर अपेक्षाकृत गर्मागर्म बहस हुई (जैसे 'लगभग सभी' तख्तियों के बदले जाने के लिए कितनी तख्तियां बदलनी होंगी) और कुछ दूसरी प्रारंभिक टिप्पणियों पर भी। मैंने समस्या पर फिर उनका ध्यान खींचना चाहा।

*मैं :* 'मान लो कि थोड़ी सी तख्तियां रह गई हैं जो कभी बदली नहीं गईं। बीच की हर चीज बदल दी गई है। फिर मान लो कि पुराना नौतल (keel) रह गया है। मस्तूल नए हैं और पाल भी। तो कितने लोग इसे पुराना जहाज कहेंगे ?'

सबके हाथ ऊपर उठ गए। तब तक मैं श्यामपट पर जहाज की तस्वीर बना चुका था।

*मैं :* 'मान लो कि हमने आखिरी तख्तियां भी बदल दी हैं। मान लो कि एक दिन कप्तान आया और बोला कि ये तख्तियां भी गली हुई हैं। फिर उन्हें भी बदल दिया गया। मान लो कि पुराने जहाज का सिर्फ नौतल बचा है। तो कितने लोग इसे अभी भी पुराना जहाज कहेंगे ?'

फिर सबके हाथ ऊपर उठ गए।

*मैं :* 'तो असल चीज नौतल है ?'

*डेविड-पॉल :* मेरा खयाल है कि पसलीदार फट्टे और नौतल ही सबसे अहम हिस्से हैं।'

*मैंने फिर पूछा :* 'लेकिन अगर नौतल बाकी रहता है तो यह पुराना ही जहाज हुआ ?'

*डेविड-पॉल :* 'नहीं। लोग तो वैसे भी कभी नौतल नहीं देखते।'

*डोनाल्ड :* 'तुम इसे देखो या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। लोग उसे नहीं देखते तो इसका मतलब यह नहीं होता कि यह पुराना ही जहाज है।'

डोनाल्ड की बात सबको भा गई। हम जानना चाहते थे कि इन या उन काल्पनिक दशाओं में यह पुराना ही जहाज होगा। हम यह नहीं पूछ रहे थे कि लोग क्या इसे पुराना जहाज स्वीकार करेंगे।





तो भी डेविड-पॉल की बात में भी कुछ दम था। पुराने जहाज का मतलब क्या हुआ, यह सवाल आंशिक रूप से उन मानदंडों का है जिन्हें लोग यह तय करने के लिए इस्तेमाल करते हैं कि क्या इस परिवर्तन के बाद जहाज का अस्तित्व रहता है। अगर कभी किसी ने नौतल की छानबीन नहीं कि तो यह अप्रासंगिक है।

*आइसी :* '(मान लो कि) अभी भी उस पर पुराना ही केबिन है।'

*डोनाल्ड :* 'जब तक नीचे वही जहाज रहता है, इसका कोई मतलब नहीं कि ऊपर आप कुछ नया बनाते हैं या नहीं।'

'अभी भी उस पर पुराना ही केबिन है'—निश्चित ही यह कहने का मतलब वास्तव में यह मानना नहीं है कि केबिन से बिलकुल स्वतंत्र एक जहाज संभव है। मैं किसी कुर्सी के बारे में कह सकता हूं कि 'इसकी पुश्त अभी भी इस पर है, और मेरे लिए यह मानना जरूरी नहीं कि पुश्त के बिना भी कोई चीज, मिसाल के लिए, स्टूल न बनकर कुर्सी ही कहलाएगी। फिर भी डोनाल्ड की टिप्पणी सटीक थी। अगर हम केबिन को जहाज पर मौजूद कोई चीज, एक तरह का उपांग समझे तो केबिन के बचे रहने से जहाज के अस्तित्वमान बने रहने के बारे में कुछ भी नतीजा नहीं निकलता।'

तब तक की बहस के दौरान डेविड-पॉल ने इस विषय पर फिर से विचार कर लिया था और अभियोग-पक्ष के वकील जैसी भूमिका ग्रहण करने लगा था। अब उसे कक्षा का मौजूदा रवैया अपेक्षाकृत वर्जनामुक्त दिखाई दे रहा था और वह उसे बेनकाब करने पर उतर आया। डोनाल्ड इस प्रमुख दृष्टिकोण का प्रवक्ता बन गया। दोनों पक्ष अपने-अपने तर्कों के समर्थन में जिस स्वाभाविक ढंग से उपमाएं तलाश कर रहे थे, उसके कारण, इसके बाद चली बहस विशेष रूप से प्रभावशाली रही। मैं अकसर विश्वविद्यालय में अपने छात्रों को (और खुद को) प्रासंगिक उपमाएं सोचने के लिए उकसाता हूं। ये बच्चे तो बिना किसी बाहरी प्रोत्साहन के प्रतिभा के साथ उपमाओं से खेल रहे थे।

डेविड-पॉल ने किले की उपमा चुनी। एक तरह से यह ताज्जुब की बात भी नहीं क्योंकि एडिनबरा का किला उसके इर्द-गिर्द के भूदृश्य का प्रमुख तत्व था। फिर भी यह चुनाव असाधारण रूप से सटीक था।

'तो उनका मतलब यह है,' उसने 'उनका' पर जोर देते हुए कहा और ऐसी आवाज में कहा जिससे उसके इस विश्वास का संकेत मिलता था कि वह दूसरे वर्जनामुक्त छात्रों को ऐसी उपमा का कायल कर देगा कि वे सब जल्द ही बेचैन हो उठेंगे। 'तो उनका मतलब यह है कि अगर आपके पास

यह किला है जो पूरी तरह नए सिरे से बना है और कि आपको पुराने किले का सिर्फ यही एक पत्थर मिला—और बाकी सारे पत्थर नए हैं—तो यह वही पुराना किला हुआ।'

बाकी में कइयों ने जवाब दिया, 'नहीं !' फिर भी उनमें से ज्यादातर फौरन इस बात को नहीं समझ सके कि एक अवांछित उपमा को स्वीकार करने से कैसे बचा जाए।

डोनाल्ड ने कार की उपमा चुनी जिस पर वह बहस के दौरान कई बार पलटकर आया। बोला, 'तो मेरे पास एक कार है। मैं एक खिड़की बदलता हूं, फिर दूसरी बदलता हूं। मैं एक दरवाजा, सारे दरवाजे, पहिये बदल देता हूं...तो जब तक मैं इंजन नहीं बदलता, यह तो वही कार हुई।'

कार के अस्तित्वमान रहने में इंजन का जो भारी महत्व है, जहाज के अस्तित्वमान बने रहने में वैसा ही महत्व क्या उसके किसी हिस्से का हो सकता है,—हमने इस बात पर विचार किया। कोई भी शायद नौतल को छोड़ किसी और अच्छे जवाब की तलाश नहीं कर सका। नौतल के महत्व का परीक्षण करने के लिए मैंने इस विचार-प्रयोग में परिवर्तन किया। मैंने कहा : 'मान लो हम यह तय करते हैं कि जब तक नौतल वही रहता है, जहाज भी वही रहता है। अब मैं चाहता हूं कि तुम लोग एक और स्थिति की कल्पना करो। हमारे पास वही पुराना जहाज है और हम सिर्फ एक चीज बदलते हैं, यानी नौतल को। बाकी सब कुछ वही रहता है।'

*डोनाल्ड :* 'हां, तब भी ऐन वही जहाज रहेगा। वही पुराना जहाज। पक्का।'

*मैं :* 'तो फिर इतना अहम कैसे हुआ ?'

*डोनाल्ड :* 'जरूरी नहीं कि नौतल ही सबसे ज्यादा अहम हो। आप यही बात हर टुकड़े के बारे में कह सकते हैं। मैं कहता हूं, 'मुझे पता है मैं क्या करूंगा; मैं इन मस्तूलों में से एक को निकालूंगा और दूसरा लगा दूंगा।' तब भी यह वही जहाज रहेगा। जरूरी नहीं कि नौतल ही कुछ खास हो। सिर्फ यह है कि नौतल वह है जो समझा सकना मुश्किल है....'

यहां पर आकर डेविड-पॉल अपने छानबीन के बेहद प्रभावशाली कौशल के साथ बहस में बैठा। उसने पूछा, 'तुम्हारा मतलब यह है डोनाल्ड, कि अगर लकड़ी का एक छोटा सा टुकड़ा भर बचता है'—उसने हाथ से एक छोटे से टुकड़े का संकेत दिया—'तो भी वह वही जहाज रहेगा ?....अगर लकड़ी का छोटा सा





टुकड़ा भर बचता है और बाकी सब कुछ नया है, तो भी क्या जहाज वही होगा ?'

*डोनाल्ड :* 'मगर तो भी, इसका मतलब यह है कि (दूसरों की जगह) लगने वाले बाकी टुकड़े इस छोटे से टुकड़े से जुड़ेंगे और इस तरह जहाज वही जहाज रहेगा।'

इस जगह और बहस में दूसरी जगहों पर भी डोनल्ड ने इस विषय में निरंतरता के महत्व पर अपनी समझ को स्पष्ट कर दिया। जब तक परिवर्तन क्रमिक होते हैं, यानी हम मारिया माग्दालेना से शुरू करते हैं और विकास के हर चरण में एक जहाज का अस्तित्व रहता है तो जब तक अंत में मूल का कोई अंश बाकी रहता है, तब तक 'मारिया माग्दालेना' ही इस सवाल का सबसे सही जवाब होगा कि 'अब हमारे सामने कौन सा जहाज है ?'

हुआ यूं कि उन दिनों ब्रिटेन के समाचार पत्र और टेलीविजन ट्यूडर काल के जहाज मेरी रोज को निकालने के प्रयासों से संबंधित कहानियों से भरे हुए थे। एक जगह पर आकर डोनाल्ड ने कहा : 'अगर आप मेरी रोज जैसी कोई चीज निकालें और आपको फट्टों की जाली जैसी कोई चीज नजर आए, और वह चीज भी गली हुई है, और फिर भी कोई चीज ऐसी है जिसे बदलने की जरूरत नहीं है, और आप कहते हैं कि 'हम इस हिस्से को यहीं रखेंगे,' और आप उसके सहारे एक जहाज खड़ा करते हैं....'

डेविड-पॉल पर इसका कोई असर नहीं हुआ। उसने अपमान-भाव से कहा : 'आप कहते हैं कि अगर एक टुकड़ा, एक हिस्सा बाकी रहता है और उसके सहारे पूरा जहाज खड़ा करते हैं तो यह सबसे पुराना ही होगा।'

*डोनाल्ड :* 'नहीं। अगर उन्हें मूल जहाज मिलता है तो वे कहते हैं, आह दोस्त, इस जहाज को तो देखो ! यह तो पूरा गल चुका है....'

कोई शख्स किसी पुराने जहाज या किले से एक टुकड़ा लेता भर है और उससे शुरू करके एक नया जहाज या किला खड़ा करता है, और दूसरी तरफ किसी गिरे-पड़े और गले हुए जहाज या किले में क्रमशः कुछ परिवर्तन किए जाते हैं—लगता था कि डोनाल्ड इन दोनों मामलों में अंतर करने की कड़ी कोशिश कर रहा था।

डेविड-पॉल यह जानना चाहता था कि जहाज के अस्तित्व में बने रहने के लिए मूल जहाज का ठीक-ठीक कितना हिस्सा बचा रहना चाहिए। उसने सुझाया कि मान लीजिए कि सिर्फ एक टुकड़ा बाकी रहा है।

*डोनाल्ड :* 'अगर यह एक टुकड़ा भर है तो बात अलग हो जाती है। आप यह तो मानेंगे कि यह तो तर्क को थोड़ा खींचना हुआ।'

*डेविड-पॉल :* 'ठीक है ठीक है; तो इतना बड़ा लकड़ी का टुकड़ा लेते हैं।' उसने एक बड़ी आकार के कुंदे का इशारा किया।

डोनाल्ड झिझका, बोला 'खैर, यह भी तर्क को कुछ खींचना ही हुआ...'

आगे चलकर लगा डोनाल्ड यह सोच रहा है कि अगर मूल सामग्री का एक खासा बड़ा टुकड़ा बचा रहता है तो इसे पुराना जहाज ही कहेंगे, इस निष्कर्ष को उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। तो भी उसने और भी जोर देकर आग्रह किया कि उसमें निरंतरता होनी ही चाहिए और बदलाव क्रमिक होना चाहिए। बोला : 'अगर आप ये टुकड़े निकालकर इनकी जगह कुछ और लगा दें, और फिर इन सभी टुकड़ों की जगह कुछ और लगा दें तो यह फिर वही पुराना जहाज रहेगा।' इस बीच वह लगातार हाव-भाव के साथ अपनी बात कहता रहा।

डेविड-पॉल ने अपमानजनक रवैया अपना लिया। उसने गोया बाकी बचे टुकड़े का इशारा किया। बोला : 'लेकिन वह तो जहाज का पुराना हिस्सा है ! बाकी सब कुछ नया है, 1982 का।'

*डोनाल्ड :* 'फिर भी यह पुराना ही जहाज हुआ।'

*डेविड-पॉल :* 'जहाज का वह टुकड़ा, वाह !'

*डोनल्ड :* 'हां, तो भी यह पुराना ही जहाज रहेगा।'

*डेविड-पॉल :* 'सबसे अच्छी बात तो यह होगी कि लकड़ी के उस टुकड़े को लेकर पानी में डाल दिया और तैराया जाए।—*(मखौल उड़ाते हुए)* सबसे पुराना जहाज !'

उस बहस में मौजूद उत्तेजना का बयान करना मुश्किल है। हर बात सहज ढंग से हुई, और फिर भी उपमाएं, भाषा के खेल और आकस्मिक अंतःदृष्टियां सब हम पर आतिशबाजी की चिंगारियों की तरह गिरीं।

उस अद्‌भुत बहस की सामग्री का इस्तेमाल करके मुझे कहानी को आगे लिखने में कोई परेशानी नहीं हुई। लेकिन डोनाल्ड और डेविड-पॉल की बहस पर अपना कोई हल थोपने से मैंने परहेज किया। डोनाल्ड जहाज जैसी वस्तुओं के निरंतर अस्तित्व के बारे में एक काबिले-कुबूल मानदंड विकसित करने लगा था; वह इस उदीयमान मानदंड के अबूझ परिणामों को स्वीकार करने को तैयार लगता था—मिसाल के लिए यह कि जहाज तो ठीक है, मारिया माग्दालेना ही होगा, भले ही मारिया माग्दालेना को बनाने में प्रयुक्त सामग्री का बाकी बचनेवाला





टुकड़ा लकड़ी का एक छोटा कुंदा ही क्यों न हो।

डेविड-पॉल ने बड़े कारगर ढंग से एक आलोचनात्मक और संशयवादी रुख अपना लिया था, लेकिन अभी उसने ऐसा कोई मानदंड सामने नहीं रखा था जिसकी डोनाल्ड के मानदंड से तुलना की जा सके। न ही बुनियादी तौर पर एक शंका की स्थिति के परिणामों को स्वीकार करने को तैयार था। मैंने अगले हफ्ते इस छानबीन को आगे बढ़ाने के लिए कुछ कामचलाऊ कोशिशें कीं, मगर फिर मैंने तय किया कि किसी भी सार्थक प्रगति के लिए हमें पूरी तरह नए सिरे से शुरू करना होगा। मैं सोचता था कि संभवतः मानव-शरीर या बल्कि मानव-व्यक्तित्व के निरंतर अस्तित्व पर विचार करते हुए हम उस साल आगे चलकर इस विषय पर पलटें, मगर वास्तव में हम कभी ऐसा नहीं कर सके।

मैंने कहानी का अंत इस तरह से किया :

'हमें कैसे पता चले कि उसमें पुराने जहाज की आत्मा है ?' फ्रेडी ने शंका के साथ पूछा। 'और नौतल के साथ ही भला कौन सी खास बात है? आप तो नौतल को देखते भी नहीं; वह तो पानी से नीचे रहता है।'

'खैर,' एंगस ने जवाब दिया। 'आप उसे देखें या नहीं, इससे फर्क नहीं पड़ता। वह पुराना ही जहाज रहेगा, भले ही हम उसे नहीं देख सके। लेकिन मेरा खयाल है मैं इस बात से सहमत हो सकती हूं कि नौतल सचमुच इतना महत्वपूर्ण नहीं होता। बात तो सिर्फ इतनी है कि कुछ तख्तियां बाकी हैं और बाकी एक बार में एक करके बदल दी गईं। इस तरह जहाज का अस्तित्व हमेशा बना रहा। आप ऐसा तो कर नहीं सकते कि मारिया माग्दालेना से सिर्फ एक टुकड़ा लें और उसके सहारे एक जहाज खड़ा करें और वह वही पुराना जहाज रहे—उसी तरह जैसे आप एडिनबर्ग के किले से एक पत्थर लेकर और उसके सहारे नए पत्थरों से एक किला बनाकर यह नहीं कह सकते कि आपने एक पुराना किला बनाया है।'

'समझा,' फ्रेडी फिर बहुत ही उत्तेजित होकर बोला, 'अगर आपके पास एक पुराना जहाज है तो उसकी एक तख्ती बदलने पर वह नष्ट नहीं होता। जहाज अभी भी आपके सामने होगा और वही होगा जो आपके सामने था, हालांकि अब वह जरा सा भिन्न होगा।'

'हम एक तख्ती को लेकर परेशान नहीं है,' एंगस सहमत था। 'वह कोई समस्या नहीं है।'

'तो फिर,' फ्रेडी ने और अधिक उत्तेजित होकर कहना जारी रखा। 'आप एक और तख्ती बदलते हैं। यानी आपने उसे जरा सा और बदल डाला, लेकिन यह अब भी वही जहाज है। इस तरह नई तख्तियां लगाते जाने पर भी यकीनन

तब तक वही पुराना जहाज रहेगा जब तक कि आखिरकार सारी पुरानी तख्तियां न बदल दें।'

'जरा ठहरो,' एंगस ने कहा; अब शंका करने की बारी उसकी थी। 'मान लें कि जहाज में शुरू में जो कुछ था उसमें से सिर्फ एक छोटा सा टुकड़ा बचा है—छोटा, बहुत छोटा टुकड़ा, बल्कि सिर्फ एक तीली बराबर—बाकी सब कुछ नया है, 1982 का। तो फिर यह पुराना जाहज कहां रहा ?'

'अगर सिर्फ एक तीली बचती है तो फिर तो,' फ्रेडी सहमत था, 'यह तो तर्क का कुतर्क करना हुआ।'

'खैर, मान लें कि यह तीली से बड़ा है, मगर तख्ती का टुकड़ा भर ही है तो,' एंगस ने सुझाया।

फ्रेडी झिझका। उसने स्वीकार किया, 'मेरा खयाल है कि तब भी यह तर्क का कुतर्क ही हुआ।'

'लेकिन तर्क कहां कुतर्क बनता है ?' एंगस ने जोर दिया, 'और कुतर्क की हद तक पहुंचे बिना तुम कहां तक तर्क को ले जा सकते हो ? एक बड़ी तख्ती ? क्या यही पूरे मारिया माग्दालेना जहाज को बनाने के लिए काफी है ?'

'मैं नहीं जानता,' फ्रेडी जिस गहरी सोच में खोया हुआ था उससे निढाल होकर बोला। 'मैं थक चुका हूं। आओ देखें, टेलीविजन पर क्या आ रहा है।'



# 6. ज्ञान

हाल में मुझे एक बहुत असाधारण किंडरगार्डन कक्षा का विवरण पढ़ने को मिला। उस कक्षा की अध्यापिका को बच्चों की चर्चा में इतनी रुचि थी और वह चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए इतनी उत्सुक रहती थी कि वह उनकी बातों को टेप करके उसी दिन उन्हें लिख लेती थी जिससे वह कुछ भूल न जाए और यदि अगले दिन फिर से उसी पर आगे चर्चा करनी हो, तो उसके लिए पहले से तैयार रहे। इस पुस्तक में इन चर्चाओं के कई विस्तृत उद्धरण हैं। वे आश्चर्यजनक हैं। बच्चों की बातों में कल्पना, विनोद और कई सूझबूझ की झलक दिखाई देती है और उनके तर्कों में बड़ी स्वच्छंदता है। बहस में जो नवीनता है, उसका सारा श्रेय उस अध्यापिका को है जिसके कारण ऐसी चर्चाए संभव हुई।

कक्षा द्वारा सलाद के बीज बोने के बाद हुई इस बातचीत पर जरा गौर करें :

*एडी* : हम यह कैसे जानते हैं कि ये बीज वास्तव में सलाद के बीज हैं।

*अध्यापिका* : इसके पैकेट के ऊपर छपा हुआ है 'सलाद के बीज'।

*एडी* : क्या पता वे वास्तव में टमाटर के बीज हों ?

*अध्यापिका* : तुम शायद पैकेट के ऊपर छपी तस्वीर देख कर यह कह रहे हो, जिसमें सलाद-के साथ टमाटर का भी चित्र है। पर तस्वीर में वे केवल यह प्रदर्शित कर रहे हैं कि सलाद के साथ टामटर खाया जाता है।

*वारेन* : वे शायद यह सोचते हों कि इसके अंदर टमाटर के बीज हैं और हो सकता है उन्हें यह न मालूम हो कि ये बीज किसी और के हैं।

*अर्थ* : यह भी हो सकता है कि किसी और चीज के बीज भी देखने में ऐसे ही लगते हों।

*अध्यापिका* : तुम्हारे खयाल से क्या ऐसी गलती हो सकती है ?

*लीसा* : अगर गलत बीज निकले तो उन्हें दुकान पर लौटा देना चाहिए।

*डीएना* : दुकानवालों ने बीज थोड़ी बनाए हैं ?

*एडी* : अगर तुम उन्हें लौटाना चाहते हो तो तुम्हें माली के पास जाना पड़ेगा ?

*डीएना* : यह भी हो सकता है कि नाम छापने में उनसे गलती हो गई हो।

*एडी* : शायद वे उससे पैकेट में दूसरे बीज रखने वाले हों, पर उनका ध्यान कहीं और हो और वे गलत मेज पर चले गए हों।

*वाली* : या बगीचे के गलत हिस्से में चले गए हों जहां टमाटर बोए गए हों।

*वारन* : तब तो यह हो सकता है कि ये बीज, सलाद के न होकर टमाटर के हों।

एडी ने जो प्रश्न पूछा था, उसका संबंध ज्ञान के प्रमाण और आधार से था। अन्य बच्चों ने भी तत्काल उसमें योग दिया। उन्हें उन संभावनाओं के बारे में सोचने में बड़ा मजा आया जो हमारे इस विश्वास पर शंका खड़ी कर रही थी कि ये बीज सलाद के ही हैं। इस तरह उन सभी बच्चों ने इस दावे को चुनौती दी कि हमारे पास सही जानकारी है।

जिस किसी ने दर्शनशास्त्र पढ़ा होगा, वह जानता होगा कि उसमें प्रश्न खड़े करके किसी भी जानकारी के संबंध में संदेह उत्पन्न करने की प्रवृत्ति होती है जैसे यह जानने का दावा कि उस पैकेट में सलाद के बीज हैं। एक बार शंका उत्पन्न होने के बाद, उसे खतम करने का क्या कोई युक्तिसंगत और पर्याप्त तरीका है ? क्या हमारे पास कोई ऐसा प्रमाण है जिसके द्वारा हमें पक्का विश्वास हो कि वे बीज, वास्तव में सलाद के बीज हैं ? या क्या ऐसे प्रमाण की खोज निरर्थक है ? पैकेट के ऊपर जो नाम अंकित है, वह गलत हो सकता है, माली की याददाश्त धोखा दे सकती है; और एक विशेषज्ञ बागवान भी कोई भूल कर सकता है। तो क्या हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि किसी को भी वास्तव में पता नहीं है कि अमुक बीज, सलाद के ही हैं। हां, यह जरूर है कि हम उन्हें बोकर देखें, जैसा हमारे किंडरगार्डन के बच्चे कर रहे थे। परंतु हो सकता है कि बीज अंकुरित ही न हो। यदि वे अंकुरित नहीं होते, तो हम यह निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते कि वे सलाद के बीज नहीं थे। यदि वे अंकुरित हो जाते हैं, तो उनसे जो पौधे निकलेंगे, उनको पहचानने में भी समस्याएं हो सकती हैं। चलिए, इन बातों पर ध्यान देते हैं। फिर भी हमें अधिक से अधिक





यही पता चल सकता है कि वे बीज सलाद के थे या सलाद के नहीं थे। हमारे मन में अभी भी संदेह बना रह सकता है कि क्या कोई ऐसा है जो यह जानता हो कि फलां चीज, सलाद के बीज ही हैं।

हाल में, मेरे परिवार में एक मेहमान आईं। वे शहर में पली-बढ़ी थीं और अपना अधिकांश जीवन उन्होंने शहर में बिताया था। हमने एक पिकनिक का आयोजन किया तो वे बहुत खुश हुईं। पर जब मैंने कहा कि हम वहां पर जंगली ब्लूबैरीज बीनेंगे, तो वे जरा चौंकी। उन्होंने यह जानना चाहा, 'मुझे यह कैसे पता चलेगा कि वे खाने लायक हैं या नहीं ?' मैंने कहा, 'इसमें क्या मुश्किल है ? हम आपको बता देंगे।' हमारी मेहमान आश्वस्त नहीं हुईं। 'आप मुझे एक मुश्किल में डाल देंगे,' वे बोलीं। 'आप मुझे जो ब्लूबेरी खाने योग्य बताएंगे, उसे अगर मैं नहीं खाऊंगी तो आप नाराज होंगे और यदि मैं उसे खा लूंगी तो मैं पर्याप्त प्रमाण के बिना कोई चीज स्वीकार करूंगी।' हमने कुछ सोच कर कहा, 'आप दुकान से जो बेरी खरीदती हैं, उस पर छपे नाम का आप किस आधार पर विश्वास करती हैं ?' उन्होंने फौरन मुस्कराते हुए उत्तर दिया, 'उन्हें खाने का तो मुझे बहुत अनुभव है।'

आप समझ ही गए होंगे कि मैं उन बच्चों से इन बीजों के बारे में चर्चा करना चाहता था। मैं उनसे इस प्रश्न पर विचारविमर्श करना चाहता था कि क्या हम जानते हैं कि वे बीज सलाद के बीज हैं ? यदि हां, तो हम यह कैसे जानते हैं ? परंतु मुझे बड़ी निराशा हुई जब अध्यापिका ने अपने छात्रों का ध्यान केवल व्यावहारिक बातों की ओर लगाया। निःसंदेह यह किसी रूप में व्यावहारिक नहीं कहा जा सकता कि हम यह सोचें कि वे कौन से तरीके हो सकते हैं, जब सलाद के बीजों के साधारण पैकेट में सलाद के बीज न हों;--विशेषरूप से, जब विवादास्पद प्रश्न यह है कि क्या हमें पक्का मालूम है--(खयाल नहीं) कि ये सलाद के बीज हैं ? यह सारा विवाद विशुद्ध चिंतन से संबंधित है--इसमें व्यावहारिक कुछ भी नहीं है।

ऐसा क्यों होता है कि मां-बाप और अध्यापक, चाहे वे कितने ही संवेदनशील और नेकनियत वाले हों, बच्चों के सोचने के ढंग में विशुद्ध चिंतन के क्षणों को नहीं पकड़ पाते या वे बच्चों को उनके अपने ही स्वरूप में नहीं पहचान पाते। शायद ऐसा इसलिए होता है कि बच्चों की क्षमताओं के विकास पर इतना महत्व दिया गया है--विशेषतः उनके ज्ञानात्मक विकास पर--कि हम इसे स्वाभाविक मान लेते हैं कि बच्चों का सोच अभी बहुत प्रारंभिक अवस्था में है और इसका विकास, वयस्क के स्तर की दिशा में होना चाहिए। इसे हम बहुत प्रारंभिक अवस्था का मानते हैं, शायद वह वयस्क के उस स्तर से अधिक

खुला चिंतन हो जिसे हमने अपनी शिक्षा का लक्ष्य निर्धारित किया है। हम विकास के अपने पूर्वानुमानों के आधार पर बच्चे की टिप्पणियों को महत्वहीन मान लेते हैं और इस तरह उनमें छिपे दर्शन पर गंभीरता से विचार नहीं करते। इसी तरह बच्चे के दृष्टिकोण को, हम उस दृष्टिकोण के अनुरूप गंभीरता या विनोदशीलता प्रदान नहीं करते।

मैंने सोचा कि मैं संत मेरी स्कूल में अपनी कक्षा से पूछूंगा कि क्या हम यह जान सकते हैं कि फलां बीज सलाद के हैं या नहीं ? मैं एक दूकान पर गया और सलाद के बीजों का एक पैकेट खरीदा। शुरू में मेरा विचार यही था कि मैं बच्चों से पूछूंगा कि क्या हम वास्तव में जानते हैं कि पैकेट के बीज सलाद के बीज हैं ? फिर मैंने अपनी इस योजना का क्षेत्र और बढ़ाया। मैंने तय किया कि मैं फिर से बाजार जाकर बीजों का एक और पैकेट खरीदूं। ये बीज देखने में पहले पैकेट के बीजों की तरह हों परंतु किसी दूसरी भिन्न चीज के हों। फिर मैं बच्चों से पूछूं कि हम किस प्रकार यह जान सकते हैं कि इनमें से एक पैकेट के बीज वास्तव में सलाद के बीज हैं।

दुर्भाग्य से मैं जिस दुकान पर गया, वहां बीजों के पारदर्शी पैकेट नहीं थे। अतः पैकेट को बाहर से देख कर मैं यह नहीं बता सकता था कि इसके अंदर के बीज, सलाद के बीजों की तरह दिखाई देते हैं या नहीं ? मैंने अपनी पत्नी से पूछा, और उसने अपनी एक मित्र से सलाह ली। उन दोनों की सलाह के आधार पर मैंने गाजर के बीजों का एक पैकेट खरीद लिया और दोनों पैकेटों के बीजों को दो साफ लिफाफों में डाल दिया।

अब मेरी हवस और बढ़ गई। मैंने सोचा कि मैं बच्चों को इस विचार से परिचित कराऊं कि 'किसी वस्तु में, किन चीजों का होना, उस वस्तु को जानने के लिए पर्याप्त माना जाएगा।' कक्षा के शुरू होने पर, मैंने इस धारणा की बारीकी पर कुछ समय लगाया। मैंने बच्चों के सामने एक कथन रखा और पूछा कि इस कथन के लिए क्या बातें पर्याप्त मानी जाएंगी ? कथन था :

1. वह व्यक्ति मेरा पिता है।

कुछ प्रोत्साहन के बाद उन्होंने उत्तर दिया :

2. वह व्यक्ति पुरुष है और मेरे माता-पिता में से एक है।

सचमुच में कथन (1) के लिए इतना काफी है। फिर मैंने सारी कक्षा में, बीजों के दोनों प्लास्टिक के लिफाफे घुमाए और बच्चों से पूछा कि उनके खयाल से इनमें क्या है ? उन्होंने कई अनुमान लगाए जिसमें अंततः 'सलाद के बीज'





भी सम्मिलित था। मैंने यह स्वीकार किया कि एक लिफाफे में वास्तव में सलाद के बीज हैं और एक में गाजर के। मैंने बच्चों से कहा कि मुझे इसमें रुचि नहीं है कि वे यह बताएं कि किस लिफाफे में सलाद के बीज हैं और किस में गाजर के। मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या वे मुझे बता सकते हैं कि यह कहने के लिए कि (3) 'मैं जान जाऊंगा कि ये बीज (दो पारदर्शी लिफाफों में से एक के बीज) सलाद के बीज हैं,' क्या बातें पर्याप्त होगी ?

अपनी परियोजना को और नाटकीय बनाने के लिए मैंने बच्चों से कहा कि 'मान लो तुम्हारी मां तुमसे कहती है कि 'जाओ, बगीचे में ये सलाद के बीज बो दो'; परंतु तुम पहले ही सलाद और गाजर के बीजों को पैकेट से बाहर निकाल चुके हो, और भूल गए हो कि कौन से बीज किस पैकेट से निकाले थे ...'

मार्टिन ने बहुत व्यावहारिक बात कही, 'मैं दोनों ही प्रकार के बीजों को एक जगह बो दूंगा और अगले वर्ष हमें आधी फसल गाजर की और आधी फरास सलाद की मिल जाएगी।'

'ठीक है,' मैंने कहा, 'पर तुम यह कैसे जानोगे कि कौन सा बीज, किसका है ?'

मार्टिन ने कहा, 'उसके पैकेट पर लिखा होगा।'

मैंने कहा, 'बहुत ठीक। चलो इसी का उपयोग करते हैं।' फिर मैंने ब्लैक बोर्ड पर यह कथन लिखा जो इस दावे को साबित करने के लिए पर्याप्त आधार माना जाएगा कि ये बीज, सलाद के बीज हैं।

कथन (4) यदि पैकेट पर 'सलाद के बीज' लिखा हो, तो हम जान जाएंगे कि ये सलाद के बीज हैं। मैंने पूर्ववर्ती शर्त के नीचे रेखा खींच दी (अर्थात यदि पैकेट पर 'सलाद के बीज' लिखा हो तो) मैंने बच्चों को याद दिलाया कि यदि यह शर्त पूरी हो तो यह इस परिणाम—'हम जान जाएंगे कि ये बीज सलाद के बीज हैं'—तक पहुंचने के लिए पर्याप्त मानी जाएगी।

चर्चा की इस अवस्था तक बच्चों को इस पर विश्वास था कि पैकेट के ऊपर जो छपा है, वह ठीक होगा और वे संतुष्ट थे। किंडरगार्डन कक्षा के बच्चों की तरह, मेरी कक्षा में कोई ऐसा नहीं था जिसे नं (4) कथन में कुछ संदेह हो।

पर्याप्त आधार के लिए अन्य सुझाव भी थे। मार्टिन ने फिर से अपना विचार दोहराया कि हम सभी बीजों को बो दें और उनके पौधे उगने पर हमें पता चल जाएगा कि कौन से बीज सलाद के थे। मैंने कहा कि मार्टिन के ढंग से कार्यवाही करने पर हमें उस पर्याप्त स्थिति का पता चल सकता है

जिसके आधार पर हम कह सकें, 'हम जान जाएंगे कि ये बीज सलाद के बीज 'थे' पर हम यह नहीं कह सकेंगे कि 'हम जान जाएंगे कि ये सलाद के बीज हैं'।

अचानक डेविड पॉल के मन में एक विचार आया और वह बड़ा उत्साहित हो गया, 'आप नमूने के लिए दोनों प्रकार के दो-दो बीज लेकर उन्हें बोएं, और उन पर निशान लगा दें और उन्हें एक 'पौध घर' में रख दें, जिससे वे जल्दी से बड़े हो जाएं। फिर आप देखें कि कौन से बीज से सलाद उगता है। तब आपको पता चल जाएगा कि कौन से बीज सलाद के हैं और आप उन्हें बो सकते हैं।

विचार बहुत बढ़िया था। वास्तव में यह जानकारी कि कोई बीज सलाद का है, हमें उस बीज की अंतर्निहित संभावना से अवगत कराती है। हम इसका पता लगाने के लिए कि कौन-सा बीज किसका है, दोनों की अंतर्निहित संभावनाओं को, द्रुत प्रक्रिया द्वारा चरितार्थ कर लें। इस रीति से जब हमें पता चल जाएगा कि कौन से बीज वास्तव में सलाद के बीज हैं, तब हमे एक उत्तम आधार मिल जाएगा जिससे हम बता सकेंगे कि शेष बीजों में से कौन से बीज सलाद के हैं।

एस्थर यह जानने को बहुत उत्सुक थी कि उन दोनों प्लास्टिक के लिफाफों में से, वास्तव में किस लिफाफे में सलाद के बीज हैं। अतः हमने 'पर्याप्त आधार' पर अपनी चर्चा कुछ समय के लिए स्थगित कर दी और 'वास्तविक ज्ञान' पर चर्चा आरंभ की। मैंने बच्चों को अपना-अपना अनुमान लगाने की छूट दी। उनमें से प्रायः आधे बच्चों का उत्तर सही था—(मेरा ऐसा ख्याल है।)

इसके बाद मैंने कोशिश की कि बच्चों का ध्यान फिर से बोर्ड पर लिखे कथन नं. (4) पर आकर्षित करूं। मैं यह जानना चाहता था कि यदि पैकेट पर 'सलाद के बीज हो' तो क्या वास्तव में सलाद के बीज को जानने के लिए पर्याप्त होगा ?

*मार्टिन* : 'हो सकता है उन्होंने गलत पैकेट में बीज रख दिए हों।'
*एस्थर* : 'ऐसा नहीं हो सकता।'
*मार्टिन* : 'और वे वास्तव में सूरजमुखी के बीज हों।'

इसके बारे में बच्चों में कुछ शंका थी कि वे पैकेट सील किए हुए लिफाफों में थे या नहीं। मैंने इसे स्पष्ट किया कि वे पैकेट बंद थे। अब नं. (4) कथन का रूप यह हो गया :





यदि बंद पैकेट पर 'सलाद के बीज' लिखा हो तो हम जान जाएंगे कि इसमें सलाद के बीज हैं।

मैंने बच्चों से पूछा कि इस संशोधन से सब संतुष्ट हैं ?

सबने एक साथ उत्तर दिया, 'हां।'

मैं, 'क्या यहां कोई यह सोचता है कि 'पैकेट पर सलाद के बीज लिखा हो' पर्याप्त आधार नहीं हैं ?'

सबने एक साथ उत्तर दिया 'नहीं'।

मार्टिन अपनी बात पर अड़ा रहा। उसने कहा, 'मान लीजिए कि आप सब बीज दें और पौधे निकलने पर आपको पता चले कि आपने तो सारे बगीचे में सूरजमुखी के बीज बो दिए हैं, तब आपको बड़ी निराशा होगी।'

*डेविड पॉल* : 'लेकिन सूरजमुखी के बीज तो देखने में भिन्न होते हैं'
*मार्टिन* : 'आपको कैसे पता चलेगा ? वे तो बंद पैकेट में रहेंगे।'
*एस्थर* : 'पर कोई अनुभवी माली होगा तो उसे फरक पता चल जाएगा।'
*मार्टिन* : 'अच्छा मान लो कि आप उन्हें बोएं और उनमें से डेफोडिल के या किसी और के पौधे निकल आएं।'
*कोई बच्चा* : डेफोडिल के बीज नहीं होते हैं, उसके कंद बोए जाते है।'

मार्टिन की शंका बनी रही। परंतु अन्य बच्चों में शंका नहीं थी। मैंने विषय को वहीं छोड़ दिया और एक कहानी आरंभ की।

अगले हफ्ते मैंने फिर से 'जानकारी के लिए पर्याप्त आधार' का प्रश्न उठाया। पिछले हफ्ते की चर्चा को लिखते समय मेरा ध्यान मार्टिन की निरंतर शंका पर गया। मैंने यह भी देखा कि दूसरों की शंका विरोधी प्रतिक्रियाओं को हम जानकारी के लिए पर्याप्त बातों की खोज के साथ नहीं जोड़ पाए थे।

आगे का विवाद आरंभ करने के लिए मैंने पिछली चर्चा की निम्नांकित प्रतिलिपियां सबको दीं।

'हम चर्चा कर रहे थे कि यदि पैकेट पर 'सलाद के बीज' लिखा हो, तो हम जान जाएंगे कि इस पैकेट में सलाद के बीज हैं।'

मैंने बच्चों से पूछा, 'क्या कोई यह सोचता है कि इस कथन की पूर्ववर्ती शर्त—(यदि पैकेट पर सलाद के बीज लिखा हो) आगे के परिणाम के लिए पर्याप्य आधार नहीं हैं ? (मैं जान जाऊंगा कि पैकेट में सलाद के बीज हैं।)'

सब बच्चे एक साथ बोले, 'नहीं।'

*मार्टिन* : 'आप सब बीजों को बो सकते हैं और अगले वर्ष आपको पता

चलेगा कि सारे बगीचे में सूरजमूखी के पौधे उग आए हैं। आपको तब बड़ी निराशा होगी।'

*डेविड पॉल* : 'सूरजमुखी के बीज फरक होते हैं।'

*मार्टिन* : 'परंतु जब वे पैकेट में बंद रहेंगे तो आपको कैसे पता चलेगा कि वे फरक हैं ?'

*एस्थर* : परंतु यदि आप अनुभवी माली हैं तो आपको इन दोनों बीजों में फरक मालूम पड़ जाएगा।

मैंने बच्चों से कहा कि मैंने उन सब संभावनाओं को नहीं लिखा है जिनका सुझाव मार्टिन दे रहा था। सभी बच्चों को पिछले हफ्ते की उनकी चर्चा के अंश को कागज पर छपा देख कर अच्छा लगा। मेरे खयाल से उन्हें यह प्रतीत हुआ कि हम लोग मिल कर जो काम कर रहे हैं, वह बहुत महत्वपूर्ण हैं। वे 'जानकारी के लिए पर्याप्त आधार' के प्रश्न पर फिर से चर्चा करने को तैयार थे।

डेविड पॉल अब थोड़ा चौकस हो गया था। उसने सतर्कता से कहा, 'आपको करीब-करीब पता चल सकता है। आप कोई संदेह नहीं करेंगे।'

मैंने फिर उनका ध्यान उस प्रतिलिपि की ओर केंद्रित किया। मैंने कहा कि मार्टिन का यह कहना था कि यह हो सकता है कि पैकेट में 'सलाद के बीज' लिखा हो, परंतु उनके बोने से सूरजमुखी के पौधे निकल आएं। इसका उत्तर डेविड पॉल ने यह दिया था कि सूरजमुखी के बीज, देखने में, अलग तरह के होते हैं।

फिर मैंने पूछा, 'बोर्ड पर जो लिखा है, उससे इसका क्या संबंध है ?'

डेविड ने बोर्ड पर लिखे कथन को जोर से पढ़ते हुए कहा, 'यदि पैकेट पर सलाद के बीज लिखा हो, तो हम जान जाएंगे कि उसमें सलाद के बीज हैं।'

इसे बोला, 'हो सकता है कि पैकेट में उन्होंने टमाटर के बीज रख दिए हों।'

अब बच्चों में कुछ संदेह उत्पन्न हुआ। मैंने फिर उनका ध्यान अपनी मुख्य समस्या, जानकारी के लिए पर्याप्त आधार क्या होंगे, पर केंद्रित किया।

*मैं* : 'यदि तुम कहते हो कि सूरजमुखी के बीज फरक दिखाई देते हैं।'

*डेनियल* : 'वे फरक तो दिखते ही हैं।'

*मैं* : 'ठीक है। तो अब तुम्हें अपने पूर्ववर्ती कथन में यह जोड़ देना चाहिए कि—'यदि पैकेट पर सलाद के बीज लिखा हो, और यदि वे देखने





में सूरजमुखी के बीजों की तरह न हों....'

*डेविड पॉल* : 'परंतु यह गलत होगा। वे टमाटर के बीज हो सकते हैं।'

*मैं* : 'ठीक है। (फिर बोर्ड पर लिखते हुए) और टमाटर के बीजों की तरह न हों....'

*डेविड पाल* : 'या सेब के पेड़ के बीजों की तरह'।

*मैं* : (बोर्ड पर लिखते हुए) 'या सेब के पेड़ के बीजों की तरह न हों।'

*मार्टिन* : 'या गाजर के बीजों की तरह....'

*मैं* : (लिखते हुए) 'या गाजर के बीजों की तरह।'

मैंने फिर सबका सारांश प्रस्तुत करने की कोशिश की। 'यदि कोई कहता है कि सूरजमुखी के बीज में फरक दिखाई देते हैं, या गाजर के बीज भिन्न होते हैं, या जैसे एस्थर ने कहा, 'यदि आप विशेषज्ञ हों तो आप पहचान सकते हैं..'

*मार्टिन* : 'परंतु यह भी तो हो सकता है कि आप विशेषज्ञ न हों।'

*मैं* : 'यदि वे सब बातें प्रासंगिक हैं, तो आपको यह कहना होगा कि 'यदि आप विशेषज्ञ हों तो आप जान सकेंगे' या इसी तरह की कोई बात आपको कहनी होगी।'

*डेविड पॉल* : 'यदि आप किसी विश्वसनीय जगह का बना पैकेट लें...'

इस समय तक एस्थर सतर्क हो गई थी। उसने डेविड पॉल से कहा, 'वे भी तो गलती कर सकते हैं।'

*डेविड पॉल* : 'उनके सौ पैकेटों में से, एक में शायद यह गलती हो।'

*एस्थर* : 'यह भी तो हो सकता है कि आपको सौ में से वही एक वाला पैकेट मिले।'

*डेविड पॉल* : 'एस्थर, अब तुम बेकार की परेशानियां खड़ी कर रही हो।' *(सब हंसने लगे)*

एस्थर ने तब एक विचार प्रस्तुत किया, जिसके द्वारा साधारण व्यक्ति भी विशेषज्ञ बन सकता था। उसने कहा कि 'पैकेट के पीछे एक तस्वीर छापी जाए जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के बीज दिखाए जाएं। तब हम लोग, सही तस्वीर से मिला कर बीजों को पहचान सकते हैं।'

इस बार डेविड पॉल ने आपत्ति उठाई, 'पैकेट में सब प्रकार के बीजों की

तस्वीर तो नहीं छापी जा सकती हैं। यदि आपको अनन्नास के बीज मिल जाएं तो ?' *(चारों ओर हंसी)*

मार्टिन ने एस्थर के सुझाव को थोड़ा और आगे बढ़ाया। उसने सुझाव दिया, 'वह पैकट पारदर्शी हो, जिसमें आपको अंदर के बीज दिखाई देते हों। फिर चार्ट से मिला कर, आप उन बीजों की जांच कर सकते हैं।'

डेविड पॉल ने कहा 'वह तो ठीक है। परंतु इसमें खर्च कितना बैठेगा ? आपको उन लोगों को विश्वास करना चाहिए जो आपको बीज दे रहे हैं।'

डेविड पॉल की बात निःसंदेह प्रासंगिक थी। दर्शनशास्त्र के पंडित ज्ञान का ऐसा विश्लेषण करते हैं जो समाज के संदर्भ में अव्यावहारिक होता है। 'वास्तविक जीवन' में शायद यह बहुत आपत्तिजनक, असभ्य, असंवेदनशील और घोर अनैतिक माना जाएगा यदि हम यह मांग करें कि जानकारी के लिए पहले पर्याप्त सैद्धांतिक बातों का समाधान हो, तभी हम यह स्वीकार करेंगे कि फलां चीज वही है। इसी तरह, यदि कोई हमें यह वास्तव में बता दे--चाहे बताने वाला बहुत विश्वसनीय न हो कि खाना जहरीला है या अमुक पुल असुरक्षित है और फिर भी हम कहें कि हमें यह मालूम नहीं था, तो यह अपमानजनक भी होगा और अनैतिक भी।

मैं मानता हूं कि मैंने डेविड पॉल की बात को अधिक महत्व नहीं दिया--बस इतना ही कह कर टाल दिया, 'हो सकता है।' मैंने फिर अपनी बात आगे बढ़ाई, 'जब भी आप कोई ऐसा सुझाव देते हैं जिससे आपकी जानकारी सुनिश्चित हो जाए जैसे, विशेषज्ञ से पूछना, या चार्ट में उसकी पुष्टि करना, तो उसे यहां बोर्ड पर लिखे पूर्ववर्ती कथन के साथ जोड़ना चाहिए। जैसे यदि हम चार्ट में देखें और हमें उसी तरह के बीज चार्ट में मिल जाएं तो हम जान जाएंगे कि वे बीज...'

*डेविड पॉल :* 'परंतु यह कुछ बेवकूफी की बात नहीं मालूम होती ? यदि आप सलाद के बीजों का एक पैकेट खरीद रहे हैं तो केवल यह बात पक्की करने के लिए कि वे सूरजमुखी के बीज न हों, आप इतनी सारी कार्यवाही करेंगे ?'

*मैं :* 'चलो मान लो कि यह बेवकूफी है तो तुम्हें फिर यह कहना चाहिए कि हमें पक्की तौर पर यह नहीं मालूम है कि ये बीज सलाद के बीज हैं।'

*डेविड पॉल :* 'ऐसी पक्की जानकारी तो कभी नहीं हो सकती। परंतु इतना हम संयोग पर छोड़ सकते हैं।'





जब मैं इन दोनों चर्चाओं के लिखित विवरणों को फिर से पढ़ता हूं तो मुझे काफी आश्चर्य होता है कि मैंने बच्चों में शंका उत्पन्न करने के लिए, उन्हें किस तरह उकसाया था। साधारणतः मैं ऐसा नहीं करता हूं--कम से कम ऐसा मेरा खयाल है। मैंने शंका की भावना को इसलिए उकसाया था कि पुराने जमाने से आज तक चले आ रहे इस विचार का मैं खंडन करना चाहता था कि ज्ञान एक ऐसी चीज है जिसमें संशोधन नहीं हो सकता। यदि मैं पक्की तौर पर जानता हूं कि वे सलाद के बीज हैं, तो मैं गलत नहीं हो सकता और न मेरे गलत होने की कोई संभावना है। या इसे उलटे ढंग से ऐसे कह सकते हैं कि यदि मेरे गलत होने की कोई संभावना है, तो मैं पक्की तरह से यह नहीं जानता कि वे बीज सलाद के ही हैं।

ज्ञान के बारे में यह प्रबल अवधारणा प्लेटो के जमाने से चली आ रही है। (देखें उसकी पुस्तक *रिपब्लिक*, 477 ई.)। परंतु इसके अतिरिक्त, एक और अपेक्षाकृत निर्बल अवधारणा भी प्लेटो के समय से चली आ रही है कि ज्ञान एक सही विश्वास है जिसका औचित्य इस पर आधारित है कि हम कितनी प्रवीणता से सिद्ध कर सकते हैं कि जो हमारा विश्वास है, वह सही है। (देखिए--प्लेटो--*मीनो*, 98 ए के लगभग और प्लैटो *थिएटीटस* 201 डी) इस अपेक्षाकृत दुर्बल अवधारणा में (ज्ञान को सही विश्वास मानना) इसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है कि इस विश्वास में गलती हो ही नहीं सकती। वास्तव में इसके लिए इतना ही काफी है कि अभी तक कोई गलती वस्तुतः नहीं हुई थी और विश्वास के आधार सही हैं।

दर्शनशास्त्र की इस शाखा को ज्ञानमीमांसा कहते हैं। इसके इतिहास में सदियों से यह प्रयास किया जा रहा है कि संतोषजनक रूप से यह बताया जाए कि इस अपेक्षाकृत निर्बल अवधारणा में, ज्ञान के लिए क्या बातें आवश्यक और पर्याप्त होनी चाहिए। जब मैं विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ ज्ञान के विश्लेषण पर बात करता हूं, तो मैं उनमें प्रबल अवधारणा के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने का प्रयास करता हूं। अर्थात इस बात पर जोर देता हूं कि जहां गलती की जरा सी भी संभावना हो, वहां वास्तविक ज्ञान नहीं हो सकता। परंतु उनमें शंका जागृत करने के बाद मैं उन्हें यह बताता हूं कि ज्ञान की इस प्रबल अवधारणा के अनुसार हम बहुत कम जानते हैं। फिर मैं उनका ध्यान, अपेक्षाकृत निर्बल अवधारणा की ओर आकर्षित करता हूं, जिसके अनुसार वे ज्ञान के लिए आवश्यक और पर्याप्त बातों को बताने की कोशिश करें।

शायद मैंने संत मेरी स्कूल के अपने बच्चों के साथ यह विधि इसलिए नहीं अपनाई, क्योंकि मैंने आश्चर्यसहित यह देखा कि वे ज्ञान के अचूक होने

पर इतना जोर नहीं दे रहे थे, जैसी मुझे अपेक्षा थी। मार्टिन की शंका इन दो बातों पर आधारित थी : (1) 'वास्तविक ज्ञान' और डेविड पॉल के अनुसार 'करीब-करीब जानने,' में भेद है, (2) और यह समझ कि 'वास्तविक ज्ञान' (यदि कुछ है) उसी हद तक सीमित है, जहां तक किसी भी प्रकार की गलती की संभावना ने हो।

परंतु अन्य बच्चे 'करीब-करीब जानने' से काफी संतुष्ट थे। हम सभी हो 'करीब-करीब ज्ञान' हो सकता है, यद्यपि गलती की संभावना हमेशा बनी रहेगी। शायद इसी में बुद्धिमानी है कि हम 'करीब-करीब जानने' वाले ज्ञान से संतुष्ट हों।



# 7. शब्द

एक दिन मैं संत मेरी स्कूल में अपने साथ 'गुलीवर की यात्राएं' नामक पुस्तक ले कर गया। मेरे पास एक भारी-सा थैला भी था। मैंने अपनी कक्षा को, पुस्तक में से निम्नांकित अंश पढ़ कर सुनाया :

> उसके बाद हम लोग भाषाओं के स्कूल में गए। वहां तीन प्रोफेसर यह सलाह कर रहे थे कि अपने देश की भाषा में कैसे सुधार किया जाए।
>
> पहली योजना तो यह थी कि लंबे-लंबे शब्दों को छोटा कर दिया जाए। शब्द-भेदों को समाप्त करके संज्ञाएं रहने दी जाएं, क्योंकि वास्तव में सभी चीजें, जिनकी हम कल्पना कर सकते हैं, संज्ञाएं ही होती हैं।
>
> दूसरी योजना यह थी कि सारे शब्द ही समाप्त कर दिए जाएं। उनका कहना था कि यह स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत लाभकारी होगा और बातचीत भी संक्षेप में हो सकेगी। प्रत्येक शब्द जो हम बोलते हैं, कुछ हद तक हमारे फेफड़ों का क्षय करके उनकी ताकत कम करता है और इसलिए हमारे जीवन की अवधि को घटाता है। अतः इसका एक व्यावहारिक समाधान यह है, 'चूंकि शब्द, केवल वस्तुओं के नाम हैं, अतः यदि सब आदमी अपने साथ उन सब वस्तुओं को लेकर चलें जिनकी वे बात करना चाहते हैं, तो उसमें कहीं अधिक सहूलियत होगी।' इसमें बस एक असुविधा है। यदि आदमी का काम बहुत बड़ा और विविध प्रकार का हो, तो उसे उसी अनुपात में उतनी ही अधिक चीजें अपनी पीठ पर लाद कर ले जानी होंगी। यदि वह संपन्न हो तो वह एक दो नौकर इस काम के लिए रख सकता है। मैंने अकसर ऐसे ही दो व्यक्तियों को देखा है जो अपनी पीठ पर लदे बोझे से ऐसे झुक कर चलते हैं, जैसे हमारे फेरीवाले। वे जब सड़क पर आपस में मिलते हैं, तो अपने बोझ को नीचे उतार कर, सामान खोल कर आपस में घंटों बातें करते रहते हैं। फिर वे अपना सामान वापस बांध कर, उसे पीठ पर लाद कर, एक दूसरे से बिदा लेते हैं।
>
> इस नए अन्वेषण से एक और लाभ यह है कि इसका प्रयोग एक

विश्वव्यापी भाषा के रूप में किया जा सकेगा, जिसे सभी सभ्य देश समझ सकेंगे जिनके यहां के सामान और उपकरण प्रायः एक ही तरह के होंगे।

कुछ अंश पढ़ने के बाद मुझे यह अनुभव हुआ कि शायद बच्चों को इसकी भाषा समझ में नहीं आ रही है। अतः मैंने उन्हें यह सब सरल भाषा में समझाया। जब बच्चों को यह विचार समझ में आ गया कि चीजों का उपयोग करके बातें की जा सकती तो मैंने अपना थैला खोला। (जिसे मैं पीठ पर लाद कर लाया था)। मैंने उसमें से करीब बीस विभिन्न चीजें बाहर निकाली और कक्षा में घुमाई। उनमें निम्नांकित चीजें भी थीं :

| | |
|---|---|
| खिलौने की पुलिस की मोटर | बाल पाइंट पेन |
| चूहा रूपी खतरे का चिन्ह | कागज का टुकड़ा |
| खिलौने का हवाई जहाज | खिलौने का पिस्तौल |
| खिलौने की मुर्गी का बच्चा | घर की बड़ी सी चाभी |
| खिलौने के कई सिपाही | हाथ की घड़ी |
| रबर बैंड | कई सिक्के |

मैंने बच्चों से कहा कि हम एक खेल खेलेंगे। मैंने उनसे कहा कि कुछ बच्चे स्वेच्छा से कक्षा के सामने आए (केवल दो बच्चे आए)। मैंने इन बच्चों से कहा कि वे कोई ऐसा वाक्य सोचें जिसे वे इन चीजों का प्रयोग करके व्यक्त कर सकते हों। वे अपने वाक्य को कागज के टुकड़े पर लिख कर और कागज को मोड़ कर मुझे दे दें। फिर एक-एक करके, वे कक्षा के सामने इन चीजों का प्रयोग करके, अपना वाक्य 'बोलें'। कक्षा यह बताने की कोशिश करे कि वह वाक्य क्या है ? आप के जो भी उत्तर होंगे, उन्हें मैं बोर्ड पर लिखता जाऊंगा। और फिर कागज में लिखे वाक्य से उसकी तुलना करूंगा।

मार्टिन ने तुरंत आपत्ति उठाई कि 'और' को कहने के लिए कोई चीज नहीं होगी। मैंने कहा कि तुम सही कह रहे हो। मैं आगे इस विषय पर चर्चा करूंगा। पर अभी तो हम अपना खेल शुरू करें।

बच्चों ने बड़े उत्साह से वह खेल खेला। उन्होंने बड़े लंबे और घटनापूर्ण वाक्य चुने। (यदि मैं खेलता, तो मैं कहीं अधिक सरल वाक्य चुनता।) कई ने पिस्तौल का प्रयोग किया—या तो कोई किसी के गोली मारता या गोली मारने की धमकी देता। स्पष्ट था कि मेरे थैले की सब वस्तुओं में से पिस्तौल ही सबसे आकर्षक चीज थी (मैंने वयस्कों की कक्षा में भी यही खेल खेला है। वे भी पिस्तौल का ही सबसे अधिक उपयोग करते हैं)।

बच्चों को अपने वाक्यों को समझाने में आश्चर्यजनक रूप से सफलता





मिली। निःसंदेह उनकी सफलता का एक कारण यह था कि वे मूक अभिनय का बड़ी कुशलता से प्रयोग कर रहे थे, जो वास्तव में खेल का अंग नहीं माना जा सकता था। यह खेल इतना लोकप्रिय हुआ कि हमारी कक्षा का अधिकांश समय इन्हीं वाक्यों में निकल गया। जब हमने चर्चा आरंभ की तो अधिकांश बच्चों के बस पकड़ने का समय हो गया था, या कुछ बच्चों को किसी अन्य कार्य से कहीं और जाना था।

हमने अपनी चर्चा का आरंभ मार्टिन द्वारा उठाई गई आपत्ति से किया, अर्थात 'और' शब्द को व्यक्त करने के लिए कोई चीज नहीं है। डेविड पॉल ने याद दिलाया कि उसने अपने वाक्य में 'और' शब्द का प्रयोग किया था। (वास्तव में कई बच्चों ने अपने वाक्यों में 'और' शब्द का प्रयोग किया था) उसने बताया कि उसने अभिनय करके बता दिया था और वह दूसरे बच्चों के समझ में भी आ गया था।

मैंने कहा, 'तो हम केवल वस्तुओं के उपयोग से बात नहीं कर रहे हैं ?'

उसने सहमत होते हुए कहा, 'नहीं। कुछ अभिनय तो करना ही पड़ेगा।'

इस समय तक डोनाल्ड और डेविड पॉल को छोड़ कर, शेष सब बच्चे घर चले गए थे। कक्षा में हम तीन ही रह गए थे। कुछ समय तक हम तीनों ने चर्चा की।

डोनाल्ड ने संप्रेषण का एक और तरीका सुझाया, जिसमें बोलने की जरूरत न हो। उसने कहा, 'हम जो शब्द कहना चाहते हैं, उसकी ओर उंगली से संकेत कर दें। जैसे....'उसने पुस्तक के पीछे लिखे पुस्तक के परिचय में से 'और' शब्द की ओर संकेत कर दिया। मैंने यह बात मान ली कि यह भी एक तरीका हो सकता है जिसमें हम बोले बिना भाषा का प्रयोग कर सकते हैं।'

डेविड पॉल ने शरारत भरे स्वर में कहा, 'फिर वे लोग कहेंगे कि पढ़ना भी नहीं चाहिए, क्योंकि उससे दिमाग को क्षति पहुंचती है।' वह गुलिवर की पुस्तक में, शब्दों की जगह वस्तुओं के प्रयोग के तर्क को ध्यान में रख कर कह रहा था।

*मैं :* 'तुम यह बताओ कि शब्दों की जगह वस्तुओं के प्रयोग करने का विचार तुम्हें कैसा लगा ?'

*डेविड पॉल :* 'यदि आप ऐसे कहेंगे (और उसने कई वस्तुएं एक के बाद एक उठाई) तो कोई नहीं समझ सकता कि आप क्या कह रहे हैं ?'

*मैं :* 'तुम्हारा मतलब है कि तुम्हें इसके साथ थोड़ा अभिनय करना भी

जरूरी है ?'

*डेविड पॉल :* 'मेरा तो यही खयाल है कि केवल वस्तुओं से सारी बात नहीं समझाई जा सकती।'

*डोनाल्ड :* 'फिर आपको बहुत सारी चीजों की जरूरत होगी ? आपको हजारों चीजें चाहिए ?

इस तरह थोड़ी देर चर्चा करने के बाद, डेविड ने एक उदाहरण हमारे सामने रखा। इस तरह की अमूर्त चर्चाओं में, कल्पना सहित उदाहरण की सहायता लेना, एक बहुत महत्वपूर्ण तरीका है। मैं बहुधा वयस्कों को प्रोत्साहित करता हूं कि वे उदाहरण सोचने की आदत डालें। डेविड पॉल में यह आदत स्वाभाविक रूप से उपस्थित थी।

उसने कहा, 'मान लीजिए आप कहना चाहते हैं, जाओ और रेफ्रीजिरेटर से थोड़ा मक्खन ले आओ। आपको तब खुद चल कर जाना होगा और रेफ्रीजिरेटर से मक्खन निकाल कर दिखाना होगा।'

मैंने सुझाव दिया कि हम खिलौने के रेफ्रीजिरेटर का प्रयोग कर सकते हैं, परंतु मैंने उस समय उन्हें यह नहीं बताया कि खिलौने के उपयोग के अनेक अर्थ लगाए जा सकते हैं। एक अर्थ तो यही है कि वास्तव में हम एक असली रेफ्रीजिरेटर की बात कर रहे हैं, जिसका यह खिलौना केवल एक प्रतीक है। दूसरा यह कि हम वास्तव में एक खिलौने रेफ्रीजिरेटर की ही बात करना चाहते हैं, जिसका यह विशेष खिलौना एक नमूना समझा जाए। इसकी बजाए मैंने उनका ध्यान इस पर लगाया कि किसी को आदेश या आज्ञा देनी हो तो उसे कैसे अभिव्यक्त किया जाएगा।

*मैंने पूछा :* 'तुम बिना अभिनय किए, यह कैसे कह सकोगे कि रेफ्रीजिरेटर के पास जाओ।'

*डेविड पॉल :* 'बिना अभिनय के यह संभव नहीं है। परंतु आप यह कह सकते हैं कि आप खुद रेफ्रीजिरेटर के पास जाएं, उसे खोलें, और मक्खन की ओर संकेत करें। वे तब शायद समझ जाएं।'

*मैं :* 'शायद वे यह समझें कि आप कह रहे हैं—रेफ्रीजिरेटर में मक्खन रखा है।'

डेविड पॉल ने कहा : 'हां' और चुप हो गया। फिर थोड़ी ही देर बाद बोला, 'यदि हमें बचपन से ही इस ढंग से बात करना सिखाया जाए, तो शायद फरक हो सकता है।'





*डोनाल्ड :* 'हां, अगर बोल कर आपस में बातें करना स्वाभाविक न होता और उसकी जगह यह स्वाभाविक होता कि हम वस्तुओं का उपयोग करके और अभिनय करके बातें करते... नहीं अभिनय नहीं, अभिनय तो तुम करना ही नहीं जानते हो—तुम चीजें दिखा कर बातें करते, तो परेशानी तो बहुत होती पर शायद यह संभव हो जाता।

*मैं :* 'एक सादा कथन कहने में और प्रश्न पूछने में कैसे भेद करोगे?'

*डोनाल्ड :* 'यह बहुत मुश्किल होगा।'

*डेविड पॉल :* 'यह बहुत ही ज्यादा कठिन होगा।'

*डोनाल्ड :* 'आप प्रश्न चिह्न दिखा सकते हैं और ऐसी आवाज निकाल सकते हैं—एह ?'

डोनाल्ड का विचार था कि किसी कार्डबोर्ड या प्लास्टिक पर एक प्रश्न चिह्न काट कर रख लिया जाए और जब भी प्रश्न पूछना हो, उस चिह्न को उठा कर दिखा दिया जाए।

डेविड पॉल के चेहरे पर अचानक चमक आ गई। उसने उत्साह से कहा, 'अच्छा आप यह बताइए कि यदि आप यह कहना चाहते हों—इस चर्चा का विषय क्या है, तो आप यह कैसे कहेंगे ? आप इसे नहीं कह सकेंगे क्योंकि इसमें कोई चीज या वास्तविक ठोस पदार्थ है ही नहीं।'

डेविड पॉल ने एक बहुत सही बात उठाई थी। 'चर्चा का विषय क्या है ?' इसे पूछते समय आप किस वस्तु की ओर संकेत करेंगे या किस वस्तु को दिखाएंगे ?

डेविड पॉल ने लंबी सांस ले कर कहा, (और शायद वह डोनाल्ड के विचार भी अभिव्यक्त कर रहा था) 'यह शायद बात करने का बहुत पुराना और आदिकालीन तरीका रहा होगा। आप ये सब सवाल इसमें नहीं पूछ सकते। मेरे खयाल से हम लोग आजकल जैसे रहते हैं, वही सबसे अच्छा तरीका है। इसे बदलना बहुत मुश्किल है।'

अगले हफ्ते मैं एक कहानी लिख कर लाया जिसमें गुलीवर की पुस्तक का यह अंश और पिछले हफ्ते की अधिकांश चर्चा समाविष्ट थी। चूंकि मैं चाहता था कि बच्चे इस विषय पर कुछ और सोचें, अतः मैंने उसमें निम्नलिखित समापन जोड़ दिया था :

फिओना ने सुझाव दिया, 'मुझे तो यही लगता है कि गुलीवर की कहानी एक प्रकार से व्यंग का एक प्रयास है। कहानी का लेखक शायद इस विचार का मखौल बना रहा था कि शब्द, उन चीजों का स्थान लेते हैं, जिनको पुकारने

के लिए उन शब्दों को प्रयोग किया जाता है। मेरे खयाल से वह आपको यह दिखाना चाहता था कि शब्द, केवल चीजों का स्थान नहीं लेते हैं।

फ्रेडी ने मुस्कराते हुए कहा, 'हां, शायद यही ठीक है। मैंने तो इस ढंग से सोचा ही नहीं था।'

पर फ्रेडी का चेहरा फिर से गंभीर हो गया। उसने कहा, 'फिओना, यह बताओ कि शब्द होते क्या हैं ?'

फ्रेडी के इस अंतिम प्रश्न के बाद डैनियल ने जोरों का ठहाका लगाया और फिर से उपहास के लहजे में यह प्रश्न दोहराया, 'शब्द होते क्या हैं ?'

एस्थर ने कहा, 'डेनियल, इसमें इतनी हंसी की क्या बात है ?'

डैनियल का उत्तर था, 'जरा सोचो, कोई कह रहा है 'शब्द क्या है ?''

रिचर्ड ने जनवरी से ही कक्षा में आना शुरू किया था और उसकी आयु नौ साल की थी। उसने कहा, 'डैनियल, बताओ न। शब्द क्या है ?'

कई अन्य बच्चों ने भी डैनियल को यही चुनौती दी। 'डैनियल, तुम बड़े चतुर बनते हो। अब बताओ।'

डैनियल ने कुछ रुक कर कहा, 'भाई, यह बताना जरा मुश्किल है।'

सब बच्चे एक साथ चिल्लाए—'हम पहले ही जानते थे।' सब ओर से घिर जाने पर डैनियल ने यह बताने का प्रयास किया कि शब्द क्या है, 'यह एक विशेषण या ऐसी ही कोई चीज है,' उसने आरंभ किया।

डेविड पॉल ने टोका, 'यह तो शब्द का एक भेद है। यह 'शब्द क्या है,' उसका जवाब नहीं है।' मेरे खयाल से उसका यह तात्पर्य था कि शब्द का एक रूप विशेषण होता है।

फिर कुछ देर तक बच्चों में इधर-उधर की बातचीत हुई। मैं डैनियल को यथासंभव प्रोत्साहित करने की कोशिश कर रहा था। अतः मैंने उससे पूछा कि क्या वह किसी को इस ढंग से समझा जा सकता है जिससे उसे अच्छी तरह समझ में आ जाए कि 'शब्द क्या है ?'

डैनियल ने कहा, 'हां। देखिए... नहीं मैं नहीं जानता।'

मुझे इस समय बड़ा प्रलोभन हो रहा था कि मैं उन्हें एक छोटा-सा भाषण दूं और बताऊं कि जैसे हम लोगों की चर्चा इस मोड़ पर आकर अटक गई है,—यही दर्शनशास्त्र की चर्चाओं की विशिष्टता है। हम अपनी चर्चा का आरंभ एक बहुत साधारण दिखने वाले प्रश्न से करते हैं, 'शब्द क्या है ?' 'समय क्या है ?' 'किसी चीज को जानने के क्या अर्थ होते हैं ?' आदि। यह प्रश्न इतने मौलिक हैं कि आपको इसका उत्तर देना बहुत सरल प्रतीत होगा। परंतु कुछ देर विचार करने के बाद आपको लगेगा कि समझा-कर इसका उत्तर देना





इतना सरल नहीं है। हो सकता है कि उसका उत्तर देना संभव ही न हो। तो क्या कोई यह नहीं जानता कि शब्द क्या होते हैं ? या समय क्या है ? या किसी चीज को जानने का क्या तात्पर्य है ?

मुझे यह सब कहने का बहुत मन कर रहा था पर मैंने अपने पर नियंत्रण रखा। मैंने बस डैनियल से इतना ही कहा, 'इसका उत्तर बहुत कठिन है न ?'

रिचर्ड ने सहमति प्रदर्शित करते हुए कहा, 'हां, बहुत कठिन है। शब्द का आप वर्णन नहीं कर सकते हैं।'

डैनियल बड़ा खुश हुआ कि उसे अपना पीछा छुड़ाने का एक रास्ता मिल गया। 'यही तो मैं भी कह रहा था। शब्द का आप वर्णन नहीं कर सकते!'

रिचर्ड यह जानना चाहता था कि क्या कहानी खत्म हो गई ? मैंने कहा, 'मुझे नहीं मालूम। तुम्हारा क्या खयाल है ?'

रिचर्ड का उत्तर था, 'क्योंकि, फिर हम कुछ देर और इस पर चर्चा कर सकते हैं कि शब्द क्या है।'

मैंने कहा, 'ठीक है। कैसे करोगे ?'

एस्थर ने कहा कि तीन बज कर बीस मिनट हो चुके हैं। कक्षा खत्म होने में केवल दस मिनट बाकी हैं।

मैंने कहा, 'तुम्हारा यह मतलब है कि हम दस मिनट में इस प्रश्न का समाधान नहीं कर सकते कि शब्द क्या है ?'

उसने दृढ़ता से जवाब दिया, 'नहीं।'

मैंने बच्चों को थोड़ा उकसाया और वे तत्काल जोश में आ गए।

*मार्टिन* : 'शब्द स्वाभाविक है। वे स्वतः हमें प्राप्त हुए हैं।'

*डेविड पॉल* : 'शब्द स्वाभाविक नहीं हैं।'

*मार्टिन* : 'यदि शब्द नहीं होते तो हमारी यह बातचीत कैसे होती ?'

*मैं* : 'हम बातचीत नहीं कर सकते थे।'

*डेविड पॉल* : 'शब्द स्वाभाविक नहीं हैं। यदि तुम्हारी मां तुम्हें बातें करना नहीं सिखाती तो तुम अभी तक बा...गा...बा...गा...ही करते रहते।'

*मार्टिन* : 'तुम्हारी मां का बातें करना भी तो स्वाभाविक ही था।'

जहां तक स्वाभाविकता का प्रश्न है (जिस पर इतना जोर दिया जा रहा था) मार्टिन का उत्तर बिलकुल सही था। परंतु डेविड पॉल ने हिम्मत नहीं हारी। उसने कहा, 'मेरी मां को मुझ से बोलना इसलिए स्वाभाविक था क्योंकि उसकी मां ने उसे बोलना सिखाया था। उसकी मां की उसकी मां ने बोलना सिखाया

था। इस तरह यह सिलसिला चलता रहता है, जब तक हम उस काल में नहीं पहुंच जाते, जब शब्द पहले-पहल आरंभ हुए थे जैसे...अ...'

बस फिर क्या था। सारी कक्षा प्रारंभिक ध्वनियां निकालने लगी। मैंने इस शोरगुल में अपनी आवाज तेज करके पूछा : 'तो तुम्हारा क्या खयाल है ? लोगों ने शब्दों का उपयोग शुरू कैसे किया 'मैं चाहता था कि चर्चा थोड़ी देर और चले।'

*डेविड पॉल* : 'उन्हें किसी ऐसी चीज की जरूरत थी जिसे वे दिखा सकें और उन्हें इशारा न करना पड़े।' क्या यह हमें फिर से गुलिवर के सुझाव की ओर ले जा रहा है जिसमें शब्द उन चीज़ों के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं जिनका नाम हम लेना चाहते हैं।

अकस्मात रिचर्ड को यह अंतर्बोध हुआ कि भाषा कैसे शुरू हुई होगी। उसने कहा, 'लोगों ने शब्द कैसे बनाए ? वे शब्दों का आविष्कार तो कर नहीं सकते—वे ऐसा तो कह नहीं सकते देखो हमने कितनी बढ़िया चीज इंजाद की है, अर्थात शब्द।'

मैं उससे पूछना चाहता था कि हम ऐसा क्यों नहीं कह सकते ? क्या इसलिए कि उनके पास यह कहने को शब्द नहीं होंगे ? या इसलिए कि शब्द ऐसी चीज नहीं है जिसका आविष्कार किया जा सके ? या इसलिए कि जब तक शब्दों की धारणा पहले से मौजूद न हो, आप शब्दों के आविष्कार का विचार कैसे कर सकते हैं ?

यद्यपि मैं रिचर्ड के दृष्टिकोण को जानना चाहता था, पर उस समय तक कई बच्चे एक साथ बोलने लगे जिससे कक्षा में गड़बड़ी फैल गई। अतः मैं व्यवस्था स्थापित करने में लग गया। बाद में टेप सुन कर लिखते समय भी, इस स्थान पर बहुत शोर सुनाई दे रहा था और कुछ लिखा नहीं जा सका।

जब अंत में कक्षा कुछ शांत हुई तो रिचर्ड ने कहा, 'शब्दों का आरंभ गड़बड़ाने से हुआ होगा और फिर...मुझे मालूम नहीं...फिर अचानक...'

मेरे खयाल से रिचर्ड यही कहना चाहता था कि जब तक पहले से शब्द मौजूद न हों, आप इस विचार को कि 'शब्द क्या है' सोच ही नहीं सकते। अतः शब्दों का आप आविष्कार नहीं कर सकते, वे तो स्वाभाविक रूप से ही उत्पन्न होने चाहिए।

मार्टिन का भी कुछ ऐसा ही विचार था। उसके अनुसार आप शब्दों के साथ ही पैदा होते हैं। उसने प्रायः नैतिक उपदेश के लहजे में कहा, 'और आपसे अपेक्षा की जाती है कि आप उनका उपयोग करें।'





उसके बाद एक जोश भरी बहस हुई कि कुत्ते या अन्य जानवर, शब्दों का उपयोग करते हैं या नहीं । पहले की चर्चा के आधार पर यही निष्कर्ष निकला कि यदि मनुष्यों के लिए शब्दों की उत्पत्ति स्वाभाविक है तो अन्य जीवों के लिए भी होनी चाहिए।

*मार्टिन* : 'उनके अपने शब्द होते हैं।'
*डेविड पॉल* : 'तुम्हें कैसे मालूम ?'
*इंसे* : 'कुत्ते आखिर क्यों भोंकते है ? क्या केवल यों ही, मस्ती के लिए ?'
*डेविड पॉल* : 'लेकिन वे ऐसी चीजें नहीं बोलते होंगे जैसे...तो....तब.. और....'
*इंसे (और अन्य बच्चे)* : 'हां बोलते हैं।'
*डेविड पॉल* : 'भोंकना तो सभी, एक ही तरह का होता है। उस भोंकने को तुम शब्द नहीं कह सकते।'
*मार्टिन* : 'शायद कुत्ते हम लोगों के बारे में यह सोचते हों कि जो हम बोलते हैं, वे उनकी दृष्टि में शब्द नहीं समझे जाएं।'

मुझे इस समय विटगेंस्टीन* के कथन का ध्यान आया, 'यदि शेर बोल सकता तो हम उसे समझ नहीं सकते।' शायद विटगेंस्टीन का तात्पर्य यह था कि हमारी भाषा का हमारे जीने के ढंग से इतना गहरा संबंध है कि हम किसी भाषा के शब्दों को तभी पहचान सकते हैं यदि उन्हें बोलने वाला जीव, काफी हद तक हमारी तरह का ही जीवन व्यतीत करता हो। यदि दो प्रकार के जीवों के जीने के ढंग में आमूल भिन्नता हो तो उनके द्वारा एक दूसरे के शब्दों को समझने का आधार ही नहीं रह जाएगा। यह बात ध्यान देने योग्य है कि विटगेंस्टीन ने अपनी बात कहने के लिए शेर को चुना, कुत्ते को नहीं। हम लोगों ने अनेक महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों से, कुत्तों को अपने जीवनयापन के ढंग से जोड़ लिया है। मेरे खयाल से हम शेर या चमगादड़ की अपेक्षा, कुत्ते के जीवन को कहीं अधिक समझते हैं।

कुत्ते के भोंकने पर अपने विचार प्रकट करते हुए डेविड पॉल ने कहा, 'भोंकने के द्वारा बहुत भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें कह सकते हैं, मैं थका हुआ हूं। मैं भूखा हूं आदि-आदि। परंतु उसके पास शब्द नहीं होते।' एस्थर ने कहा, 'मेरे पास तीन कुत्ते हैं और वे ऐसे बोलते हैं'—उसने फिर कुत्ते की अनेक

* लुडविग विटगेंस्टीन, जर्मन विचारक.

प्रकार की आवाजों की बड़ी अच्छी नकल की। 'उनके लिए यही शब्द हैं। परंतु हमें पता नहीं चल सकता कि वे कौन से शब्द हैं ?'

अंतिम टिप्पणी डेविड पॉल की थी, 'मैं यह कहने की कोशिश कर रहा हूं कि वे बोलते जरूर हैं—लेकिन शब्दों में नहीं।'

इस समय तक साढ़े तीन बज चुके थे। यह तो ठीक है कि दस मिनट में हम निश्चयपूर्वक इसका समाधान नहीं कर पाए थे कि शब्द क्या है ? परंतु गुलीवर की यात्राओं के एक रोचक विचार-प्रयोग द्वारा उकसाए जाने पर हमने शब्दों और उनसे बनी भाषाओं पर कुछ बहुत ही रोचक बातें कीं। जैसे मेरे एक सहयोगी ने मुझसे बाद में कहा, 'हमने भाषाओं के सिद्धांतों का इतिहास फिर से संक्षेप में दोहरा लिया।'



# 8. समय यात्रा

'एक दिन मार्टिन ने सुझाव दिया कि अगर एक ऐसी कहानी सुनाई जाए जिसमें कुछ रहस्य हो तो मजा आ जाए। मैंने कहा कि मैं कोशिश करूंगा। मैंने सोचा कि समय यात्रा एक ऐसा विषय है, जिसके द्वारा कहानी में रहस्य का पुट लाया जा सकता है। मुझे पूरा विश्वास था कि सभी बच्चों ने जरूर कोई न कोई ऐसी कहानी पढ़ी या सुनी या टी.वी. पर देखी होगी, जिसके पात्र अतीत की या भविष्य की यात्रा करते हैं। इसलिए उनके लिए समय यात्रा की धारणा सुपरिचित होगी। फिर भी यह ऐसी धारणा है जो दर्शन की दृष्टि से बहुत विस्मयकारी है। मेरे विचार से, आजकल अधिकांश सुविज्ञ दार्शनिक यह मान कर चलते हैं कि तार्किक दृष्टि से समय यात्रा संभव नहीं है। यदि वे सही हैं तो किसी से यह पूछना निरर्थक होगा कि क्या उन्होंने कभी अतीत या भविष्य में गमन किया है ? किसी को यह भी बताना बेकार होगा कि अतीत या भविष्य में यात्रा करना कितना कठिन है क्योंकि ऐसी यात्रा तार्किक दृष्टि से असंभव है।

कुछ दार्शनिकों ने वास्तव में बड़े परिश्रम से ऐसे तर्क जुटाए हैं जिनसे यह प्रमाणित किया जा सके कि समय यात्रा का विचार, तर्क की दृष्टि से असंगत है। परंतु उनके प्रयास जिस तथ्य को प्रमाणित करना चाहते हैं, उसे दार्शनिक पहले से ही मानते हैं और अभी तक कोई ऐसा दार्शनिक नहीं हुआ है जिसने समय यात्रा को असंभव प्रमाणित करने वाले तर्कों का खंडन करने की कोशिश नहीं की है। अंततः कथा साहित्य के लेखकों ने, तर्क और अवधारणा की इन बाधाओं की परवाह न करते हुए समय यात्रा का प्रयोग यथासंभव किया है।

परंतु एक अपवाद अवश्य है। बीसवीं सदी के सबसे बड़े तर्कशास्त्री, कर्ट गोडेल ने एक बार समय यात्रा के लिए आवश्यक वस्तुओं का, एक फार्मूला के आधार पर हिसाब लगाया था। गोडेल का कहना था कि यद्यपि समय यात्रा की अवधारण में कई विरोधाभास हैं (जैसे एक व्यक्ति यदि निकट भूतकाल में यात्रा कर रहा हो तो हो सकता है कि वह उन स्थानों पर पहुंच जाए जहां

वह स्वयं पहले रहा करता था और अपने ही कुछ वर्ष पुराने रूप से मिले ...संभव है वह उसके साथ कुछ ऐसा कार्य करे जो उसकी याददाश्त के अनुसार वह जानता है कि उसके साथ नहीं हुआ है) फिर भी, हम केवल तर्क के आधार पर इस प्रकार की संभावना को नकार नहीं सकते। यदि हमारी सदी का सबसे बड़ा तर्कशास्त्री इस विचार को हास्यास्पद नहीं समझता है, तो कोई कारण नहीं कि हम भी इस पर गंभीरता से विचार न करें।

ऐसा सोचते हुए मार्टिन के अनुरोध पर ध्यान देते हुए, मैंने एक रहस्यमई कहानी बनाई, जिसका शीर्षक था, 'सफेद दरवाजा।' वह इस प्रकार आरंभ होती है :

फ्रेडी और एंगस, अंधेरे गलियारे में घुसे। जिस बड़े दरवाजे से वे अंदर घुसे थे, वह धड़ाक से बंद हो गया। उन्होंने ताले में चाभी के घूमने की आवाज सुनी।

एंगस ने घबड़ा कर कहा, 'फ्रेडी, मुझे ऐसा लगता है कि हम लोग बंद हो गए हैं।'

फ्रेडी ने संदेह व्यक्त किया, 'इसके दूसरे छोर पर जरूर बाहर जाने को कोई रास्ता होगा।'

गलियारे में रोशनी बहुत कम थी। दोनों लड़के उसमें डरते-डरते आगे बढ़ने लगे। रास्ते में उन्होंने देखा कि गलियारे में एक ओर एक विशाल लोहे का सफेद दरवाजा है जिसमें एक बहुत बड़ा नंबर घुमाने वाला ताला लगा हुआ है। दरवाजे पर लाल रंग के बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था : 'बहुत खतरनाक, दूर रहें।' उसके नीचे छोटे काले अक्षरों में लिखा था 'एम. ओ. डी. (मॉड) समय परियोजना'।

फ्रेडी ने धीरे से फुसफुसाते हुए पूछा, 'इसके अंदर क्या हो सकता है ?'

एंगस ने उत्तर दिया, 'पता नहीं। पर समय परियोजना में ऐसी क्या खतरे की बात हो सकती है ?'

फ्रेडी बोला, 'चलो, यहां से जल्दी से बाहर निकल चलें।'

दोनों लड़के जल्दी-जल्दी आगे बढ़े। जैसे ही वे गलियारे के छोर पर पहुंचे, उन्हें नीली वर्दी पहने हुए एक आदमी मिला जो चाभियों का गुच्छा लिए हुए था। ऐसा लग रहा था कि वह रात में इमारत बंद कर रहा था। उसने इन दोनों को देख कर नाराज होते हुए कहा, 'तुम दोनों लड़के यहां क्या कर रहे हो ?'

'हम अपनी बहन फिओना से मिलने आए है', एंगस ने स्पष्टीकरण देते हुए कहा, 'वह विज्ञान पुस्तकालय में काम करती है।'





उस आदमी ने कहा, 'तुम गलत इमारत में आ गए हो। तुम्हें इसकी बगल वाली इमारत में जाना चाहिए। यह तो व्यावहारिक भौतिक विज्ञान की प्रयोगशाला है।'

'धन्यवाद,' एंगस ने कहा। उसने चैन की सांस ली कि अब इस डरावनी जगह से छुटकारा मिलेगा।

वे दोनों बाहर की ओर जाने लगे पर फ्रेडी ने बड़ी हिम्मत करके चौकीदार से पूछा, 'सर, उस कमरे में क्या है जिसके सफेद दरवाजे पर लिखा है, बहुत खतरनाक।'

चौकीदार ने हंसते हुए कहा, 'अरे वह ? वहां मत जाना नहीं तो तुम्हारे मां-बाप को तुम्हारा पता ही नहीं चलेगा।'

फ्रेडी ने पूछा, 'क्यों ?'

चौकीदार तब गंभीर हो गया । उसने झुक कर धीमी आवाज में कहा, 'यहां पर प्रयोग के लिए एक समय मशीन रखी है। यदि तुम उसके अंदर जा कर उस मशीन की ठीक तरह सुइयां घुमा दो तो तुम 1982 में न रह कर 1882 में या 1915 में या किसी अन्य समय में चले जाओगे।'

'बाप रे' फ्रेडी बोला, 'सचमुच ?'

चौकीदार ने कहा, 'बेहतर यही है कि तुम अब विज्ञान पुस्तकालय चले जाओ। यहां पर समय-मशीन से खड़बड़ मत करना—समझे ?'

फ्रेडी ने चौकीदार को धन्यवाद दिया और एंगस के साथ वह बगल वाली इमारत की ओर चल पड़ा।

जब विज्ञान पुस्तकालय में उन्हें एलिस और फिओना मिलीं तो फ्रेडी और एंगस ने बड़े उत्तेजित हो कर उन्हें अपनी खोज के बारे में बताया। एलिस ने समय यात्रा की अवधारणा का मखौल बनाया।

'समय मशीन।' उसने हंसते हुए कहा, 'भाई वाह ! और तुम लोगों ने उस चौकीदार की बात पर विश्वास कर लिया ?'

फ्रेडी को गुस्सा आने लगा, 'तुम तो यही सोचती हो कि तुम्हीं सब जानती-समझती हो। मजा तो तब आए जब तुम समय मशीन में फंस जाओ और ... 1782 में पहुंच जाओ। तब मेरी बारी होगी हंसने की।'

'यह असंभव है,' एलिस ने शांतिपूर्वक कहा, 'अगर तुम जरा सी भी अकल लगाओ, तो तुम खुद ही समझ जाओगे कि ऐसा नहीं हो सकता है। मान लो कि मैं 1782 में चली जाऊं तो उस समय भी मैं 18 वर्ष की रहूंगी। अर्थात मेरा जन्म 1764 में हुआ होगा। पर मेरा जन्म तो 1964 में हुआ है। अतः यह कैसे हो सकता है कि वही व्यक्ति 1964 में भी पैदा हुआ हो और 200

वर्ष पहले भी। इसलिए उस सफेद दरवाजे के अंदर चाहे कुछ भी हो, पर वह समय मशीन नहीं हो सकती। तुम्हें वहां जाकर देखने की भी कोई जरूरत नहीं है। यह तो सोचने से ही पता चल जाएगा। चौकीदार तुम्हें बुद्धू बना रहा था।'

फ्रेडी का गुस्सा बढ़ता जा रहा था। उसकी बड़ी बहन अपने को न जाने क्या समझती है। वह बहुत ही घमंडी है। परंतु कुछ शांत होने के बाद उसने अपनी बहन की बात पर सोचना शुरू किया। क्या वह ठीक कह रही थी क्या यह सच है कि हम बिना देखे ही यह बात निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि 'सफेद दरवाजे' के पीछे कोई समय मशीन नहीं हो सकती ? वहां पर जो 'समय परियोजना' लिखा हुआ है, उसका कोई अन्य अर्थ होगा, पर उसका यह अर्थ नहीं है कि यहां समय के पार यात्रा की जा सकती है। पर इसके पहले हमें यह मानना पड़ेगा कि समय यात्रा असंभव है। पर क्या हमें पक्का मालूम है कि समय यात्रा असंभव है ? क्या किसी तरीके से यह संभव हो सकती है जिसका विचार चतुर एलिस के भी दिमाग में न आया हो ?

संयोग से, जिस दिन मैं कहानी का यह प्रारंभ लेकर कक्षा में आया, उसी दिन नगर में ड्यूक आफ एडिनबरा आए हुए थे। मार्टिन तथा कक्षा के कई अन्य विद्यार्थी, जो चर्च की गायक मंडली में थे, ड्यूक आफ एडिनबरा के सामने गाने के लिए एक स्थानीय होटल में भेजे गए थे। अतः कक्षा में बच्चों की संख्या कम रह गई थी। जो बच्चे उपस्थित थे, उन्हें भी ड्यूक आफ एडिनबरा के उत्सव में न जाने का थोड़ा अफसोस हो रहा था। अतः मेरी आशा के अनुसार चर्चा न हो सकी।

फिर भी हमने प्रयास किया। एस्थर ने पहल की।

> *मैं :* 'एलिस के तर्क के बारे में तुम क्या सोचती हो ?'
> *एस्थर :* 'वह क्या जानती है ?... उन्हें चाहिए कि एलिस और फिओना को ले जाकर उस सफेद दरवाजे के अंदर ढकेल दें। तब उसे पता चलेगा।'

साफ लग रहा था कि एस्थर को एलिस बिलकुल अच्छी नहीं लगती है। उसने कहा, 'एलिस यही सोचती है कि हमेशा वही सही है। लेकिन असल में आधे समय उसकी बात गलत होती है।'

पर इस बार ?

एस्थर के अनुसार इस बार भी वह गलत है। थोड़ी देर बात करने पर हमें समझ में आ गया कि एस्थर को समय यात्रा के साहित्य में बहुत दिलचस्पी





है और इसीलिए वह एलिस की बात को ठीक नहीं मानती। एस्थर की राय में एलिस के तर्क का एक ही जवाब था कि एलिस को जबरदस्ती समय मशीन में झोंक दिया जाए। तभी उसे पता चलेगा कि उसका निष्कर्ष गलत है।

मैंने एस्थर तथा बच्चों से एलिस के तर्क पर और विस्तृत बातचीत की। मैंने उनसे इस बात पर उनकी राय पूछी, 'क्या एक व्यक्ति दो बार जन्म ले सकता है ?' (यदि समय यात्रा संभव है तो एक व्यक्ति को दो बार जन्म लेना होगा। चूंकि एक व्यक्ति दो बार पैदा नहीं हो सकता, अतः समय यात्रा संभव नहीं है।) नील, डैनियल और इंसे का कहना था कि एक व्यक्ति दो बार जन्म नहीं ले सकता है। परंतु एस्थर ने कहा, 'हां, ले सकता है।'

> *एस्थर :* 'हो सकता है कि हम पहले भी कभी पैदा हुए हों पर हमें उसके बारे में मालूम नहीं है। हो सकता है हमने विक्टोरिया के काल में जन्म लिया हो। हम कहते हैं कि यीशु मसीह फिर से आने वाले हैं। अतः हो सकता है कि यीशु मसीह दुबारा जन्म लें। कौन जानता है ?'

चर्चा में थोड़ी देर बाद जब मैंने बच्चों से कहा कि यदि हम यह कल्पना करें कि हमारे पास एक ऐसी मशीन है जो हमें 1940 के काल में ले जा सकती हैं, तो डैनियल ने उसका बड़ा अच्छा उत्तर दिया :

> *डैनियल :* 'जी हां, वह आपको 1940 के काल में तो ले जाएगी पर यह बताइए कि 1940 कितने मील दूर है ?

आप शायद डेनियल के प्रश्न से यह समझें कि वह इस प्रकार समय यात्रा के विचार को अस्वीकार कर रहा था, उसका मखौल बना रहा था। परंतु मैंने गोडल के जिन विचारों का पहले उल्लेख किया है और जो आईंस्टाइन के सापेक्षवाद के सिद्धांत पर आधारित हैं, वे यही संकेत करते हैं कि हो सकता है कि कुछ संभावित संसारों में डैनियल के प्रश्न का स्पष्ट सटीक उत्तर मिल सके।...(यदि हम राकेट चालित यान पर बैठ कर इन संसारों के चारों ओर काफी बड़ी गोलाई में चक्कर लगाएं तो हो सकता है कि हम इन संसारों में अतीत, वर्तमान या भविष्य के किसी भी क्षेत्र में जाकर वापस आ सकें। यह वैसे ही संभव होगा जैसे अन्य संसारों से अंतरिक्ष के सुदूर भागों में यात्रा की जा सकती है।) मैं सोचता रहा पर अपनी चर्चा में सापेक्षवाद के सिद्धांत को प्रस्तुत करने का विचार मैंने त्याग दिया।

उस दिन की चर्चा से जो मुख्य बात उभर कर आई थी, वह एस्थर का

यह सुझाव था कि पुनर्जन्म असंभव नहीं है और इसलिए एलिस का तर्क लागू नहीं होता है। मैंने अपनी कहानी को आगे बढ़ाते हुए इस प्रसंग को इस प्रकार उसमें जोड़ा।

फ्रेडी और एंगस ने रात में घर लौटते समय एलिस के कथन पर बातचीत की।

एंगस ने कहा, 'वह जानती तो है नहीं। यदि किसी तरह हम लोग एलिस और फिओना को उस 'सफेद दरवाजे' के अंदर ढकेल दें।'

फ्रेडी थोड़ा हिचकिचाया। उसने कहा, 'शायद वह यह जानती है कि समय यात्रा असंभव है। अगर वह यह जानती है तो उसे यह भी मालूम होगा कि सफेद दरवाजे के पीछे चाहे जो कुछ भी हो, पर वह कारगर समय मशीन नहीं हो सकती। अतः यदि हम उसे उस कमरे में ढकेल भी दें, तो और जो कुछ भी हो, वह सचमुच में अतीत में नहीं जाएगी।'

एंगस ने फिर भी एलिस के विरुद्ध अपनी बात जारी रखी। उसने कहा, 'उसका तर्क भी क्या कोई अच्छा तर्क है ? यह भी कोई बात हुई कि कोई व्यक्ति 1984 में पैदा हुआ हो और 200 साल पहले भी पैदा हुआ हो।'

फ्रेडी ने सहमत होते हुए कहा, 'हां, उसने उदाहरण तो यही दिया था। पर जरा सोचो। क्या हम पक्की तरह जानते हैं कि यह असंभव है ? उसे क्या कहते हैं...? हां पुनर्जन्म। क्या पुनर्जन्म नहीं होता ?'

फिर तो फ्रेडी उत्साह से बोलता गया, 'हम कितनी बार ऐसी कहानियां सुनते हैं जिनमें कोई व्यक्ति दुबारा संसार में जन्म लेता है। मैंने एक बार टी. वी. पर भी इसके बारे में कुछ देखा था।'

एंगेस ने कहा, 'हां मैंने भी देखा था। याद है ? हम लोगों ने इसके बारे में चर्चा भी की थी। कोई आदमी था जिसका कहना था कि वह बहुत प्राचीन काल में रहता था और फिर वह एक लड़ाई में मारा गया था।'

फ्रेडी ने यह माना कि 'कुछ लोग इन बातों को नहीं मानते। वे कहते हैं कि ये सब मनगढ़ंत कहानियां है। परंतु यह असंभव तो नहीं है ? यदि यह असंभव नहीं है तो एलिस का यह कहना भी गलत है कि व्यक्ति जो 1964 में पैदा हुआ हो, 200 वर्ष पहले पैदा नहीं हो सकता। क्या पता ऐसा होता हो ? हम नहीं जानते। परंतु यदि यह असंभव नहीं है तो समय यात्रा भी असंभव नहीं है।

एंगेस ने उसका साथ देते हुए कहा, 'मैं तो यही चाहता हूं कि तर्क में जीत तुम्हारी हो। परंतु एलिस का क्या पता। वह कोई और तर्क ढूंढ लेगी और सिद्ध कर देगी कि समय यात्रा असंभव है। वास्तव में असंभव तो एलिस





से तर्क में जीतना है। मेरा तो मन करता है कि उस दरवाजे के अंदर जाऊं।'

फ्रेडी ने कहा, 'हां, बड़ा मजा आएगा। पर मान लो हम लोग सचमुच में ही अतीत में चले जाएं ? तब तो बड़ी मुसीबत खड़ी हो जाएगी।' फ्रेडी सोच कर ही सिहर उठा। उसने धीरे से कहा, 'मुझे तो सोच कर ही डर लग रहा है।'

उसके बाद ही क्रिसमस की छुट्टियां आ गई, और काफी समय बाद यह मौका आया कि हम फिर से समय यात्रा और सफेद दरवाजे की चर्चा करें। यद्यपि मैंने जनवरी में ही आगे की कहानी तैयार कर ली थी पर मैंने सोचा कि मैं पहले 'पनीर और घास' की कहानी से शुरू करूं। अतः जब हम लोग फिर से समय यात्रा की कहानी पर लौटे तो मार्च का महीना आ गया था। जब पहले कहानी का आरंभ किया गया था तो कुछ लड़के जो चर्च की संगीत मंडली में थे, कक्षा में नहीं थे, अतः उनके लिए यह विषय नया था। इनमें मार्टिन भी था जिसकी फरमाइश पर यह रहस्यमई कहानी बनाई गई थी। रिचर्ड भी जनवरी में आया था।

मेरी आगे की कहानी पर बड़ी उत्साहपूर्ण प्रतिक्रिया हुई। दुर्भाग्य से कक्षा के दौरान मेरे टेप रिकार्डर की बैटरी कमजोर हो गई और घर जा कर मुझे पता चला कि इस अत्यंत बहुमूल्य चर्चा का मेरे पास कोई रिकार्ड नहीं है। मुझे बड़ी निराशा हुई। मैने भरसक प्रयास तो अवश्य किया कि मैं उस चर्चा की मुख्य बातों को लिख लूं, परंतु मैं अपने पिछले अनुभवों से यह जानता था कि मेरी याददाश्त बहुत अच्छी नहीं है और जो कुछ मैंने लिखा है वह मूल चर्चा की एक अपूर्ण रूपरेखा होगी।

चर्चा के शुरू में डेविड पॉल ने समय यात्रा की संभावना पर अपना संदेह व्यक्त किया। डोनाल्ड ने समय यात्रा की अवधारणा का समर्थन करने में एस्थर का साथ दिया। उसने कहा कि जब तक टेलीफोन का आविष्कार नहीं हुआ था, कोई यह नहीं सोच सकता था कि हजारों मील दूर रहने वाले व्यक्ति से बात की जा सकती है। जैसे दूर रहने वाले व्यक्ति से बातचीत को असंभव समझना तर्क-शून्य था, ऐसे ही समय यात्रा को असंभव समझना भी असंगत है।

यह उपमा बहुत उपयुक्त थी। रेडियो और टेलीफोन के आविष्कार के पहले, हजारों मील दूर रहने वाले व्यक्ति से बातचीत करना केवल शारीरिक रूप से ही नहीं, तार्किक दृष्टि में भी असंभव था। हमारा यही तर्क था कि जो बात हमारी श्रमण सीमा से बाहर हो, उसे सुनना असंभव है। निःसंदेह आज हम यह कह सकते हैं कि श्रमण सीमा नहीं है, वरन 'बाह्य सहायता प्राप्त श्रमण

सीमा' से परे के अर्थ केवल 'स्वाभाविक या बिना बाह्य सहायता प्राप्त श्रवण सीमा' से परे है। मैं कह नहीं सकता कि इस प्रकार दोनों अर्थों में भेद करना उचित है या नहीं। पर रेडिया और टेलीविजन के आविष्कार के पहले इस प्रकार के पृथक्करण की बात कोई सोच भी नहीं सकता था। शायद इसी तरह हो सकता है कि कोई ऐसी तरकीब निकल आए जिससे समय यात्रा में जो आज असंगतियां दिखाई देती हैं, उनका समाधान हो जाए।

डोनाल्ड ने दृष्टांत तो सही दिया था, पर उसकी पुष्टि में उसने विशेष कुछ नहीं कहा। उसने एक बात और कही। उसने कहा, 'जो लोग समय यात्रा में विश्वास नहीं करते, वे कहते हैं, यह यात्रा कैसे की जा सकती है ?' परंतु यही बात सुदूर बातचीत के लिए आज भी पूछी जा सकती है। हम में से अधिकांश यह नहीं समझा सकते कि सुदूर बातचीत कैसे होती है ? रेडियो और विशेष रूप से टेलीविजन, हमें जादू ही प्रतीत होते हैं यद्यपि हम उन्हें बचपन से देख रहे हैं।

चर्चा के दौरान मार्टिन ने भी अपना संदेह व्यक्त किया। उसने कहा कि समय यात्रा तभी संभव हो सकती है जब पूरी दुनिया ही अतीत में चली जाए। (रिचर्ड ने कहा कि उसने 'सुपरमैन' का सिनेमा देखा है जिसका नायक दुनिया के समय को उलटा चला देता है और इस तरह वह बीते हुए समय में पहुंच जाता है, अर्थात समय आगे की ओर न बढ़ कर पीछे की ओर चलने लगता है। कुछ समय बाद वह फिर से समय को आगे की ओर चला देता है।)

मार्टिन के पास एक और तर्क था। उसने कहा कि मान लीजिए कि स्कूल के बाहर एक समय मशीन रखी है, मान लीजिए कि वह मशीन किसी को, जैसे फ्रेडी को 1615 में ले जा सकती है। (मार्टिन ने 1615 की तारीख इसलिए चुनी क्योंकि उस स्कूल के सबसे प्राचीन भाग का निर्माण 1615 में हुआ था जैसा वहां के दरवाजे के ऊपर लगे पत्थर से पता चलता था) मार्टिन ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'मान लीजिए कि फ्रेडी अतीत में जाकर, स्कूल को बनते हुए देखना चाहता है। तब वह कहां होगा ?'

मार्टिन यह दिखाने का प्रयास कर रहा था कि यदि पूरी दुनिया अतीत में नहीं जाए और केवल कुछ ही लोग जाएं, तो यह विचार कितना असंगत होगा। मैं पूरी तरह नहीं जानता कि कक्षा में चर्चा के दौरान यह बात कितनी स्पष्ट हो पाई कि इसमें असंगति क्या है। मेरे पास टेपरिकार्डर भी नहीं था अतः जो कुछ मैंने बाद में लिखा, वह इस प्रकार था :

1. यदि यह संभव हो कि फ्रेडी अकेले अतीत में जाए, तो उसे अतीत की यात्रा में कुछ समय लगेगा।





2. यदि जिस समय फ्रेडी अतीत में जा रहा है तो उस समय क्या इस प्रश्न का सही उत्तर दिया जा सकता है कि 'वह अभी कहां है ?'
3. उसकी यात्रा के दौरान इस प्रश्न का कि 'वह अभी कहां है ?' कोई समुचित उत्तर नहीं हो सकता।

और इसलिए

4. फ्रेडी अकेला, अलग से, अतीत में नहीं जा सकता। इसी तर्क का और व्यापक प्रयोग करते हुए हम यह कह सकते है कि :
5. कोई एक व्यक्ति अलग से अतीत में नहीं जा सकता।

स्पष्ट है कि (3) के समर्थन में कोई तर्क चाहिए। ऐसा लगता है कि मार्टिन के अनुसार यदि हम यह उत्तर दें कि 'वह उस समय यंत्र में बैठा हुआ है' तो यह समुचित उत्तर नहीं होगा। क्योंकि ऐसा कहने से हम यह स्वीकार करते हैं कि वह अभी—अर्थात 1983 में है। परंतु यदि हम यह कहते हैं कि वह 1615 में है, तो वह भी सही नहीं हो सकता। अंत में यदि हम कहें कि 'वह कहीं नहीं', तो मार्टिन के अनुसार वह भी सही नहीं होगा, क्योंकि यदि वह कहीं नहीं है तो वह अतीत की यात्रा भी नहीं कर रहा है।

मुझे यह तर्क बड़ा आकर्षक लगा। शायद समय के दर्शन पर जो वृहत साहित्य लिखा गया है, उसमें कुछ इसी प्रकार का तर्क मिले, परंतु मुझे उसके बारे में कुछ नहीं मालूम। मुझे तो यह एक नवीन और बड़ा आकर्षक तर्क लगा। यह कितना सही है और कितना गलत है, यह तो बाद में मालूम होगा।

अगले सप्ताह मैं कहानी का यह अंश लिख कर लाया जिसमें मार्टिन का तर्क भी शामिल किया गया था।

'फिओना और एलिस विज्ञान पुस्तकालय की ओर जाने के लिए सड़क पर चली जा रही थीं। एलिस की मां ने उन्हें बहुत जरूरी काम से भेजा था। उन्हें फ्रेडी और एंगस का पता लगाना था।

फ्रेडी ने अपने कमरे में एक पत्र लिखकर छोड़ दिया था।

प्रिय मम्मी व पापा,

एंगस और मैं, समय मशीन के अंदर जाने के लिए विज्ञान भवन जा रहे हैं। यदि हम अतीत में जाने में सफल हो गए तो शायद हम चाय के समय तक घर नहीं पहुंच पाएं। पर आप चिंता न कीजिएगा। हम वचन देते हैं कि हम जरूर लौट आएंगे।

बहुत बहुत प्यार
फ्रेडी

जब फ्रेडी की मां ने यह चिट्ठी पढ़ी तो घबड़ाहट के मारे उसके हाथपांव कांपने लगे। कुछ संभलने पर उन्होंने, इन दोनों लड़कों को ढूंढने के लिए, एलिस और फिओना को विज्ञान भवन भेजा। उसके बाद उन्होंने पुलिस को खबर दी।

दोनों लड़कियां विज्ञान भवन की ओर तेजी से जा रही थीं। रास्ते में एलिस बराबर तर्कों द्वारा यह सिद्ध कर रही थी कि फ्रेडी और एंगस चाहे जहां भी हों, वे बीते हुए समय में नहीं जा सकते। परंतु फिओना को उसकी बात का विश्वास नहीं हो रहा था। 'कुछ कहा नहीं जा सकता' उसने एलिस से कहा।

एलिस ने कहा, 'पर समय यात्रा असंभव है।'

फिओना बोली, 'अगर टेलीफोन के आविष्कार के पहले किसी ने तुमसे कहा होता कि तुम हजारों मील दूर रहने वाले व्यक्ति से बात कर सकती हो, तो तुम उसे असंभव ही मानतीं। परंतु आज चारों ओर यही हो रहा है। माना कि हम यह नहीं जानते कि कोई बीते हुए समय में कैसे जा सकता है, परंतु इसके यह अर्थ तो नहीं कि यह असंभव है ? शायद दूर देश में टेलीफोन करने से अधिक असंभव न हो।'

एलिस, अपनी बात पर अड़ी रही। 'समय यात्रा का एक ही तरीका हो सकता है, और वह है पूरे संसार द्वारा समय में यात्रा करना', उसने कहा।

फिओना, 'तुमने जरूर 'सुपरमैन' देखा होगा।

एलिस, 'मैं मजाक नहीं कर रही हूं। मान लो कि विज्ञान भवन में उस विशाल सफेद दरवाजे के भीतर सचमुच में समय मशीन है। हम यह भी मान लें कि फ्रेडी और एंगस उसमें किसी तरह से घुस गए। मान लो, उन्होंने सुई को 200 साल पहले—अर्थात 1783 में घुमा दिया और मशीन में से घर्र-घर्र आवाज आवाज आने के बाद नियंत्रण खंड से आवाज आई कि वे 1783 में पहुंच गए हैं, तो मुझे बताओ कि वे अभी कहां होंगे ?'

फिओना—'1783 में होंगे। और कहां हो सकते हैं ?'

एलिस ने कहा, 'नहीं, वे अभी 1783 में नहीं हो सकते। यदि वे कभी 1783 में रहे होंगे तो वे 200 साल पहले वहां होंगे, अभी 1983 में नहीं।'

फिओना थोड़ा चकराई। उसने कहा, 'शायद वे कहीं भी न हों।'

एलिस ने उत्तर दिया, 'यदि वे कहीं नहीं हैं, तो वे समय यात्रा भी नहीं कर रहे होंगे।'

फिओना ने तीसरी बार प्रयास किया, 'मेरे खयाल से वे विज्ञान भवन के उस सफेद दरवाजे के अंदर होंगे।'

एलिस ने विजय भरी मुस्कान से कहा, 'फिर तो वे 1983 में ही होंगे। वास्तव में वे कहां होंगे, इसका कोई ठीक उत्तर है ही नहीं। अतः यह सारी





बात ही असंभव है। हां, अगर सारा संसार ही अतीत में चला जाए तो बात अलग है। तब हमारी माताओं को उनकी चिंता करने की जरूरत नहीं रहेगी। जिस समय में वे होंगे, उसी समय में हम सब भी होंगे।'

मैंने अपनी कक्षा के बच्चों से पूछा कि 'पिछली बार की चर्चा की मुख्य बातें क्या इस कहानी में आ गई हैं ?' सभी ने कहा कि 'हां, वे सब बातें इसमें सम्मिलित हैं।' हमने फिर थोड़ी देर इस पर बातचीत की कि कहानी का अंत कैसे किया जाए।

मार्टिन का सुझाव था कि उनके सफेद दरवाजा खोलने पर उन्हें उसमें एक घड़ी मिले।

रिचर्ड ने कहा, 'हां'—बिजली से चलनेवाली एक घड़ी।'

*मार्टिन :* आखिर दरवाजे के बाहर यही तो लिखा था, 'समय परियोजना'।

*मैं :* 'तो क्या कहानी को इसी ढंग से समाप्त करना चाहिए ?'

*मार्टिन :* 'मैं नहीं जानता।'

*नील :* 'वह सब एक स्वप्न था।'

*इंसे :* 'नहीं, क्योंकि वे स्वप्न में भी यही तर्क कर सकते हैं।'

मैंने इंसे की टिप्पणी का कोई प्रत्यक्ष उत्तर नहीं दिया परंतु मुझे उसकी बात से बहुत खुशी हुई। यदि कोई तर्क रोचक और विचार करने लायक हो और जिसका निर्धारण कठिन हो, तो इससे कोई फरक नहीं पड़ता कि वह सपने में आया था या किसी कहानी में या किसी दर्शन की पुस्तक में।

कक्षा में फिर विचार-विमर्श ने दूसरा मोड़ लिया। दो सौ वर्ष पुराने समय के लोगों के लिए, उनके भविष्य से आए हुए वे यात्री क्या समय की दृष्टि से तर्कसंगत हैं ?

बच्चों का खयाल था कि इसके पक्ष में तर्क संभव है।

*डेविड पॉल :* उस समय की एक कहानी शायद हमें सुनने को मिले कि कोई उड़न तश्तरी यहां आई थी। उसमें से कुछ विचित्र जन निकले। लोगों ने शायद यह कहानी अपने बच्चों को कही, '1783 में एक समय एक अंतारेक्ष यान नीचे उतरा था...' परंतु यह घटना अब की नहीं होगी—यह उस समय हुई होगी।'

तब डोनाल्ड ने एक समय यात्रा की कहानी सुनाई।

*डेविड पॉल :* 'यदि आप समय में पीछे की ओर जाते हैं तो आपको

इतिहास का एक अंग बनना पड़ेगा। अगर आप इतिहास का एक अंग नहीं बनते हैं तो उसका यही तरीका है कि आप अदृश्य रहेंगे। आप वहां खड़े रहेंगे पर आपको कोई देख नहीं सकेगा।'

अतः ऐसा प्रतीत हुआ कि बीते हुए समय की दृष्टि से समय यात्रा दो प्रकार से तर्कसंगत हो सकती है। एक तो यह समझ लेना कि ये घटनाएं पहले घट चुकी हैं और आज वर्तमान के लोग उस गुजरे हुए समय में गए थे। दूसरा यह है कि वर्तमान से अतीत में गए लोग अदृश्य बने रहे थे। और उन्होंने उस समय कोई क्रिया-कलाप नहीं किया।

मैंने कहानी का अंत इस प्रकार किया :

उसी समय एलिस को दूर से दो व्यक्ति अपनी ओर आते दिखाई दिए। उसने पहचान लिया कि वे फ्रेडी और एंगस हैं।

एलिस बोली, 'देखो, कौन हमारी तरफ आ रहा है ? अरे ये तो फ्रेडी और एंगस हैं।'

एलिस को समझ में नहीं आ रहा था कि उन्हें सही सलामत देख कर खुश हो या उन्हें डांट लगाए कि उनके कारण सब लोग कितने परेशान हुए या ऐसा दिखाए कि किसी को उनकी परवाह ही नहीं है।

उसने धीरे से फिओना से पूछा, 'हम लोगों को क्या करना चाहिए ? क्या हम उन्हें बताएं कि उन्हें देख कर हमें कितनी राहत मिली है या गुस्सा हो या क्या करें ?' लड़के अभी काफी दूरी पर थे और उसने यह जाहिर नहीं होने दिया कि वह उन्हें पहचान गई है।

फिओना ने कहा, 'चलो हम उन्हें चल कर बताएं कि उन्हें देख कर हमें कितनी खुशी हुई है।' और उसने उसी समय लड़कों की ओर देख कर अपना हाथ हिलाना शुरू कर दिया।

परंतु एलिस ने कहा, 'हमें खुशी किस बात की हो रही है ? मैंने तो तर्क द्वारा पहले ही सिद्ध कर दिया था कि समय यात्रा असंभव है। अतः चिंता की कोई बात थी ही नहीं।'

फिओना, 'चलो, मान लिया कि तुमने बहुत रोचक तर्क दिए थे पर मुझे तो अपने भाई का सही सलामत लौट आना कहीं अधिक समझ में आता है। मुझे अपनी आंखों से उसे 1983 में सुरक्षित देख कर बहुत ही खुशी हो रही है।'

अब तक दोनों लड़के पास आ गए थे। साफ पता चल रहा था कि वे बहुत खुश नहीं हैं।





'क्या हुआ ?' फिओना ने उत्सुकता से पूछा।

'कुछ नहीं,' एंगस ने दुखी स्वर में कहा। पर वे इसके बाद और कुछ नहीं बोले।

जब वे घर के पास पहुंच गए तो फ्रेडी ने बड़ी उदासी से कहा, 'उस समय परियोजना में कोई समय-मशीन नहीं थी। वहां पर तो बिजली की घड़ी से कोई प्रयोग हो रहा था। जिस चौकीदार ने हम लोगों से कहा था कि सफेद दरवाजे के पीछे एक समय मशीन रखी हुई है, वह झूठा और बदमाश है।'

फिओना ने कहा, 'यह तो बहुत दुख की बात है कि चौकीदार एक बदमाश आदमी है। पर मुझे तो इस बात की खुशी है कि तुम यहां 1983 में हम लोगों के साथ सुरक्षित हो।'

एलिस ने विरोध किया, 'फिओना, वे जा कहां सकते थे। समय-यात्रा यदि संभव होती...'

'चुप भी रहो' फिओना ने अस्वाभाविक गुस्से से कहा।

# 9. आचार शास्त्र

आएन (छहः वर्ष) को इस बात से बहुत खीझ हुई कि उसके माता-पिता के मित्रों के तीनों बच्चों ने टेलीविजन पर दखल कर लिया और वह अपना सबसे प्रिय कार्यक्रम 'मां' नहीं देख सका। उसने बड़ी नाराजगी से अपनी मां से पूछा कि तीन व्यक्तियों द्वारा स्वार्थ सिद्धि को एक व्यक्ति द्वारा स्वार्थ सिद्धि से क्यों बेहतर माना जाएगा ?

एक घटना का उल्लेख मेरी पुस्तक *'दर्शन और बालक'* में है। (पृष्ठ 28) मैंने सोचा कि मैं इसी को अपनी कहानी के आरंभ का आधार बनाऊं, जिससे बच्चों को आचारशास्त्र पर चर्चा करने का मौका मिले। मुझे ब्रिटिश टेलीविजन के बारे में बहुत कम ज्ञान था पर मुझे यह मालूम था कि दोपहर में बच्चों का जो कार्यक्रम 'मूमिंस' आता है, वह मेरी कक्षा के बच्चों की तुलना में काफी छोटे बच्चों का प्रोगाम है।

अतः मैंने अपनी कहानी का प्रारंभ इस प्रकार किया।

फ्रेडी अपनी प्रिय कुर्सी पर आराम से बैठ गया। उसके हाथ में शरबत का गिलास था और पास में कुछ बिस्कुट रखे थे। वह टी. वी. पर अपने प्रिय प्रोग्राम 'ऐबट और कैस्टलो' की अगली कड़ी देखने को तैयार होकर बैठा था। इसी समय ऐसा लगा जैसे कोई मोटर उसके घर में आकर रुकी। फिर मोटर के दरवाजों के खुलने और बंद होने की आवाज आई और घर के दरवाजे की ओर आते हुए लोगों के पदचाप सुनाई पड़े। फिर घंटी बजी और कई लोग अंदर घुसे।

फ्रेडी अपना ध्यान टी.वी. में लगाने की कोशिश कर रहा था। पर उस शोरगुल में उसने सुना कि उसकी मां उससे कह रही है, 'फ्रेडी, देखो कौन लोग आए हैं। ये एटकिन परिवार के हैं। तुम्हें इनकी याद है क्या ? ये बड़ी दूर से आ रहे हैं। तुम छोटे बच्चों को टी.वी. दिखाओ, तब तक मैं चाय का पानी रख कर आती हूं। तुम्हें मैं मिलवा देती हूं, ये है सारा, ये डगलस और...हां यह है टाम। भाई, तुम सब तो इतने बड़े हो गए हो कि मैं तो तुम्हें





पहचान ही नहीं पाई।'

डगसल ने जोर से कहा, 'मैं तो 'मूमिंस' देखना चाहता हूं।'

सारा और टाम भी बोले, 'हां, यह ठीक है। चलो मूमिंस देखें।'

फ्रेडी ने बड़ी नम्रता से कहा, 'एबट और कैस्टेलो देखे तो कैसा रहे ?'

'नहीं' वे तीनों एक साथ बोले, 'हम तो मूमिंस देखेंगे।

डगलस उन सबका नेता था। वह निःसंकोच उठा और जाकर टी.वी. पर प्रोग्राम बदल कर 'मूमिंस' का प्रोग्राम लगा दिया।

फ्रेडी दुखी होकर वहां से उठ कर रसोई में चला गया।

फ्रेडी की मां ने चायदानी में पानी डालते हुए पूछा, 'ऐसे मुंह क्यों लटका रखा है ? माना कि वे बच्चे तुमसे छोटे हैं, पर वे अच्छे बच्चे हैं। और उनके मम्मी-पापा तुम्हारे मम्मी-पापा के बहुत पुराने दोस्त हैं। जाओ, उनके साथ अच्छी तरह खेलो।'

'पर वे टी.वी. पर 'मूमिंस' प्रोग्राम देखना चाहते हैं,' फ्रेडी ने कहा।

फ्रेडी की मां बोली, 'बेटा, मैं जानती हूं कि तुम्हें वह प्रोग्राम बिलकुल अच्छा नहीं लगता। परंतु तुम इस ढंग से क्यों नहीं सोचते। इस प्रोग्राम से एक की जगह तीन बच्चे खुश होंगे।'

फ्रेडी ने एक मिनट सोचा, फिर धीरे-धीरे सावधानी से कहा, 'यदि तीन लोगों की स्वार्थ सिद्धि हो, तो वह एक व्यक्ति की स्वार्थ सिद्धि से क्यों बेहतर समझी जाएगी ?'

मैंने बिलकुल शुरू में जिस घटना का उल्लेख किया है, उसमें अप्रत्यक्ष रूप से उपयोगितावाद अंतर्निहित है (यह मत कि हमें वही कार्य करना चाहिए जो अधिकाधिक सुख दे सके)। इस कहानी में फ्रेडी की मां ने प्रत्यक्ष रूप से यह मत प्रस्तुत किया है यद्यपि उसने यह नहीं कहा है कि वह कोई नीतिशास्त्र का सिद्धांत प्रतिपादित कर रही है। उसने तो केवल फ्रेडी का ध्यान इस ओर दिलाया है कि इसमें सिर्फ एक के स्थान पर तीन लोग खुश होंगे।

इस तरह के दृष्टांत में एक अच्छी बात यह है कि इससे एक व्यापक सिद्धांत भी प्रतिपादित होता है और एक विशेष घटना पर भी ध्यान आकर्षित होता है। अतः लाभ को तीन और एक के अनुपात में परिणित करने से उसे एक व्यापक सिद्धांत के अंतर्गत लाया जा सकता है। परंतु यदि अनेक असभ्य लोग आकर हमारे मौलिक विशेषाधिकारों पर आक्रमण करें, तो हम लाभ हानि की इस संख्यात्मक विवेचना का विरोध करेंगे। यही बात अतिथि सत्कार के लिए भी कही जा सकती है, यद्यपि उसका स्पष्ट नैतिक महत्व नहीं है।

डेविड पॉल की तत्काल प्रतिक्रिया का संबंध मेजबान-मेहमान दृष्टिकोण से

था। उसने कहा, 'वे केवल एक बार आपके घर आए हैं। आपको उनके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए, जिससे उनके मन में आपके लिए अच्छी राय बने। यह स्पष्ट नहीं था कि यह 'अच्छी राय बनना' नैतिक दृष्टिकोण से आवश्यक था या नहीं। इसका कारण केवल यही था कि यह मेजबान के लिए हितकर होगा।

मार्टिन ने इसका विरोध किया। उसने कहा, 'यह कोई अच्छी बात नहीं है कि किसी के घर जाकर जिद करो कि 'हम तो' मूमिंस' प्रोग्राम ही देखेंगे।'

डेविड पॉल ने कई तरीकों से यह बताने का प्रयास किया कि कैसा आचरण उचित और न्यायसंगत माना जाएगा। उनमें से प्रथम यह था, 'ये लोग तीन हैं, इसलिए वे आपस में भी खेल सकते हैं। अतः उनके द्वारा टी.वी. का प्रोग्राम बदल देना बहुत गलत काम है।'

यह एक बड़ा व्यावहारिक तर्क था। तीन व्यक्ति, जो पहले से आपस में परिचित हैं, एक दूसरे का आसानी से मनोरंजन कर सकते हैं। परंतु एक अकेला व्यक्ति, जो दूसरों को नहीं जानता, उसे मनोरंजन के इस साधन की आवश्यकता अधिक है।

मार्टिन ने अपना प्रतिरोध जारी रखा। वह बोला, 'यदि मैं आराम से टी. वी. देख रहा हूं और अचानक कोई हमारे यहां तीन विचित्र बच्चों को लेकर आ जाए और मेरी मां उनसे कहे, 'जाओ जाकर टी.वी. देखो, और वे आकर कहे, 'हम 'मूमिंस' का प्रोग्राम ही देखेंगे,' तो मुझे तो बहुत बुरा लगेगा। वे आसानी से वही प्रोग्राम भी तो देख सकते थे जो फ्रेडी देख रहा था।'

डेविड पॉल ने कहा, 'उनको दूसरों की इच्छा का भी आदर करना चाहिए। मूमिंस का प्रोग्राम तो प्रायः रोज आता है।'

यह एक दूसरा प्रासंगिक तर्क था। डेविड पॉल का विचार था कि जिस कार्यक्रम के अन्य मौके आ सकते हैं, उसकी अपेक्षा उस कार्यक्रम का दावा अधिक है जो अपेक्षाकृत कम बार आता है।

*रिचर्ड :* 'क्या 'मूमिंस' एक सीरियल है ?
*मैं :* 'हां'
*रिचर्ड :* 'एबट और कैस्टेलो का प्रोग्राम भी धारावाहिक है। अतः वह भी किसी और समय देखा जा सकता है।

रिचर्ड का यह कहना था कि इस मामले में डेविड पॉल का तर्क लागू नहीं हो सकता क्योंकि दोनों ही प्रोग्राम सीरियल में आ रहे हैं, अतः दोनों ही किसी अन्य मौके पर देखे जा सकते हैं।





रोजमर्रा के आचरण में विवादों और संघर्षों को सुलझाने के लिए हम सामान्य विधि की तरह उन सामान्य घटनाओं की सहायता लेते हैं जिनकी व्याख्या किसी प्रचलित नियम अथवा किसी विधि के नियम के आधार पर की गई हो। ऐसे समाधान सफल भी होते हैं यद्यपि कोई इसे बताना जरूरी नहीं समझता कि यह हल किसी सुसंगत पद्धति पर आधारित है जो हर प्रकार के संभावित विवादों को हल कर सकती है। निःसंदेह, कोई यह आपत्ति कर सकता है कि रीति से जो समाधान प्राप्त हुआ है वह सही नहीं है जब तक यह न बताया जाए कि वह किसी व्यापक सिद्धांत या व्यापक पद्धति के अंतर्गत आता है।

मुझे यह लगा कि मेरी कक्षा के बच्चों में से कोई भी बच्चा ऐसे किसी व्यापक सिद्धांत की ओर आकर्षित नहीं हुआ था। उक्त घटना के प्रति अवश्य उनकी बड़ी तीव्र भावनाएं थी। उन्होंने मिलते-जुलते उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए अपने निजी जीवन में से उपयुक्त अनुभवों को याद किया जिससे वे आचरण के सामान्य सिद्धांत प्रस्तुत कर सकें। परंतु उपयोगितावाद का सिद्धांत उन्हें आकर्षक नहीं लगा और न उनकी इच्छा थी कि इसकी जगह कोई दूसरा मौलिक सिद्धांत ढूंढे।

मैंने उपयोगितावाद पर गंभीरता से विचार करने के लिए उन्हें उकसाने का प्रयास किया, 'इस तर्क के बारे में तुम्हारा क्या विचार है कि यदि तीन मेहमानों की इच्छा पूरी की जाए तो एक की बजाए तीन लोगों को खुशी होगी ?'

मार्टिन, 'वास्तव में यह न्याय संगत नहीं है कि तीन लोगों की इच्छा पूरी हो जाए और एक विचारा रह जाए। उस एक व्यक्ति को तो बहुत बुरा लगेगा।'

यहां उपयोगितावाद और न्याय भावना में विरोधाभास की संभावना है (या फिर उपयोगितावाद का अधिक कल्पनाशील और परिष्कृत ढंग से प्रयोग किया जाना चाहिए) इस बात पर भी स्पष्टता होनी चाहिए कि न्यायसंगत क्या है।

पहले की तरह, डेविड पॉल के पास एक और प्रासंगिक तर्क तैयार था, 'यह इस पर भी निर्भर है कि उसकी आयु क्या है। यदि वह अकेला व्यक्ति वास्तव में बड़ा है और अन्य उससे छोटे हैं, तो उसे अपने से छोटों को अपना प्रोग्राम देखने की अनुमति देनी चाहिए।'

*रिचर्ड :* 'नहीं, उन्हें अपने से बड़ों का आदर करना चाहिए।'
*मैं :* 'यह तो दोनों परस्पर विरोधी सिद्धांत हैं।'
*रिचर्ड :* 'मान लिजिए कि कोई मेरी ही आयु का हो।'
*डेविड पॉल :* 'और कोई पंद्रह वर्ष का व्यक्ति आए और उसकी इच्छा एक गणित का प्रोग्राम देखने की हो। पर तुम वह गणित का प्रोग्राम

नहीं देखना चाहते हो तो उसे चाहिए कि वह तुम्हें अपना प्रोग्राम देखने दे। हां, अगर वह किसी विशेष परियोजना पर कार्य कर रहा हो तो बात दूसरी है।'

*मैं :* 'रिचर्ड, तुम क्या यह सोचते हो कि छोटे बच्चों को सदा बड़ों की बात माननी चाहिए ?'

*रिचर्ड :* 'हां। अगर वे कोई ऐसी बात कहें जो खतरनाक हो तो बात दूसरी है।'

*डेविड पॉल :* 'वास्तव में यह इस पर भी निर्भर करता है कि प्रोग्राम कितनी बार आता है और आप कितने बड़े हैं। यदि हफ्ते में एक ही बार वह प्रोग्राम आता है और आप बड़े हैं, तो आप वह प्रोग्राम देख सकते हैं। यदि आप छोटे हैं, तब भी आप देख सकते हैं। परंतु यदि दोनों प्रोग्राम सीरियल के रूप में आते हैं तो जो आयु में छोटा है, उसे प्रोग्राम देखने का मौका देना चाहिए। हां, यदि आपके प्रोग्राम का समापन होने वाला हो तो बात फरक है। तब आप दूसरे व्यक्ति से अनुरोध कर सकते हैं कि वह अपना प्रोग्राम किसी और समय देख ले।'

थोड़ी देर बाद डेविड पॉल ने एक और तर्क पेश किया। 'इस बात से भी फरक पड़ता है कि प्रोग्राम देखने वाले दूसरे बच्चे आपके भाई-बहन हैं, या कोई मेहमान हैं। यदि भाई-बहन हैं, तो वे उस प्रोग्राम को किसी और वक्त देख सकते हैं, क्योंकि अकसर ये प्रोग्राम दो बार आते हैं। परंतु यदि कोई उसी समय आपके घर में बाहर से आया है, तो आपको चाहिए कि उसे अपना प्रोग्राम देखने दें। और कोई ऐसा व्यक्ति आया है जिसके घर में टी.वी. है ही नहीं, तब तो अवश्य ही उन्हें अपनी मरजी का प्रोग्राम देखने का मौका देना चाहिए।

यद्यपि सभी बच्चे एक व्यापक नियम से सहमत थे, फिर भी मुझे ऐसा लग रहा था कि बच्चे अभी कुछ और कहना चाहते हैं। वे उस व्यापक नियम के पीछे आधारभूत नैतिक भावना को उजागर करना चाहते थे, जो उस नियम को बल प्रदान करती है। डेविड पॉल के इस कथन से सभी सहमत थे, 'यदि कोई आपके घर मिलने आए, तो उसके प्रति आपको अच्छा व्यवहार करना चाहिए।'

परंतु मार्टिन ने उसके साथ यह भी जोड़ना उचित समझा, 'आपके घर कोई ऐसे मेहमान आ सकते हैं जिनसे आप पहले न मिले हों। वे आपसे पूछें, 'क्या तुम यह प्रोग्राम देख रहे हों ?' आपके 'हां' में उत्तर देने से हो सकता है कि वे वापस चले जाएं और फिर कभी न आएं।'

मैं बार-बार उपयोगितावाद की बात कह रहा था और वे बार-बार उसे





अस्वीकार करते रहे।

*डेविड पॉल :* 'मान लीजिए कि टी.वी. पर कोई बहुत घिनौना प्रोग्राम आ रहा है—जैसे वे किसी का दिल निकाल कर उसका प्रत्यारोपण दिखा रहे हों और एक अकेला व्यक्ति ऐसा हो जो न देखना चाहता हो, तो वह क्या करेगा ? वह उठ कर कमरे से बाहर चला जाएगा। यह तो एक तरह से उससे यही कहना हुआ कि हम नहीं चाहते कि तुम इस कमरे में रहो।'

डोनाल्ड ने, और बाद में एस्थर ने, इस चर्चा के प्रति विरक्त भावना प्रदर्शित की।

डोनाल्ड ने कहा, 'यदि मैं फ्रेडी की जगह होता तो मुझे तो बुरा नहीं लगता। मैं सोचता कि वे केवल इसी प्रोग्राम को देखना चाहते हैं। कल ये लोग चले जाएंगे और अगली बार मैं अपनी पसंद का प्रोग्राम देख लूंगा।'

डेविड पॉल ने कहा, 'परंतु कहानी में कहा गया है कि यह आखिरी प्रोग्राम था।'

हम लोगों ने फिर से कहानी निकाल कर उसे देखा। उसमें लिखा था कि फ्रेडी, टी.वी. पर अपने प्रिय प्रोग्राम 'एबट और कैस्टेलो' की अगली कड़ी देखने को तैयार हो कर बैठा था।

*मैं :* 'मान लो वह आखिरी कड़ी थी। उससे क्या फरक पड़ेगा ?'

*एस्थर :* 'वास्तव मे कोई फरक नहीं पड़ेगा।'

*डेविड पॉल :* 'मान लो उसमें एटम बम छूटने वाला हो। आप यह जानना चाहेंगे कि नायक बच गया या नहीं।'

*मार्टिन :* 'बिल्कुल ठीक। हम लोग इंतजार करते हैं कि प्रोग्राम का अंत क्या होगा।'

मैंने कहानी को आगे बढ़ाते हुए उन सब बातों को समाविष्ट किया जो बच्चों ने उस बढ़िया चर्चा के दौरान उठाई थी। परंतु कहानी का यह अंश अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाया। न तो उससे कोई अन्य नए विचार उभरे और न समस्या का समाधान हुआ।

जब मैंने कहानी की यह नई किश्त बच्चों के सामने पढ़ी और कोशिश की कि चर्चा कुछ और आगे बढ़े और जब मैं अपने उद्देश्य में सफल नहीं हुआ तो मैंने बच्चों से कहा कि वे स्कूल के छात्रावास में 'रखे हुए टी.वी. के उपयोग करने के नियम बनाएं।' इस संबंध में जो बातचीत हुई, उसमें प्रायः

वे ही बातें दोहराई गई, जो पहले कही जा चुकी थीं। अतः मैंने इस विषय को कुछ समय के लिए छोड़ दिया। प्रत्येक सप्ताह रिचर्ड पूछता, 'क्या आज हम 'मूमिंस' वाली कहानी समाप्त करेंगे ?'

मैं फीका-सा उत्तर देता, 'आज नहीं, शायद अगले हफ्ते उसे लेंगे।'

अंत में करीब दो महीने बाद, हमने फिर से मूमिंस की कहानी को लिया। मैंने सोचा कि चूंकि कोई बच्चा उपयोगितावाद के सिद्धांत का समर्थन करने को तैयार नहीं है, अतः यह देखना चाहिए कि क्या कोई अन्य ऐसा व्यापक नैतिक सिद्धांत है जो बच्चों को अधिक संतोषजनक लगे। मैंने सोचा कि शायद स्वर्ण नियम ही ऐसा है जो इन सबको मान्य होगा। अतः मैंने उसी पर अपनी कहानी को आधारित किया। मैं देखना चाहता था कि क्या मेरा कोई छात्र इस पुरातन नियम का समर्थन करेगा ?

मैंने जो लिखा, वह इस प्रकार था।

दूसरे दिन सवेरे नाश्ता करते समय एलिस ने फ्रेडी से कहा, 'कल तुमने मां से जो सवाल किया था, वह बहुत अच्छा था।'

फ्रेडी ने पूछा, 'कौन-सा सवाल मैंने किया था ?'

एलिस, 'तुमने पूछा था, एक की बजाए तीन लोगों की स्वार्थ सिद्धि क्यों बेहतर है ? मां को तो समझ ही में नहीं आया कि क्या उत्तर दें ?'

फ्रेडी ने कहा, 'वे बच्चे कितने बेकार के थे।'

एलिस ने सहमत होते हुए कहा, 'हां, एकदम पाजी लग रहे थे। पर यह अच्छा हुआ कि तुमने इस नियम का विरोध किया जिसके अनुसार अधिकाधिक लोगों को खुश करने की बात है। यह नियम ठीक नहीं है। परंतु ऐसी कठिन परिस्थिति में क्या करना चाहिए, इसके बारे में कोई अच्छे नियम हैं भी तो नहीं।'

फ्रेडी ने पूछा, 'क्यों, स्वर्ण नियम कैसा है ?'

*एलिस :* 'तुम्हारा मतलब इस नियम से है—दूसरों से वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ करें ?'

*फ्रेडी :* 'हां'

*एलिस :* 'अच्छा जरा सोचो। इसका अर्थ है कि हमें 'दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा, यदि हम दूसरे लोग होते, तो हम चाहते कि हमारे साथ किया जाए।' अब उन बेवकूफ बच्चों का ध्यान करो जिन्होंने तुम्हारे टी.वी. पर दखल कर लिया और जिद की कि वे 'मूमिंस' का प्रोग्राम ही देखेंगे।'





'हां' फ्रेडी बोला, 'उन्हें सोचना चाहिए था कि यदि उनके घर में कुछ अजनबी बच्चे आ जाएं और उनका टी.वी. लेकर उसमें वह प्रोग्राम देखने लगें-जो उन्हें पसंद नहीं है, तो उन्हें कैसा लगेगा ? मेरा तो मन कर रहा था कि उनके चांटा मारूं।'

एलिस, 'अच्छा अब अपनी बात भी तो सोचो। यदि तुम किसी अजनबी के घर जाओ और तुम्हारा सबसे प्रिय प्रोग्राम 'मूमिंस' हैं, तो तुम क्या यह नही चाहोगे कि जो बच्चा वहां रहता है वह तुम्हें उस प्रोग्राम को देखने दे ? ठीक है न ? यदि तुम उन लड़कों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम चाहते हो कि तुम्हारे साथ किया जाए, तो तुम्हें चाहिए कि उन्हें अपनी पसंद का प्रोग्राम 'मूमिंस' देखने दो। मैंने ठीक कहा है न ? लेकिन अब तुम्हें भी समझ में आ गया होगा कि स्वर्ण नियम कोई बढ़िया नियम नहीं है।'

फ्रेडी पशोपेश में पड़ गया। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहे। उसने सोचा था कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को खुश करना अच्छा नियम नहीं है। उससे बहुत से बच्चे तो प्रसन्न हो जाएंगे परंतु एक बच्चा शायद जीवन भर दुखी रहे। क्या यह उचित होगा ? पर, ऐलिस के अनुसार, स्वर्ण नियम भी शायद अन्य नियमों से बेहतर नहीं है। शायद ऐलिस जो कह रही है वही ठीक है। क्या ऐसा हो सकता है कि सचमुच में स्वर्ण नियम अच्छा नियम नहीं है ?

सच तो यह है कि मेरी कक्षा में किसी को भी स्वर्ण नियम की आलोचना से कोई आपत्ति नहीं थी। डोनाल्ड ने कहा कि उसे खुद को स्वर्ण नियम से बहुत निराशा हुई है। उसने इसके अनुसार कई बार कार्य किया है पर यद्यपि कई बार यह सफल भी होता है परंतु अकसर यह कारगर नहीं होता। उसका मतलब था कि बहुधा न तो इससे न्याय मिलता है और न संतोष।

डेविड पॉल ने टिप्पणी की, 'यदि सभी आदमी इसका प्रयोग करें तो यह बहुत बढ़िया नियम सिद्ध होगा।'

कहानी का समापन करते समय मैंने उसी के विचार का प्रयोग किया।

एंगस ने कहा, 'स्वर्ण नियम एक अच्छा नियम तभी बन सकता है, जब सब इसका पालन करें।'

फ्रेडी ने तुरंत कहा, 'परंतु सब लोग ऐसा नहीं करते हैं। सच पूछो तो ज्यादातर लोग ऐसा नहीं करते हैं।'

एंगस ने कहा, 'हां, मैं जानता हूं। पर हम इतना ही कह सकते हैं कि हमें सबको स्वर्ण नियम का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जिसमें हम स्वयं भी सम्मिलत हैं।'

फ्रेडी, 'यह ठीक लग रहा है। पर यह भी एक प्रकार का नियम ही है। एलिस, तुम्हारा इस नियम के बारे में क्या विचार है ?' पर तभी फ्रेडी ने देखा कि ऐलिस वहां से चली गई थी।

वह बोला, 'मुझे एलिस से इस नियम के बारे में बात करनी पड़ेगी। देखें अब वह इसमें क्या बुराई निकालती है। परंतु क्या पता ? एलिस का कोई ठिकाना नहीं। उसे हर चीज में कोई न कोई गलती दिखाई दे जाती है।'



# 10. भविष्य

एक दिन एस्थर ने कुत्ते की कहानी सुनाने के लिए कहा। वह बोली, वैसे तो आमतौर पर उसे सभी कुत्ते अच्छे लगते हैं लेकिन डैशंड (जर्मन नस्ल के शिकारी कुत्ते) उसे खासतौर पर अच्छे लगते हैं। मैंने वायदा किया, अगली बार कक्षा में सुनाने के लिए मैं ऐसी कहानी लेकर आऊंगा जिसकी शुरुआत कुत्ते से होती हो। अगली कक्षा में जो कहानी मैंने सुनाई, वह इस प्रकार थी :

फ्रेडी संदूक पर झुका। उसने बड़ी सावधानी से कंबल हटाया जिसमें एंगस के बादामी रंग के पिल्ले के शरीर का आधा हिस्सा ढका था। जब फ्रेडी ने उसके नरम-नरम गरम शरीर को थपथपाया तो एंगस गर्व से मुस्करा पड़ा। जब एंगस ने पहली बार कहा था कि वह शिकारी कुत्ते का पिल्ला लेने जा रहा है तो फ्रेडी को पूरी तरह यकीन नहीं हुआ था कि यह पिल्ला उसे पसंद भी आएगा। फ्रेडी दूसरे तरह का शिकारी कुत्ता चाहता था। ऐसे कुत्तों को लैब्रोडोर कहा जाता है। लेकिन उसे एंगस का कुत्ता काफी अच्छा लगा, उसे यह कुत्ता बेहद पसंद आया।

'लगता है, यह बेहद थक गया है,' एंगस ने कहा, 'जब पहली बार इसे घर लाया था तो इसने पूरे घर में धमाचोकड़ी की थी और सारे घर में इसने धूल-मिट्टी बिखेर दी थी, अंत में इसने थोड़ा-सा दूध पिया और थक कर सो गया।'

'क्या यह पहला दिन है, जब अपनी मां से, भाइयों और बहनों से अलग, अकेला है ?' फ्रेडी ने सवाल किया।

ठीक इसी समय वह उत्तेजित होकर भौंकने लगा, उसकी आवाज ऊंची और तीखी थी। एंगस ने उसे आहिस्ते-आहिस्ते थपकी देना शुरू किया और वह धीरे-धीरे चुप हो गया।

'अरे उसके लिए तुम्हारी थपकी काफी भारी पड़ी होगी।' एंगस ने कहा।

'मुझे विचित्र लगता है कि वह एकदम नई जगह में है, वह क्या सोच रहा है। हो सकता है कि वह सोच रहा हो कि कल वह अपनी मां के पास जाएगा।'

फ्रेडी ने कहा, 'मेरे खयाल से वह ऐसा नहीं सोच सकता।'

एंगस ने पूछा, 'क्यों नहीं ?'

फ्रेडी ने समझाया, 'देखो, मैं सोचता हूं कि एक कुत्ता चित्र के रूप में सोचता है। यानी वह जो सोचता है, उसकी तस्वीर उसके दिमाग में आ जाती है। सोचो, जो आगामी कल है, उसका चित्र कैसे बन सकता है ? उसके लिए तो एक खास शब्द का होना जरूरी है। यह कोई जरूरी नहीं कि वह शब्द अंग्रेजी का ही हो। वह फ्रेंच का भी हो सकता है या किसी अन्य भाषा का हो सकता है। परंतु उसकी तस्वीर नहीं हो सकती। इसलिए कुत्ता आने वाले कल के बारे में नहीं सोच सकता।'

एंगस ने कहा, 'यह तो बड़ी भयंकर बात है। जरा सोचो, वह कल के बारे में सोच ही नहीं सकता। इसके मतलब यह हुए कि उसे यही नहीं पता होगा कि भविष्य भी कुछ होता है।'

यह मेरे लिए स्वाभाविक था कि मैं मानसिक चित्रों के विषय का परिचय बच्चों से कराऊं। मैंने पिछले वर्ष मैसेच्यूसेट्स विश्वविद्यालय में इसी विषय का पाठ्यक्रम पढ़ाया था। आजकल दार्शनिकों, मनोवैज्ञानिकों और कम्प्यूटर वैज्ञानिकों में इस विषय पर बड़ा गरमागरम विवाद चल रहा है ? यदि हां, तो इस चित्र शब्दावली की क्या सीमाएं हैं ? मुझे यह विवाद बहुत आकर्षक और महत्वपूर्ण लगता है। कुत्ते की कहानी द्वारा इन बच्चों का इस विषय से परिचय कराना मुझे एक अच्छा तरीका लगा।

मार्टिन ने चर्चा का आरंभ किया, 'कुत्ते को आने वाले कल के शब्द का प्रयोग करने की आवश्यकता ही नहीं है। उनका अपना तरीका है, अपनी भाषा है।'

मैंने पूछा, 'तुम्हें कैसे मालूम ?'

मार्टिन ने थोड़ी देर सोच कर उत्तर दिया, 'आपने कभी कुत्तों को 'कल' कहते सुना है ?'

सभी हंसने लगे।

मैंने सोचा कि इन्हें कोई दूसरा उदाहरण देना चाहिए। मैंने उनसे कहा कि वे कोई ऐसी बात सोचें जिसकी उन्हें याद है कि उन्होंने कल की थी, और जिसका वे आने वाले कल में फिर से करने का विचार कर रहे हैं। चूंकि वह संगीत का स्कूल था, अतः यह स्वाभाविक ही था कि बच्चों ने संगीत के रियाज की बात सोची। इंसे और एस्थर, दोनों बहुत अच्छा वायलन बजाती थीं और दोनों को उस वर्ष एक क्षेत्रीय प्रतियोगिता में, अपने आयु के बच्चों में प्रथम पुरस्कार मिला था। अतः हमने उदाहरण के लिए वायलन बजाने का





विचार किया।

*मैं :* 'मान लो कि मैं यही सोच रहा हूं कि मैं कल वायलन बजाऊंगा तो मुझे कैसे पता चलेगा कि मैं यह सोच रहा हूं ? या मुझे कैसे पता चलेगा कि मेरा यह विचार है ?

*मार्टिन :* 'आप अपने मन में कहेंगे, 'मैं कल वायलन बजाऊंगा।' आप इसे जोर से नहीं कहेंगे।'

*रिचर्ड :* 'आपके दिमाग में एक तसवीर आएगी जिसमें आप वायलन बजा रहे हैं।'

*मैं :* 'बहुत ठीक। यह दो तरीके हैं जो रिचर्ड और मार्टिन ने सुझाए हैं। अब समस्या यह है कि यदि हम केवल तसवीरों के रूप में सोचते हैं तो बीते हुए कल में मैं वायलन बजा रहा हूं—इनमें क्या फरक होगा ? (मैंने बोर्ड पर एक बड़ा सा चित्र बनाया जिसमें मैं वायलन बजा रहा था।)

*मार्टिन :* 'आप आने वाले कल का बिलकुल यथार्थ और सही चित्र पहले से नहीं सोच सकते, पर आप बीते हुए कल को याद कर सकते हैं।'

*मैं :* 'मान लो हमारे पास एक विचित्र मशीन है जिसे तुम मेरे सिर में लगा कर यह देख सकते हो कि मेरे दिमाग में क्या चित्र आ रहे हैं।' मैंने स्थिति को नाटकीय बनाने के लिए ऐसा प्रदर्शन किया मानो मैं किसी मशीन में देख रहा हूं। 'तुमने उस मशीन में देख कर कहा कि यह तो अपने को वायलन बजाते हुए देख रहा है।' अब प्रश्न यह है कि क्या मैं बीते हुए कल की याद कर रहा हूं जब मैं वायलन बजा रहा था, या मैं यह सोच रहा हूं कि आगामी कल में मैं वायलन कैसे बजाऊंगा। दोनों स्थिति के चित्रों में क्या फरक होगा ?'

एक ने कहा, चित्र तो समान ही होगा।'

रिचर्ड, 'हां इस बीच में आप बाल कटवा लें तो बात फरक है।' *(हंसी)*

मैं सोचता हूं कि शायद सचमुच में मुझे उस समय बाल कटवाने की जरूरत थी। बाद में जब मैंने बाल कटवा लिए तो कई बच्चों ने उस पर टिप्पणी की।

रिचर्ड ने जो बात शरारत से कही थी, उसमें कुछ गंभीर तथ्य भी था जिसे अन्य कच्चों ने फौरन पकड़ लिया। समय को दर्शाने का एक तरीका यह भी है कि व्यक्ति, स्थान या वस्तुओं में परिवर्तन दिखाया जाए। यदि हम यह मान लें कि आने वाला कल मेरे बाल कटने के बाद आएगा तो जिस

चित्र में मेरे बाल कटे रहेंगे, वह आने वाले कल का चित्र होगा। या हम कह सकते हैं कि यदि कल सुबह मैं बाल कटवाने वाला हूं, तो जिस चित्र में मेरे कटे हुए बाल दिखाई देंगे, वह आने वाले कल का, या उसके बाद किसी समय का मेरा चित्र होगा।

अभी तक डोनाल्ड चुप था। पर उसने जो कुछ भी बाद में कहा, उससे यह प्रतीत होता है कि वह इस विषय पर बराबर सोच रहा था।

> *डोनाल्ड :* 'इसका क्या प्रमाण है कि कुत्ते भविष्य के बारे में सोच सकते हैं ? वास्तव में हमारे पास इसका कोई प्रमाण नहीं है। आपको अपने चारों और कोई ऐसी बात नहीं दिखाई देगी जिससे आपको लगे कि कुत्ते भविष्य के बारे में सोचते हैं। मैंने तो जो कुछ सुना है उससे तो ऐसा लगता है कि कुत्ते भविष्य के बारे में सोच सकते हैं, इसकी संभावना का भी कोई प्रमाण नहीं है।'

मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि डोनाल्ड ने हमारी चर्चा को नई दिशा की ओर मोड़ा। उसकी बात को समझाने के लिए मैंने अपने ढंग से उसे दुबारा कहा। 'डोनाल्ड यह कह रहा है कि पहले हमारे पास इसका प्रमाण होना चाहिए कि कुत्ते सचमुच भविष्य के बारे में सोचते हैं। तभी हम यह सवाल कर सकते हैं कि वे भविष्य के बारे में किस ढंग से सोचते होंगे ? पर जब हम यही नहीं जानते कि वे भविष्य के बारे में वास्तव में सोचते हैं तो फिर हम बेकार इसके लिए क्यों परेशान हों ?'

ऐसा लगा कि मैंने डोनाल्ड के तर्क की जो व्याख्या की, वह डोनाल्ड को सही लगी।

मैंने पूछा कि हमारे पास इसका क्या प्रमाण है कि कुत्ते बीते हुए दिनों के बारे में सोच सकते हैं ? कई बच्चों ने भिन्न-भिन्न तरीके से इसका उत्तर दिया। उनका कहना था कि कुत्ता कोई काम ठीक से करना तभी सीख सकता है कि जब वह बीती हुई बातों को याद रखे और उन पर सोचे। बच्चों ने जो बात कही थी वह स्वाभाविक थी और उस पर आगे चर्चा करने की जरूरत थी। परंतु हमारी कक्षा का समय समाप्त होने वाला था। उसके बाद बस इतना ही समय बाकी था कि डोनाल्ड ने फिर से अपनी बात दोहराई कि हमारे पास कुत्तों के भविष्य के बारे में सोचने का कोई प्रमाण नहीं है। इस पर मार्टिन ने कहा, 'कुत्ते यह कह सकते हैं कि हम कल, रोज की तरह घुमने जाएंगे।' मार्टिन की आंखें शैतानी से मुस्करा रही थीं। इतने में घंटा बज गया।

अगले हफ्ते मैं आगे की कहानी लिख कर लाया।





उसी समय एंगस की बड़ी बहन, फिओना कमरे में आई। उसने बड़े खुश होकर पूछा, 'तुम्हें हमारा कुत्ते का छोटा सा बच्चा कैसा लगा ?'

फ्रेडी ने कहा, 'सचमुच बहुत ही प्यारा है। उसको देख कर मेरा मन करता था कि काश मेरे पास भी ऐसा ही एक कुत्ते का बच्चा होता। कितना गुदगुदा और कितना गरम है। कैसा मजेदार लगता है।'

फिओना ने कुछ खीजते हुए कहा, 'तुम्हें मजा लग रहा है ? अगर तुम्हें उसके पीछे-पीछे सफाई करनी पड़े, तब तुम्हें वह मजेदार नहीं लगेगा। उसने तो आते ही सारे घर में जगह-जगह गीला कर दिया।'

एंगस के दिमाग में अभी तक वही बात घूम रही थी। वह बोला, 'फ्रेडी कहता है कि कुत्ते भविष्य के बारे में नहीं सोच सकते। फिओना, तुम क्या सोचती हो ?'

फिओना थोड़ा मुस्करा कर बोली, 'तुम यह कहना चाहते हो कि यहां आराम से लेटा हुआ वह यह नहीं सोच रहा है कि कल मैं इस गलीचे को गीला करूंगा ?'

फ्रेडी ने कहा, 'मैं मजाक नहीं कर रहा हूं। कुत्ते तस्वीरों के रूप में सोचते हैं। आने वाले की कोई तस्वीर नहीं हो सकती। उसके लिए कोई शब्द होना जरूरी है।'

फिओना ने कहा, 'कुत्तों के सोचने का अपना ढंग होता है। हम लोग इसे नहीं जानते कि वे कैसे सोचते हैं।'

फ्रेडी फिर भी अपनी बात पर अड़ा रहा, 'मान लो मेरी बात ठीक है और कुत्ते चित्रों के रूप में ही सोचते हैं। मान लो कि हमारे पास ऐसी मशीन है—कुछ एक्सरे की मशीन की तरह—जिसमें कुत्ते का सिर डाल देने से हमें यह दिखाई देने लगता है कि उसके दिमाग में क्या हो रहा है और हमें टी. वी. के चित्रों की तरह कुत्ते के दिमाग में आने वाली तस्वीरें दिखाई देने लगती हैं—अब मान लो....'

फिओना ने बीच में टोकते हुए कहा, 'ठहरो—जरा एक मिनट रुको। तुम बहुत जल्दी-जल्दी बोल रहे हो। फिर से शुरू करो। मान लो कि कुत्ते तस्वीरों के रूप में सोचते हैं। फिर ?'

फ्रेडी ने अब धीरे-धीरे बोलते हुए कहा, 'मान लो, हम उनके सिर में एक मशीन लगा कर उनके विचारों को देखें। अब अगर हमें मशीन में दिखाई दिया कि कुत्ता गलीचे पर शू-शू कर रहा है। तो बताओ कि क्या वह बीते हुए कल की याद कर रहा है जब उसने गलीचा गीला कर दिया था, या वह आने वाले कल के बारे में सोच रहा है जब वह गलीचे को गीला करेगा। दोनों चित्रों

मे क्या फरक होगा ?'

फियोना ने यह स्वीकार किया कि चित्र तो दोनों एक से ही होंगे। 'जैसे मेरे दिमाग में मेरा वायलन बजाते हुए वही चित्र होगा चाहे मैं बीते हुए कल को याद कर रही हूं जब मैंने वायलन बजाया था, या आने वाले कल के बारे में सोच रही हूं, जब मैं वायलन बजाऊंगी।'

एंगस ने शरारत से कहा, 'हां, अगर तुम पहले अपने बाल कटवाने की बात सोच रही हो तो बात फरक है।'

फिओना ने जरा उलझन भरी आवाज में कहा, 'इससे तुम्हारा क्या मतलब है ?'

एंगस ने समझाया, 'अगर तुम अपने बाल कटवाने का विचार कर रही हो, तो आने वाले कल के चित्र में तुम्हें अपने बाल कटे हुए दिखाई देंगे।'

फिओना हंसने लगी, 'वाह भाई, तुमने खूब तर्क दिया। परंतु फिर भी फ्रेडी की बात ही ठीक है। कटे हुए बालों का अर्थ आने वाला कल नहीं हो सकता। मान लो, तुम मेरे सिर में मशीन लगा कर मेरे दिमाग में आने वाली तस्वीरों को देख रहे हो। अगर मैं वायलन बजाती दिखाई दे रही हूं और मेरे बाल कटे हुए हैं, तो हो सकता है मैं उस समय की याद कर ही हूं जब पिछली बार बाल कटाने के बाद मैंने वायलन बजाया था। यह भी हो सकता है कि मैं भविष्य के बारे में सोच रही हूं, जब मैं बाल कटाने के बाद वायलन बजाऊंगी।'

फ्रेडी ने कहा, 'मैं ठीक कह रहा था न ? अगर कुत्ते तस्वीरों के रूप में सोचते हैं, तो वे भविष्य के बारे में नहीं सोच सकते।'

फिओना ने सहमत होते हुए कहा, 'हां, यह समस्या तो बड़ी अजीब है।'

'बस इतना कहने से क्या बात खत्म हो जाती है ? यह तो तुमने बड़े लोगों की तरह बात को टाल दिया। साफ-साफ बताओ कि तुम्हारा क्या विचार है। क्या फ्रेडी जो कह रहा है, वह सही है ?' एंगस बोला।

फिओना थोड़ी देर सोचती रही। फिर बोली, 'मेरे खयाल से पहले मुझे यह प्रमाण मिलना चाहिए कि कुत्ते सचमुच में भविष्य के बारे में सोचते हैं। जब हमें इस बात का सही प्रमाण मिल जाएगा, तब हम यह प्रश्न पूछ सकते हैं कि वे कैसे सोचते हैं। वरना, बेकार ही इसके लिए परेशान होने से क्या फायदा। हो सकता है कि उनके लिए केवल आज के बारे में सोचना ही काफी हो।'

सभी उस कुत्ते के बच्चे को देखने लगे जो आराम से सो रहा था।

उसी समय एंगस ने उत्तेजित होकर कहा, 'ठहरो, मैं कल के बारे में तो





कुछ नहीं कह सकता पर मेरे पास इसका प्रमाण है कि वे कुछ आगे के बारे में सोच सकते हैं। मैंने देखा है कि कुत्ते कभी-कभी दरवाजे पर जाकर, उस पर अपने पंजे मारते हैं और भौंक कर यह कहते हैं कि वे बाहर जाना चाहते हैं। इसके मतलब हैं कि वे इतना तो सोच ही सकते हैं कि जब कोई उनके लिए दरवाजा खोलेगा, तो वे उसके बाद बाहर जा सकते हैं।'

फिओना ने सहमति प्रकट करते हुए कहा, 'यह तर्क तो अच्छा है। परंतु उन्हें आनेवाले कल के बारे में सोचने की क्या जरूरत है ? जरा सा आगे की सोच ले, बस वही उनके लिए काफी है।'

जब हम लोगों ने कहानी का यह अंश पढ़ लिया तो चर्चा शुरू हुई।

*मैं :* 'मैंने आखिर में कुछ और जोड़ दिया है। तुम्हें याद है न कि डोनाल्ड ने कहा था कि इसका प्रमाण क्या है कि वे सचमुच में भविष्य के बारे में सोचते हैं।'

*डैनियल :* 'इसका क्या मतलब ?'

*मैं :* 'क्या वे कोई ऐसा काम करते हैं जिसमें हम यह सोचें कि वे आनेवाले कल के बारे में सोचते हैं ?'

*डैनियल :* 'हमने उनके सिर पर मशीन लगा कर देखा है।'

*मैं :* 'पर मशीन से तस्वीर देखने पर हमने यह भी तो पूछा था कि क्या इस तस्वीर में वह बीती हुई बातों को सोच रहा है या आगे करने की योजना बना रहा है ? इन दोनों चित्रों में क्या फरक होगा ?'

इसी समय किसी ने दरवाजा खटखटाया। एक अध्यापक को कुछ बच्चों से कोई काम था। इस अवरोध के बाद हमने फिर से चर्चा आरंभ की।

*मैं :* 'हां तो हम यह पूछ रहे थे कि क्या कुत्ते कोई ऐसा काम करते हैं जिससे हमारे मन में यह विचार आए कि वे भविष्य के बारे में सोच सकते हैं ? मैंने अपनी कहानी में इसके आगे यह जोड़ दिया है कि वे ऐसा कोई काम नहीं करते जिससे हमें संकेत मिले कि वे आने वाले कल की बात सोच सकते हैं। परंतु कुत्तों के कुछ कार्यों से हमें यह जरूर लगता है कि वे थोड़ा-सा आगे के बारे में सोच सकते हैं। जैसे वे दरवाजे पर जाकर, उस पर पंजे मार कर संकेत करते हैं कि वे बाहर जाना चाहते हैं।'

*डेविड पॉल :* 'पर शायद वे केवल बाहर जाने को कह रहे हों। उसके आगे कुछ नहीं।'

*मैं :* 'तुम्हारा मतलब यह है कि वे, बाहर निकल कर क्या करेंगे—इसको सोचे बिना ही वे बाहर जाने को कह रहे हैं ?'

*डेविड पॉल :* 'हां, हो सकता है कि वे घूमने की बात नहीं सोच रहे हैं।'

डविड पॉल की बात से मुझे आश्चर्य हुआ। मेरे मन में भी कुछ ऐसी ही बात आई थी और मैं सोच रहा था कि ठीक मौका आने पर यह बात कहूंगा। फिलहाल तो मुझे लग रहा था कि इस बात को उठाए बिना ही चर्चा काफी जटिल हो गई है। डेविड पॉल पिछले हफ्ते चर्चा में शामिल नहीं हो पाया था और आज ही उसका परिचय हमारे तर्कों से हुआ था। उसने बिना किसी प्रयास के वह बात उठा दी, जिसे कहने से मैं अपने को रोक रहा था।

उसके बाद डोनाल्ड और डेविड पॉल में जम कर बहस हुई जैसा अकसर ऐसे विवादों में देखा गया है, वे दोनों भिन्न-भिन्न बातें सोच रहे थे परंतु फिर भी दोनों के विचार इतने करीब थे कि विवाद की संभावना थी।

*डोनाल्ड :* 'यह तो साफ जाहिर है कि उन्हें भविष्य का कुछ अंदाज होता है। अगर तुमने अपने कुत्ते को कुछ सिखाया है, तो अगर वह आगे की नहीं सोच सकता तो उसे यही नहीं पता होगा कि वह कहां जाए।'

*डेविड पॉल :* 'अगर वह रोज एक ही रास्ते से जाता है और वह रास्ता उसे मालूम है और वहां पर एक विशेष गंध आती है तो जब वह वहां पहुंच जाता है और उसे वह गंध आने लगती है तो वह समझ जाता है कि अब उसे क्या करना है।'

दोनों में थोड़ी देर तक विवाद चलता रहा। जब उन्होंने कई काल्पनिक उदाहरणों पर चर्चा कर ली, तब डोनाल्ड ने हमें अपने कुत्ते के बारे में बताया, 'जब वह मुझे अपने बस्ते में सामान रखते देखता है, तो वह समझ जाता है कि मैं स्कूल जाने वाला हूं।'

अंत में डेविड पॉल, डोनाल्ड की इस बात से सहमत हो गया कि कुछ बातों से यह प्रमाणित होता है कि कुत्ते भी भविष्य के बारे में सोच सकते हैं। 'परंतु' उसने पूछा, 'हमारे पास इसका क्या प्रमाण है कि वे चित्रों के रूप में सोचते हैं ?'

*मैं :* 'यह तो केवल एक सुझाव है।'

*डोनाल्ड :* 'मैं नहीं मानता कि वे चित्रों के रूप में सोचते हैं। मैं तो





यही मानता हूं कि जैसे हम सोचते हैं, वैसे ही वे सोचते हैं।'

*मार्टिन :* 'अगर वे सोच नहीं पाते, तो क्या स्थिति होती ?'

*मैं :* 'कोई ऐसा उदाहरण जानते हो जिसमें जीवन जीवन तो है पर जो सोच नहीं सकते ?'

*कई बच्चे :* 'पौधे'।

*डेविड पॉल :* 'परंतु उनके बारे में तो हम बात कर चुके हैं।'

इसके बाद चर्चा की दिशा बदल गई और अब यह विचार होने लगा कि क्या हम लोग भविष्य के बारे में सोच सकते हैं ? विशेष रूप से, क्या हम भविष्य के बारे में जान सकते हैं ? कहानी को समाप्त करते समय मैंने इसी बात पर विस्तार से बात की कि हम आगे की बात कैसे सोचते हैं पर मैंने इस प्रश्न पर अधिक ध्यान नहीं दिया कि हम भविष्य के बारे में क्या जान सकते हैं ?

एंगस ने पूछा, 'आने वाले कल की बात हम कैसे सोचते हैं ?'

फिओना ने उत्तर दिया, 'इसमें क्या मुश्किल है ? हम 'कल' शब्द का उपयोग कर देते हैं।'

एंगस ने पूछा, 'पर जब मैं 'कल' बोलता हूं, तो कैसे पता चलता है कि इसका अर्थ 'कल' है ?'

फ्रेडी ने कहा, 'तुमने अच्छा सवाल पूछा है।। जब मैं एलिस कहता हूं, तो उस शब्द से मेरा अभिप्राय अपनी बहन से है क्योंकि जब मैं उसका नाम लेता हूं तो मेरे दिमाग में उसी की तस्वीर आ जाती है। परंतु इसे हम सब मानते हैं कि आगामी कल का कोई चित्र नहीं हो सकता। इसलिए जब हम 'कल' शब्द का प्रयोग करते हैं तो कैसे पता चलता है कि इसका अर्थ आने वाला कल है ?'

फिओना ने कहा, 'तुम लोग बहुत ज्यादा सवाल पूछते हो। कोई मेरे साथ चाय पीने चलेगा ?'

फ्रेडी ने कहा, 'नहीं, अभी नहीं।' फिर थोड़ा रुक कर वह मुस्कराया और बोला, 'शायद कल पीऊंगा।'

# 11. विकास मनोविज्ञान

तीन साल का स्टीव अपने पिता को केला खाते हुए देख रहा था।

स्टीव के पिता ने कहा, 'स्टीव, तुम्हें केले अच्छे नहीं लगते हैं न ?'

'नहीं' स्टीव ने कहा, 'अगर आप, आप न होकर 'मैं' होते, तो आपको भी केला अच्छा नहीं लगता।' फिर स्टीव कुछ सोच कर बोला, 'पर तब पापा कौन होता ?'

मैंने स्टीव के पिता से कहा, 'स्टीव ने यह कहा होगा कि अगर आप मेरी जगह होते, तो आपको भी केला अच्छा नहीं लगता। कोई यह नहीं मानेगा कि एक तीन साल के बच्चे ने कहा होगा, 'अगर आप 'मैं' होते।'

पर स्टीव के पिता अपनी बात पर अड़े रहे। 'स्टीव ने यही कहा था, अगर आप मैं होते।'

इस बातचीत से एक दूसरी बात यह प्रदर्शित होती है कि तीन साल का एक छोटा बच्चा, अपनी कल्पना द्वारा कैसे दूसरे व्यक्तियों की भावनाओं में प्रवेश करता है। पियागेट ने हमें यही सोचना सिखाया है कि इस आयु के बच्चे और इस आयु से काफी बड़े बच्चे भी, अति आत्मकेंद्रित होते हैं।

इस बातचीत की तीसरी असाधारण बात यह है कि इसमें हम एक तीन साल के बच्चे को, अच्छे ढंग का तर्क का प्रयोग करते हुए देखते हैं। स्टीव की टिप्पणी में अंतर्निहित तर्क को यदि हम सुस्पष्ट करें तो वह इस प्रकार होगा :

1. जो भी व्यक्ति ऐसा होगा जो 'मैं' हूं, तो उसे वह चीज अच्छी लगेगी जो मुझे लगती है और उसे वह चीज अच्छी नहीं लगेगी जो मुझे अच्छी नहीं लगती है।
2. मुझे केले अच्छे नहीं लगते हैं।
3. जो व्यक्ति ऐसा होगा जो 'मैं' हूं, उसे केले अच्छे नहीं लगेंगे। अतः
4. यदि पिताजी 'मैं' होते, तो उन्हें भी केले अच्छे नहीं लगते।'

शायद इतनी सुस्पष्टता से अभी स्टीव ने अपने तर्क को नहीं समझा हो और





मैं कह नहीं सकता कि कितना बड़ा होने पर वह तर्क को इस रूप में समझ सकेगा। परंतु स्टीव की बात में यही तर्क अंतर्निहित था।

इस बातचीत की चौथी आश्चर्यजनक बात यह है कि एक तीन साल का बच्चा तथ्य विरोधी प्रतिबंधित स्थिति प्रस्तुत करके, तर्क द्वारा उससे उत्पन्न एक रोचक समस्या हमारे सामने लाता है। बीस वर्ष पहले तक तथ्य विरोधी प्रतिबंधित स्थितियों के तर्क के बारे में ठीक समझ नहीं बन पाई थी। कई लोगों को इसमें संदेह था कि इससे कोई सार्थक बात निकल सकती है। पर अब तकनीकी दर्शनशास्त्र में संभावित संसार के अर्थतत्वों पर आधारित तथ्य विरोधी प्रतिबंधित स्थितियों का एक काफी अच्छा सिद्धांत प्रतिपादित हो गया है।

तथ्य विरोधी प्रतिबंधित स्थितियों से जो अनेक पहेलियां उत्पन्न होती हैं, उनमें से जो विशेष रूप से कठिन हैं, उन्हें हम तथ्य विरोधी समरूप स्थिति कहते हैं। जैसे हम कहते हैं, 'यदि एडवर्ड हीथ, मागरिट थैचर होता, तो वह फाकलैंड द्वीपों के बारे में अर्जेंटीना से समझौता कर लेता।' मान लीजिए, बहस के उद्देश्य से हम यह बात स्वीकार कर लें कि श्री हीथ, श्रीमती थैचर की अपेक्षा अधिक समझौतावादी हैं। पर हम यह कैसे कह सकते हैं कि यदि श्री हीथ, मागरिट थैचर होते तो वे जरूर किसी समझौते पर पहुंच जाते। यदि वे श्रीमती थैचर होते तो निःसंदेह वे श्रीमती थैचर की तरह ही कट्टरवादी होते।

परंतु स्टीव की चिंता का विषय यह नहीं था। उसे यह फिकर नहीं थी कि (1) यदि उसका पिता स्टीव होता, तो पिता को केले पसंद नहीं होते क्योंकि स्टीव को केले पसंद नहीं हैं। या (2) यदि उसका पिता स्टीव होता, तो स्टीव को केले पसंद होते क्योंकि उसके पिता को केले पसंद हैं। उसने तो अपने पिता से वही बात कही जो आप या मैं, इस परिस्थिति में कहते, 'यदि आप 'मैं' होते तो आपको भी केले पसंद नहीं आते।' स्टीव को जो उलझन है वह भूमिकाओं की है। यदि स्टीव का पिता स्टीव होता, तो फिर पिता कौन होता ? अर्थात पिता की भूमिका तब कौन निभाएगा ?

स्टीव के प्रश्न का उत्तर देना इसलिए कठिन है क्योंकि यह समझना बहुत कठिन है कि तथ्य विरोधी समरूप स्थिति के क्या तात्पर्य होते हैं ? जो दार्शनिक हाल में सामान्य तथ्य विरोधी कथनों को समझने में सफल हो पाए हैं, उनमें भी तथ्य विरोधी समरूप स्थित की व्याख्या को लेकर मतभेद है।

निःसंदेह स्टीव के प्रश्न के उपयुक्त उत्तर दिए जा सकते हैं यद्यपि वे पूर्णरूप से समस्या का हल प्रस्तुत नहीं करते। उदाहरण के लिए हम कह सकते हैं कि यदि मैं स्टीव होता, तो शायद मेरा पिता, स्टीव का पिता होता। यह पता

लगाना रोचक होगा कि स्टीव ने इस उत्तर के बारे में क्या सोचा।

विकास मनोविज्ञान के किसी भी सिद्धांत में छोटे बच्चों के दार्शनिक विचारों के लिए कोई वास्तविक स्थान नहीं है। शायद इसका एक कारण यह है कि यदि कोई छोटा बच्चा यदाकदा स्वतः कोई दार्शनिक टिप्पणी कर देता है या कोई दार्शनिक प्रश्न पूछ लेता है (जैसा स्टीव का उक्त प्रश्न है) तो वह एक असाधारण और असामान्य बात होती है। चूंकि विकास मनोवैज्ञानिक मुख्यतः उन्हीं बातों पर ध्यान देते हैं जो सामान्य और मान्य होती हैं, अतः वे इस प्रकार के प्रश्नों और टिप्पणियों की प्रायः उपेक्षा करते हैं क्योंकि प्राणी विज्ञान का यही सिद्धांत है।

परंतु संत मेरी संगीत विद्यालय के इन छात्रों के साथ मेरी बातचीत से यह पता चलता है कि इन बच्चों में दर्शन संबंधी विषयों पर चर्चा करने की क्षमता है। फिर विकास मनोवैज्ञानिक इन बच्चों के विचारों को अपने सिद्धांतों में कोई स्थान क्यों नहीं देते ? इस प्रश्न का समुचित उत्तर बहुत जटिल और गहन हो जाएगा। मैं यहां संक्षेप में केवल तीन बातों की ओर संकेत करूंगा जिन्हें एक समुचित उत्तर में सम्मिलित करना चाहिए।

पहली बात, देखा जाता है कि विकास मनोवैज्ञानिक मुख्यतः उन योग्यताओं के विकास पर अधिक ध्यान देते हैं जिनको हमारे समाज में अधिक महत्व दिया जाता है। वे उस क्षमता के विकास पर उतना ध्यान नहीं देते जिसकी सामान्यतः समाज अवहेलना करता है। हमारा समाज बच्चों में दार्शनिक समस्याओं को सोचने और मूलभूत प्रश्नों पर चर्चा करने की क्षमता की व्यापक रूप से उपेक्षा करता है। अधिकांश वयस्क लोग दार्शनिक प्रश्नों पर बहुत कम या बिलकुल ध्यान नहीं देते। उन्हें इससे कोई मतलब नहीं कि दर्शनशास्त्र का उचित रीति से प्रयोग हो रहा है या दर्शनशास्त्र का प्रयोग ही नहीं हो रहा है। अतः इसमें क्या आश्चर्य कि विकास मनोवैज्ञानियों ने इस बारे में बहुत कम उल्लेख किया है कि बच्चों में दार्शनिक विचारों को समझने और दार्शनिक प्रश्नों पर विवेकपूर्ण विचार करने की क्षमता होती है या नहीं, और वह कैसे विकसित होती है ?

दूसरी बात, यह स्वाभाविक है कि हम विकास मनोविज्ञान की परिकल्पना को शारीरिक विकास से जोड़ते हैं। हमारी दृष्टि में परिपक्व वयस्क एक मानक है जिसकी ओर अपरिपक्व व्यक्ति का विकास हो रहा है। तब विकास मनोवैज्ञानिक यह पता लगाने प्रयास करते हैं कि इस परिपक्वता तक पहुंचने के लिए व्यक्ति को किन अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है या परिपक्वता प्राप्त करने में कौन से प्रभाव हमारी सहायता करते हैं या हमारे लिए अवरोध उत्पन्न करते हैं। परंतु विकास की अवस्थाओं या सहायक और अवरोधक घटकों पर





तभी अनुसंधान हो सकता है जब हमें इसकी सही समझ हो कि किसी विशेष हुनर या क्षमता में परिपक्वता प्राप्त करने का क्या अर्थ है ? शायद विशेषज्ञों को इसका अच्छा आभास है कि गणित में, या परिपक्व वक्ता या परिपक्व लेखक हम किसे कहेंगे। परंतु किसी ने कभी यह विचार नहीं किया है कि दार्शनिक विचारों और दार्शनिक चर्चा में परिपक्वता का क्या मानक है या ऐसा कोई मानक है भी ? चूंकि दार्शनिक चर्चा में परिपक्वता के मानक की कोई धारणा नहीं बन पाई है, अतः इसमें विकास मनोविज्ञान का प्रयोग नहीं हो सकता।

तीसरी बात, सब ही जानते हैं कि ज्ञानात्मक विकास के मनोविज्ञान में जीन पिएगट का नाम सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। पिएगट पर स्विस और फ्रेंच संस्कृति का प्रभाव अधिक है, क्योंकि वह उन्हीं के परिवेश में बड़ा और परिपक्व हुआ था। उस पर अंग्रेजी भाषी देशों का प्रभाव अपेक्षाकृत कम है। योरप में दर्शनशास्त्र अधिक आडंबरपूर्ण और अधिक सुव्यवस्थित है। हम देखते हैं कि अंग्रेजी भाषी देशों में विश्लेषणात्मक दर्शनशास्त्र की जिन शैलियों का प्रभाव रहा है, उनमें ऐसा आडंबर नहीं है। वे अकसर हल्के चुलबुले ढंग से अपनी पूरी बात कह देते हैं। (लुई करोल भी एक मंजा हुआ दर्शनशास्त्री था) यह शैली, बच्चों के विचार करने के ढंग के अधिक निकट है, परंतु पिएगट की आडंबरपूर्ण शैली में यह बात नहीं है। इसीलिए पिएगट के अनुसार बच्चों में किशोरावस्था के बाद ही बुद्धि का इतना विकास हो पाता है कि उनका परिचय दर्शनशास्त्र के मानक सिद्धांतों से कराया जा सके। छोटे बच्चों के दर्शन समझने की क्षमता के प्रति पिएगट को संदेह था यद्यपि उसकी संपादित प्रश्नात्मक कृतियों में बच्चों की यह योग्यता साफ परिलक्षित होती है।

क्या इसका कोई महत्व है कि विकास मनोविज्ञान ने छोटे बच्चों की दर्शन संबंधी चर्चा करने की क्षमता पर कोई ध्यान नहीं दिया है ? मेरे विचार से इसका महत्व है भी और नहीं भी है। यदि हम यह मानते हैं कि दर्शनशास्त्र के विचारों में परिपक्वता के संबंध में कोई सामान्य सहमति संभव नहीं है, तो विकास मनोवैज्ञानिक शायद इस क्षमता पर विचार न करें। उनके लिए उन विषयों पर विचार करना अधिक महत्वपूर्ण होगा जो उनके उद्देश्यों और नीतियों के अधिक अनुकूल हो।

परंतु इसका एक पहलू और है जिसकी हमें उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। शिक्षक और प्रबुद्ध मां-बाप, अपने बच्चों का मूल्यांकन करने के लिए विकास मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञों की राय लेते हैं। वे पता लगाना चाहते हैं कि उनके बच्चे कैसे हैं और उन्हें कैसा होना चाहिए। यदि विकास मनोविज्ञान में दार्शनिक विचारों पर चर्चा करने की बच्चों की क्षमता के लिए कोई स्थान नहीं है, तो

अनेक मां-बाप तथा शिक्षक कभी बच्चों से इन विषयों पर चर्चा करने की बात नहीं सोचेंगे। अतः वयस्क और बच्चों, दोनों ही का परिचय, प्रश्नों द्वारा हल ढूंढने के इस अद्‌भुत ढंग से नहीं हो पाएगा जिसके परिणाम पर बड़ों का नियंत्रण नहीं हो सकता और न वे अपनी आयु और अनुभवों की श्रेष्ठता के आधार पर अपनी उच्च स्थिति बनाए रह सकते हैं। इसके साथ ही, वयस्क और बच्चे, दोनों उस अनुपम आनंद से वंचित रह जाएंगे जो किसी समस्या या पहेली के अचानक हल हो जाने से प्राप्त होता है।



# 12. उपसंहार

एडिनबरा में जून 1983 में, संत मेरी संगीत स्कूल द्वारा आयोजित वार्षिक संगीत समारोह में मैं उपस्थित था। नील और डेविड पॉल मेरे पास आकर बैठ गए।

नील ने कहा कि उसने वे कहानियां पढ़ीं जो हम लोगों ने साथ मिल कर लिखी थी। मैंने पिछले हफ्ते उन कहानियों की एक प्रतिलिपि बच्चों में बंटवा दी थी। उसने कहा, 'वे अच्छी कहानियां हैं'। फिर मेरी ओर भेद भरी मुस्कराहट के साथ देख कर वह आगे बोला, 'जब कुत्ते ने गलीचा गीला कर दिया, तब मुझे बहुत मजा आया।'

मैंने कहा, 'हां, मुझे याद है। कक्षा में भी तुम्हें यही बात अच्छी लगी थी।' फिर मैंने डेविड पॉल की ओर मुड़ कर कहा, 'मेरे मन में बहुत सी बातें आती है जो मैं तुमसे कहना चाहता हूं।'

'जैसे ?' उसने पूछा।

'जैसे,' मैंने संगीत के कार्यक्रम की ओर देखते हुए कहा, 'हम एक ऐसी कहानी बना सकते हैं जिसमें कोई कह रहा हो कि एक विशेष गीत बहुत दुख भरा गीत है। इस पर कोई और कहे संगीत दुखी नहीं हो सकता, दुखी तो व्यक्ति होते हैं। इसके बाद मान लो फ्रेडी कुछ सोच कर कहे, 'शायद दुखी संगीत लिखने वाले व्यक्ति उस समय बहुत दुखी होते हों जब वे संगीत लिख रहे हों।' तब एलिस कहे, 'नहीं, यह बात सही नहीं हो सकती।' फिर वह एक गीत को द्रुत लय और उल्लास के साथ गाकर सुनाए। फिर उसी गीत को धीमी लय में और धीमी आवाज के साथ गाए।'

डेविड पॉल 'फिर तो वह गाना ऐसा लगेगा मानो किसी के शोक पर गाया जा रहा है।'

'यही बात मैं भी कह रहा हूं मैंने कहा। मुझे ध्यान आया कि किस तरह प्रख्यात जर्मन संगीतकार माह्लर ने उसी गीत को एक मातम के संगीत में परिवर्तित कर दिया था।

'ऐसा मैं भी करूं तो मुझे बड़ा मजा आए,' डेविड पॉल ने कहा।

मैंने आगे कहा, 'तुम खुद ही कह रहे हो कि ऐसा करने में तुम्हें बड़ा

मजा आएगा। इसके मतलब हैं कि गीत को दुख भरा संगीत देने के लिए स्वयं दुखी होने की जरूरत नहीं है। तुम इस क्रिया को एक खेल की तरह या एक रोचक कार्य की तरह देख सकते हो।'

डेविड पॉल ने सहमत होते हुए कहा, 'अतः यह बात सच नहीं हो सकती कि दुःखद संगीत लिखने वाले व्यक्ति स्वयं दुखी होते हैं।'

मैंने पूछा, 'यह चर्चा के लिए कैसा विषय रहेगा ? वह क्या बात है जो कुछ गीतों को दुःखद और कुछ गीतों को सुखद बनाती है ?'

उसने स्वीकार किया कि 'इस पर हम बहुत सी बातें कह सकते हैं।'

मुझे इसका कोई ऐसा उत्तर समझ में नहीं आया जो संवेदनशून्य हो। अतः मैं केवल 'हां' कह कर चुप हो गया।

फिर हमने अपना ध्यान संगीत समारोह की ओर लगाया। उस समारोह के संबंध में कोई बात दुःखद नहीं थी। सच तो यह है कि संत मेरी स्कूल के साथ मेरे सबंधों का वह एक शानदार समापन था।

●●